सिक्ख धर्म

एवम्

मांस

मूल लेखक
संत निधान सिंह 'आलिम'

नामधारी दरबार
श्री भैणी साहिब, लुधियाना (पंजाब)

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library

Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library has been created with the approval and personal blessings of Sri Satguru Uday Singh Ji. You can easily access the wealth of teaching, learning and research materials on Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library online, which until now have only been available to a handful of scholars and researchers.

This new Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library allows school children, students, researchers and armchair scholars anywhere in the world at any time to study and learn from the original documents.

As well as opening access to our historical pieces of world heritage, digitisation ensures the long-term protection and conservation of these fragile treasures. This is a significant milestone in the development of the Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-Library, but it is just a first step on a long road.

Please join with us in this remarkable transformation of the Library. You can share your books, magazines, pamphlets, photos, music, videos etc. This will ensure they are preserved for generations to come. Each item will be fully acknowledged.

To continue this work, we need your help

Your generous contribution and help will ensure that an ever-growing number of the Library's collections are conserved and digitised, and are made available to students, scholars, and readers the world over. The Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-Library collection is growing day by day and some rare and priceless books/magazines/manuscripts and other items have already been digitised.

We would like to thank all the contributors who have kindly provided items from their collections. This is appreciated by us now and many readers in the future.

Contact Details

For further information - please contact

Email: NamdhariElibrary@gmail.com

kirpal singh chana

विषय-वस्तु

सिक्ख धर्म में मांस खाने की आज्ञा है या नहीं। इसके बारे में मतभेद है। श्री गुरु नानक देव जी के अनुयायी उदासी, निर्मले, नामधारी, सनातनी सिक्ख एवम् सेवापंथी आदि सम्प्रदाय मांसाहार को गुरुमत के विरुद्ध समझते हुए इस बात का प्रचार करते हैं कि गुरुमत के अनुसार मांस खाने को केवल नकारा ही नहीं गया बल्कि इसको खाना पाप माना गया है तथा खाने से, नर्क की प्राप्ति होती है परन्तु इन विद्वानों एवम् मुख्य सम्प्रदायों के बिना कुछ सिक्ख सम्प्रदाय ऐसे भी है जो सिक्ख धर्मानुसार मांसाहार को नकारते नहीं बल्कि यह प्रचार करते हैं कि सिक्खों के लिए मांसाहार अति आवश्यक है। कई बार मांसाहारी तथा शाकाहारी सिक्खों में यह विषय झगड़े का कारण भी बन जाता है। इसलिए मेरे कई मित्रों के द्वारा मुझे अनेक वर्षों से यह प्रेरणा मिलती रही है कि में इस विषय पर एक खोजपूर्ण पुस्तक लिख कर पंथ की सेवा करूँ परन्तु व्यस्तता के कारण मैं उनकी इस अभिलाषा को पूरा नहीं कर सका। अब मैं कृतज्ञ हूँ उस सर्वव्यापी परम पिता परमात्मा का जिसने मुझे कुछ महीनों की मेरी निरन्तर मेहनत के पश्चात् इस योग्य बनाया है कि आज मैं उन मित्रों को इस विषय पर पुस्तक भेंट करके उनकी प्रसन्नता प्राप्त कर सका हूँ। पुस्तक लिखने के लिए मुझे कितनी खोज और मेहनत करनी पड़ी है इसका निर्णय करना मेरा काम नहीं, पाठकों का काम है, हाँ में इतना बताना आवश्यक समझता हूँ कि पुस्तक को दो भागों में विभाजित किया गया है। पहले भाग में पशुओं की मनुष्य के समक्ष एक हृदयविदारक विनय, गुरु नानक मिशन तथा मांसाहार, गुरूवाणी तथा ऐतिहासिक प्रमाणों के संदर्भ में इस विषय पर विचार, मांसाहार के पक्ष वाले प्रचारकों की आपत्तियाँ तथा उनके समाधान अंकित किए गये है।

पुस्तक के दूसरे भाग में वैदिक तथा अवैदिक मतानुसार विचार करते हुए मांसाहार की घोर भर्त्सना की गई है तथा इसे पाप बताया गया है। अवैदिक मत में बुद्ध धर्म, जैन धर्म, देव समाज, ईसाई मत तथा इस्लाम धर्म के अनुसार यह बताने का प्रयास किया गया है कि मांस का खाना दया एवम् अहिंसा के विरुद्ध होने के कारण मानव धर्म के अनुकूल न होकर प्रतिकूल है। इसके पश्चात् संसार प्रसिद्ध डाक्टरों देशी तथा विदेशी लेखकों, वैज्ञानिकों के (अंग्रेज, अमरीकी, फ्रांसीसी तथा इतालवी) विचार तथा पुस्तकों के उदाहरण दे कर बताया गया है कि मनुष्यों के लिए मांस अप्राकृतिक,

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

अनावश्यक, हानिकारक, निर्दयतापूर्ण प्राप्त की गई स्वास्थ्य को बिगाड़ने वाली खुराक है।

पुस्तक के अन्तिम पृष्ठों में उन विश्व प्रसिद्ध महापुरूषों की संक्षिप्त जानकारी दी गई है जिन्होंने वर्तमान काल में अपनी अलौकिक बुद्धि, नैतिकता, शरीरिक एवम् चमत्कारिक शक्ति द्वारा सारे ब्रह्माण्ड को अपनी ओर आर्कषित किया है जो मांसाहारी नहीं है।

इस पुस्तक को लिखने के लिए प्रमाण एवम् पुस्तकें इकट्ठी करने में जो सहायता मुझे निर्मल पंथ भूषण श्री १०८ संत तेजा सिंह जी, ज्ञानी तथा वैद शास्त्री, मन्त्री निर्मल महामंडल, अमृतसर द्वारा प्राप्त हुई है इसके लिए मैं उनका हृदय से अभारी हूँ।

अन्त में मैं पाठकों की सेवा में नम्र निवेदन करता हूँ कि पुस्तक को निष्पक्ष हो कर अध्ययन करने का प्रयत्न करें ताकि वास्तविकता का बोध हो सके।

अमृतसर निधान सिंह आलिम

१ अषाढ संवत् १९९८

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

भूमिका

ऐतिहासिक खोज एवम् परम्परा की निष्पक्ष खोज द्वारा प्राप्त विचार सत्य की सतह तक पहुँचने में बहुत सहायक होते हैं। मेरे विचार में संत निधान सिंह जी ने एक महत्वपूर्ण विषय सम्बन्धी गुरूमत सिद्धान्त, गुरुवाणी के मूल पाठ, इतिहास एवम् परंपरा की खोज करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है तथा वह इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि मांस का प्रयोग गुरू परम्परा के उपदेश के अनुकूल नहीं, मैं उन से सहमत हूँ।

इसके पक्ष में एक उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ। एक सुघड़ एवम् सुयोग्य संगीतज्ञ अपने गले की सुरक्षा के लिए कई प्रकार के पदार्थों के सेवन का त्याग कर देता है। उसी प्रकार अपनी आत्मा का परमात्मा से मिलाप चाहने वाला सच्चा अनुरागी अपनी खाद्य वस्तुओं में से अनेक प्रकार के खाद्य पदार्थों के सेवन का त्याग कर देता है। नाम की प्राप्ति के लिए, सुरति के अभ्यास में सफलता प्राप्त करने के लिए एक संसारिक मनुष्य को तामसी भोजन से अवश्य ही परहेज करना पड़ता है। मांस तथा शराब तामसी भोजन हैं जो जिह्वा के स्वाद के लिए भले ही अच्छे लगते हो, भाते हों परन्तु अध्यात्मिक उन्नति के लिए वह विष हैं। गुरु नानक देव जी अपनी वाणी में बहुत ही सुन्दर उपदेश देते हैं—

बाबा होरु खाणा खुसी खुवारु।

जितु खाधे तनु पीड़ीऐं मन महि चलहि विकार। (महला १, पृष्ठ १६)

मांस शरीर को उत्पीड़न देने वाला तथा विकार पैदा करने वाला पदार्थ है जो गुरू साहिबान के अनुभवानुसार, कभी भी किसी भी धार्मिक व्यक्ति के भोजन का अंग नहीं बन सकता। इसी प्रकार आपका कथन है कि जिस हृदय में अनेक प्रकार के भोग और विकारों का निवास हो उस में प्रभु का निर्मल नाम कैसे निवास कर सकता है।

रसु सुइना रसु रुपा कामणि रसु परमल की वासु।

रसु घोड़े रसु सेजा मंदर रसु मीठा रसु मासु।

एते रस सरीर के कै घटि नाम निवासु। (महला १, पृष्ठ १५)

प्रत्येक मनुष्य को यह भी भली-भांति मालूम है कि सभी धर्मों में भगवान

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

को दयालु, कृपालु, रहमान, रहीम आदि विशेष नामो से अलंकृत कर पुकारा गया है। दया उसका सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वप्रिय गुण है। अतः हम इन गुणों को ग्रहण करके ही उसकी कृपा दृष्टि प्राप्त कर सकते है। इसलिए धर्म का मूल दया को ही माना गया है। गुरु जी ने दया को धर्म की जननी कहा है तथा हत्या को सबसे बड़ा पाप कहा है इसलिये निर्दयी एवम् कठोरचित्त मनुष्य के हृदय में कभी भी परमात्मा की ज्योति प्रज्वलित नहीं हो सकती।

"निरदइआ नहीं जोति उजाला" (आदि ग्रंथ, पृष्ठ ९०३)

पहुँचे हुए महापुरुषों की यह चेतावनी है कि सभी जीवों में एक ही भगवान की ज्योति प्रज्वलित हो रही है। जीवों को सताकर, तंग कर दुख दे कर उनके ही पिता भगवान की कृपा दृष्टि प्राप्त करने की इच्छा रखना दो स्व-विरोधी बातें हैं। कबीर जी का निम्नलिखित श्लोक यदि ध्यान में रखा जाये तो इस सम्बन्धी और कोई दूसरी बात विचारने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। आपका कथन है कि दोष हमारे धर्म ग्रन्थों का नहीं, बल्कि हमारी अबोध बुद्धि का है। हम दावा तो धर्मालम्बी होने का करते हैं परन्तु हमारी करनी इन उपदेशों की कथनी के बिलकुल विपरीत है।

बेद कतेब कहहु मत झूठे, झूठा जो न बिचारै।

जउ सब महि एकु खुदाइ कहत हउ किउ मुरगी मारै।

(श्री आदि ग्रंथ पृष्ठ १३५०)

इसी प्रकार सिक्ख धर्म में बुद्ध मत, जैन मत, हिन्दू धर्म एवम् भारत के दूसरे धर्मो की भाँति कर्म सिद्धान्त को स्वीकृत किया गया है कि मनुष्य को अपने किये कर्मो का फल भी स्वयं ही भुगतना पड़ता है।

जेहा बीजै सो लुणै मथै जो लिखिआसु। (महला ५, पृष्ठ १३४)

गुरु जी ने अपनी वाणी में यत्र तत्र इस नियम की व्याख्या को समझाया है। गुरु नानक देव जी ने इस संसार को धरती रूपी कर्मस्थल कहा है जिसमें *'करमी करमी होइ वीचारू'* (जपु जी) *'करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि* जपुजी का व्यवहार चलता है। इस नियम के अनुसार हमने जिसको मारा है उसके द्वारा हमें भी मरना पड़ेगा। इस प्रकार हम मानव की योनि से भेड़, बकरियों एवम् मुर्गे मुर्गियों की योनि में पड सकते हैं। इससे हमारा पतन हो जायेगा। भाई गुरदास जी ने इस मम्बन्धी बहुत सुन्दर वर्णन किया है।

सींह पजूती बक्करी मरदी होई खिड़खिड़ हस्सी।

सींह पूछे विस्माद होइ इत अवसर कित रहस्स रहस्सी।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

बिनउ करेंदी बक्करी पुत्तर असाडे कीचन खस्सी।

अक्क धतूरा खांदिआं कहु कहु खल उख्खल विणस्सी।

मास, खाण गल वड के हाल तिनाड़ा कउण होवस्सी।

गरव गरीबी देह खेह खाज अखाज अकाज करस्सी।

जग आइआ सब कोई मरसी (वार २५, पउड़ी १७)

कबीर जी की जो वाणी श्री आदि ग्रंथ साहिब में संकलित है वह मनुष्य को बार बार चेतावनी देती है :—

कबीर जीअ जु मारहि जोरु करि, कहते हहि जु हलालु।

दफतरू दई जब काढि है होइगा कउनु हवालु।

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ १३७५ श्लोक १९९)

कबीर जोरू, कीआ सो जुलमु है लेइ जबाबु खुदाइ।

दफतरि लेखा नीकसै मार मुहै मुहि खाइ।

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ १३७५ श्लोक २००)

कबीर खूबु खाना खीचरी जा महि अंम्रितु लौनु

हेरा रोटी कारने गला कटावै कउनु,

(आदि ग्रंथ, पृष्ठ १३७४ श्लोक१८८)

गुरु जी द्वारा अपने हुक्मनामों में संगत को बड़े स्पष्ट शब्दों में मांस मछली खाने से रोका गया है। डा० गंडा सिंह ने अपनी पुस्तक 'हुक्मनामें' में छट्टी पातशाही श्री गुरु हरिगोविन्द साहिब जी के हुक्मनामों के चित्र सम्मलित किए हैं। जिनके अतिरिक्त इस पुस्तक में बावा वंदा वहादर का एक हुक्मनामा भी संगृहित है। इन तथ्यों तथा गुरुवाणी में दिये गये मांसाहार विरोधी तथ्यों का अध्ययन किया जाये तो इस बारे में कोई संदेह नहीं रह जाता कि सिक्ख धर्मावलम्बी को, गुरुसिक्ख को जिसने नाम की कमाई करनी है (भगवान को प्राप्त करना है) परम पिता परमात्मा की ज्योति में विलीन होना है उसे कभी भी मांस, मछली, अंडे, शराब आदि और नशीले पदार्थो का सेवन नहीं करना चाहिये। अनेक संतों, महात्माओं, गुरुमुखों तथा महापुरूषों ने इस विचार से सहमति प्रकट की है। मुहसन फनी ने गुरु हरिगोबिन्द साहब जी के समय लिखी अपनी पुस्तक 'कबर स्ताने मज़ाहिब' में जिसका डा० गंडा सिंह ने सम्पादन किया है, तथा जिसका अंग्रेजी संस्करण छपवाया गया है, में स्पष्ट लिखा है कि गुरु नानक नाम लेवा सम्प्रदाय में मांस खाने पर प्रतिवन्ध है। यह उस समय का ठोस प्रमाण है।

इस पुस्तक के विषय को तर्क की दृष्टि से ध्यान में रख कर तथ्यों तथा प्रमाणों की सहायता से अध्ययन करने का सफल प्रयास किया गया है। इस लिए में इसके रचयिता को बधाई देता हूँ।

कृपाल सिंह नारंग
भूतपूर्व उपकुलपति पँजाबी विश्वविद्यालय
पटियाला

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

प्रस्तावना

सिक्ख धर्म का शास्त्रीय आधार आदि गुरु ग्रंथ साहिब की वाणी है जिसमें गुरुवाणी अनुसार सभी जीव-योनियों में से मानव योनि सर्वश्रेष्ठ एवम् सर्वोपरि है।

अवर जोनि तेरी पनिहारी।

इसु धरती महि तेरी सिकदारी॥

मानव की सर्वोपरिता एवम् सर्वश्रेष्ठता इस लिए है क्योंकि इसमें मानसिक विचार को कार्यरूप में परिणत करने के लिए क्षमता है। मन के इस मुख्य अमल तक पहुँचने के लिए जीव को सृष्टि की एक कम चौरासी लाख योनियों में से गुजरना पड़ता है। ऋषियों ने इन योनियों को पाँच अवस्थाओं में वांटा है। प्रथम-अन्नमय कोश, द्वितीय-प्राणमय कोश, तृतीय-मनीमय कोश, चतुर्थ-विज्ञानमय कोश एवम् पंचम-आनन्दमय कोश। अन्नमय कोश केवल स्थूल शरीर है, इस में प्राणमय कोश के विकसित होने से ही इच्छाओं का प्रादुर्भाव होता है, मनोमय कोश में मन का विकास होता है जिस से बुद्धि का, सोचने का, समझने का एवम् शक्ति का अमल आरम्भ हो जाता है। विज्ञान मय कोश विवेक एवम् बुद्धि के संजोग का कारण बनता है। पंचम अवस्था आनन्दमय कोश के विकसित होने से उन्मन अवस्था की प्राप्ति की होती है।

"उनमनि मनुआ सुंनि समाना

दुविधा दुरमति भागी।

कहु कबीर अनभउ इकु देखिआ

राम नामि लिव लागी।

मानवी मन भी दो प्रकार का है:— शुद्ध एवम् अशुद्ध मन। इच्छाओं, कामनाओं को भोगने की लालसा से परिपूर्ण होता है। तृष्णा तथा उसके भोगने की इच्छा से मुक्त मन शुद्ध कहलाता है। अमृत बिन्दु उपनिषद् में लिखा है:—

"मन एव मनुष्याणा कारणंबंध मोक्षयोह॥

बंधाय विष्या सक्तं मुक्तयै' निर्विषयं समृतम॥

भाव मन मनुष्य के बंधन तथा मोक्ष का कारण बनता है। विषय विकारों

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

की ओर अकर्षित होकर खिंचे जाने के कारण बंधन की ओर अग्रसर होता है। विषय विकारों को त्याग कर मन मुक्ति की और अग्रसर होता है।

मुक्ति का अर्थ है अज्ञानता का नाश। मुक्ति की प्राप्ति मन के केन्द्रिय कमल में विलीन होने से होती है-एकाकार हो जाये उस कमल से तन एक, जव वह संकल्पहीन या उन्मन भाव को प्राप्त कर ले, तब मुक्ति की प्राप्ति होती है।

कवीर जी ने इन दोनों मानसिक अवस्थाओं के बारे में इस प्रकार लिखा है:

'मेरे मन मन ही उलटि समाना॥

गुर परसादि अकलि भई अवरै नातरू था बैगाना (पृष्ठ ३३३)

विज्ञान एवम् आनन्दमय कोश की अवस्थाओं से पहले मन, प्राण एवम् अन्नमय कोश की तीनों अवस्थाएँ पशु-सम हैं। चौरासी लाख योनियों में पशुभाव कुछ न कुछ मात्रा में पाये जाते हैं। मन से प्रभावित मनुष्य में यह तीनों अवस्थाएँ उतनी देर तक अपना राज्य स्थापित रखती हैं जव तक मन विज्ञानमय कोश के अधीन नहीं हो जाता। गुरूवाणी में इस अवस्था को मनमत कहा है। इस अवस्था में मनुष्य या तो बार बार योनि रूप बदलता रहता है या बार बार मनुष्य जन्म धारण करके भी पशु भाव वाला ही रहता है।

इस अवस्था से मनुष्य तभी छुटकारा प्राप्त कर सकता है जव उसमें विज्ञानमय कोश का विकास हो जाता है या विवेक-बुद्धि को सर्वोपरि तथा सर्वोच्च होकर नियन्त्रण करने का अधिकार प्राप्त हो जाता है।

लोभ विकार जिना मनु लागा

हरि विसरिआ पुरखु चंगेरा

उऐ मनमुख मूड़ अज्ञानी

कहिअहि तिन मस्तकि भागु मंदेरा॥

बिबेक बुद्धि सतिगुरु ते पाई

गुर ज्ञान गुरु प्रभ केरा॥ (पृष्ठ ७११)

विवेक बुद्धि का भाव उचित-अनुचित, ठीक-गलत की पहचान है:—

"जीअ बधहु सु धरमु करि थापहु अधरमु कहहु कत भाई॥

आपस कउ मुनिवर कर थापहु का कउ कहहु कसाई॥"

(पृष्ठा ११०३)

पूजा तिलक करत इशनानां॥ छुरी काढि लैवे हथि दाना॥
बेद पड़ै मुखि मीठी बाणी॥ जीआं कुहुत न संगै पराणी॥ (पृष्ठ २०१)

★ ★

बेद कतेब कहहु मत झूठे, झूठा जो न बिचारै॥
जउ सभ महि एकु खुदाइ कहत हउ तउ किउ मुरगी मारै।
मुला कहहु निआउ खदाई॥
तेरे मन का भरमु न जाई (रहाउ)
पकरि जीउ आनिआ देह बिनासी माटी कउ बिसमिल कीआ॥
जोति सरुपि अनाहत लागी कहु हलालु किआ कीआ॥ (पृष्ठ १३५०)

★ ★

हिंसा तउ मन ते नहीं छूटी जीअ दइया नहीं पाली॥
परमानंद साधसंगति मिलि कथा पुनीत न चाली॥ (पृष्ठ १३५३)

★ ★

जीवन मुक्त जगदीश जप मनि धारि रिद परतीत॥
जीअ दइआ मइआ सरबत्र रमणँ परम हँसह रीति॥ (पृष्ठ ५०८)

गुरूवाणी की उपरलिखित काव्य पंक्तियों से हिंसा-अहिंसा, जीव दया तथा जीव घात के बारे में विवेक तथा अविवेक की बात स्पष्ट हो जाती है।

संत निधान सिंह जी ने प्रस्तुत पुस्तक में इस विषय पर खुल कर चर्चा की है।

यह एक संयोग ही था कि जब यह पुस्तक १९४० ई० में लिखी जा रही थी, मैं आलम जी की सेवा सुश्रूषा में लगा हुआ था। संत मंगल सिंह जी लायलपुरी, मेरे बड़े भाई साहब आलिम जी को हमारे अमृतसर वाले घर में ले आए थे। वहाँ आप हमारे साथ ही लगभग एक वर्ष छः मास तक रहे। मैं उस समय लगभग तेरह वर्ष का था। आलिम जी कुलमिला कर सारा दिन किताबे पढ़ते रहते एवम् लिखते भी रहते थे। सांय के समय दरबार साहिब दर्शनार्थ जाते, रात्रि समय कहीं न कहीं दीवान (कीर्तन) लगाते। लगभग अर्धरात्रि के समय कीर्तन में से वापिस आते, अल्पनिद्रा करते। सुबह जल्दी ही उठ जाते । फिर स्नानादि से निवृत हो कर पाठ आदि करते। मैं लगभग सारा समय उनके साथ सेवारत्त रहता। कीर्तन में या घर से बाहर यात्रा के समय वह अनेक पौराणिक कथाएँ सुनाते, रामायण, महाभारत एवम् गुरूसिक्ख इतिहास के प्रकरण सुना सुना कर श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर देते। शायद इन साखियों के सुनने का कर्ण रस मुझे उनसे एकक्षण के लिए

भी अलग नहीं होने देता था। मैं एक शान्त जिज्ञासु की भांति उनके पास बैठकर सब कुछ सुनता रहता। आपको मिलने के लिए अनेक विद्वान सज्जन आते या आप मिलने जाते। मैं, तो भी, उनका पल्लु एक पल के लिए भी न छोड़ता। शान्त भाव से चुपचाप सारा वार्तालाप सुनता रहता।

आलिम जी पंजाबी, हिन्दी, संस्कृत, फारसी एवम् अंग्रेजी भाषा के धुरन्धर विद्वान थे। पौराणिक, हिन्दु, इस्लाम, सिक्ख तथा ईसाई अध्यायत्मवाद पर आपको पूर्ण मुहारत हासिल थी। इसलिए इन सबमें से किसी भी विषय पर आप निरन्तर घंटों भाषण दे सकते थे। इतना ही नहीं राजनीति में भी आपकी बहुत अधिक रूचि थी।

नामधारी सम्प्रदाय में राजनीति में रूचि लेने वाले तथा संघर्षरत्त लोगों के आप अग्रणी थे। गांधी जी के असहयोग अंदोलन समय आप विदेशी कपड़ो का होलिका दहन करने के कारण, नशाबंदी के लिए शराब के ठेकों के सामने पिकटिंग करने के कारण जेल की हवा भी खा चुके थे। कांग्रेस के हर बड़े जलसे में आपकी उपस्थिति अनिवार्य सी थी।

आलिम जी एक विलक्षण एवम् बहुमुखी प्रतिभा के स्वामी थे। एक ओर तो आप अध्यात्मक, दर्शन शास्त्र एवम् राजनीति जैसे विषयों पर गम्भीर विचारवान के रूप में प्रतिष्ठित थे, दूसरी ओर दीवान में खड़तालें बजाते हुए, नृत्य करते हुए वृदावन की रासलीला का सुसमय बांध देते थे। कई बार ऐसा भी हुआ जब हज़ारों की तादाद में दर्शक उठ कर, अपने हाथों की मुट्ठियों को सिर के साथ उठाकर जोड़ कर रखते हुए, आपके साथ, आपके कदमों की ताल के साथ ताल मिलाकर, सुर से सुर मिलाकर गाने लग जाते—लै लओ दूध दही, लै जाओ दूध दही।"

आलिम जी का शरीर भारी भरकम था। परन्तु जब वह ढोल की थाप के साथ खडतालों के घुघरु झंकारते हुए तीर समान सीधे दीवान में से निकल कर दूर चले जाते हुए एक हाथ कान पर रख कर दूसरी बाजु आगे बढा कर शब्द की टेक दुहरा कर नृत्य करते, खड़ताले बजाते कीर्तन में वापस आते तो प्रत्येक दर्शक को गोपी वल्लभ का आभास होता। इस बहुमुखी व्यक्तित्व की संगत का सौभागय निश्चय ही मेरे जैसे किशोर लड़के के लिए किसी वरदान से कम नहीं था।

आलिम जी के व्यक्तित्व का प्रभाव संघर्षशील व्यक्ति का था। उनका परिवार था, सिक्ख सेवकों का जत्था भी साथ था परन्तु आय का कोई निश्चित साधन नहीं था। प्रतिदिन कीर्तन में एकत्रित हुए दो ढाई या पांच रुपयों से सबकी रोटी का खर्चा चलता था। जिन दिनों में कीर्तन न होता उन दिनों फांके रखने की नौवत भी आ जाती। इसके बावजूद आप सदा मस्त, निरन्तर

बिना थके कार्य करते रहते ।

उन संघर्ष के दिनों मे ही यह पुस्तक रची गई। तत्पश्चात् छापने की समस्या आ खड़ी हुई। इस पुस्तक का प्रथम संस्करण कुछ सिक्ख-सेवकों द्वारा एकत्रित की गई जमा पूंजी से छपा। उस दशा का अनुमान लगा कर मैं उन बचपन के समय में भी आश्चर्य चकित सा हो जाता था।

आलिम जी ने इस पुस्तक के अतिरिक्त सिक्ख जगत् को और अनेक पुस्तकें दी जिनमें से 'नामधारी इतिहास', 'जुग पलटाऊ सत्गुरु' एवम् 'गुरु पद प्रकाश' विशेषतया उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त, इस शताब्दी के तृतीय दशक में लाहौर से आप उर्दु ज़बान में समाचार पत्र 'कूका' का संपादन सफलता से करते रहे। स्वतन्त्रता प्राप्ति पश्चात् लुधियाना से हिंदी तथा पंजाबी भाषाओं में 'दैनिक जय भारत' का सम्पादन भी करते रहे।

'सिक्ख धर्म एवम् मांस' जो आज से त्रेतालीस वर्ष पूर्व मेरे सामने लिखी गई थी—आज उसकी प्रस्तावना लिखते हुए मैं एक विशेष आनन्द की अनुभूति अनुभव कर रहा हूँ। सोचता हूँ मेरी लेखन-कला का उपहार बहुत हद तक आलिम जी की ही तो देन है।

अमर भारती

देहली

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

संदर्भ पुस्तक सूची

श्री आदि ग्रंथ साहिब एवम् श्री दशम् ग्रंथ के अतिरिक्त जिन गुरुमत्त एवम् दूसरे मतों के ग्रंथी में से इस पुस्तक को लिखने के लिए प्रमाणित करने के लिए सहायता ली गई है। उनकी सूची नीचे दर्ज है:—

(३) वारां भाई गुरदास (४) नानक प्रकाश (५) सूरज प्रकाश (६) जन्म साखी भाई बाला (७) गुरबिलास पातशाही ६ (८) पंथ प्रकाश ज्ञानी ज्ञानी सिंह जी (६) तवारीख गुरु खालसा ज्ञानी ज्ञान सिंह जी (१०) श्री गुरु नानक प्रवोध ज्ञानी दित्त सिंह जी (११) गु. बिलास भाई सुखा सिंह जी (१२) यजुर्वेद (१३) अथर्वेद (१४) श्री मद् भागवत् गीता (१५) अत्री स्मृति (१६) मनु स्मृति (१७) महाभारत(१८) नारद भक्ति सूत्र (१६) सत्यार्थ प्रकाश(२०) हिन्दू धर्म रहस्य—स्वामी अचल रामजी (२१) महात्मा बुद्ध (गुरां दित्ता खन्ना) (२२) श्री आत्माराम शताब्दी ग्रंथ (जैन धर्म) (२३) मोज़ज़ाइ मुहम्मदी (उर्दू) (२४) विश्ववाणी इलाहाबाद मई १६४१, (२५) गुलिस्तां (शेख साऊदी) (२६) अंजील (मती की) (२७) रोम की पत्री (२८) इसाईयों की दस आज्ञाएँ (२६) गोश्तखोरी देव समाज बुक डिपो लाहौर(३०) फ़सट स्टेज़ हाईज़ैन (अंग्रेजी) (३१) रैशनल आफ़ वैजीटेरीअनिज़म (अंग्रेजी) (३२) नैचरूल एंड ह्यूमन डाइट (३३) दी करूऐलटीज़ आफ़ दी फ़लैश टरैफिक (अंक) (३४) इज़ फ़लैश ईटिंग मारैली डिफैसिंबल १ (अंक) (३५) पत्र-हैल्थ एंड हैपीनस अक्तुबर १६२०(३६) अखबार हैरलड आफ दी गोल्डन एज जनवरी १६०५

इनमें से जो पुस्तके जिन सज्जन पुरुषों से प्राप्त हुई हैं उनका मैं हृदय से अभारी हूँ तथा धन्यवाद करता हूँ। इन पुस्तकों की जीवित तथा परलोकवासी मुस्नफाओं का कृतज्ञ हूँ।

निधान सिंह आलिम

अमृतसर

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

विषय-सूची

(भाग १)

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

१ओंकार

सिक्ख धर्म एवम् मांस

भाग पहला

(१) जानवरों का आवेदन

हे सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वोत्तम नस्ल से सम्बन्ध रखने का दावा करने वाले मानव! हम तुम्हारे दरबार में एक विनती लेकर उपस्थित हुए हैं। तुम्हें संसार में भगवान का निर्धारित मुकाम (प्रतिनिधी) स्वरूप समझा जाता है। इसलिये हमने तुम्हारे दरबार में, तुम्हारी सेवा में अपनी प्रार्थना एवम् पुकार लेकर आने का साहस जुटाया है। हमारी तुम्हारे दरबार में यह पुकार किसी दूसरे के विरुद्ध नहीं बल्कि तुम्हारे ही विरूद्ध है। तुम्हारे अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ है। तुम्हें उस सृजन शक्ति ने वह बल तथा बुद्धि प्रदान की है जो किसी भी और नस्ल के जीव के पास नहीं है। परन्तुं दुःखद बात यह है कि तुम परमात्मा की उस कृपा का नज़ायज फायदा उठा रहे हो। चहिये तो यह था कि तुम अपने उस बुद्धि बल से परमात्मा के इन असहाय जीवों की उन्नति कैसे हो, के बारे में सोचते। इन निरीह पशुओं को कौन से नये साधन उपलब्ध कराये जायें कि यह सुख चैन से रहे। मूक निःसहाय जानवरों की, इन शाकाहारी जानवरों की मांसखोर जानवरों से रक्षा कैसे की जाये। इस वारे में सोचते। हम तो तुम्हारे इस बुद्धि-वल के दुष्प्रयोग से आश्चर्यचंकित है, व्यथित हैं कि तुम दूसरे दरिंदों से हमारी रक्षा करने के स्थान पर स्वयं ही हमें अपना भाज्य वना रहे हो। तुम स्वयं ही बताओं यदि खेत का रक्षक ही भक्षक वन कर खेत को खाने लग जाये तो खेत की रक्षा कैसे होगी। हे मानव! जैसे तुम्हें अपने बच्चे प्रिय हैं उसी प्रकार हम भी अपने बच्चों को देख देख कर जीवित रहते हैं, हर्षित होते हैं। यदि तुम्हारे बच्चों को कोई मारे, चोट पहुँचाए तो तुम रोते हो, कल्पते हो, बिलखते हो। इसी प्रकार तुम्हारे हाथों से अपने बच्चों को मरता हुआ देख कर हम चीखते-चिल्लाते हैं। जैसे तुम अपने बच्चों के कत्ल का बदला लेने के लिए न्यायालय का द्वार खटखटाते हो उसी प्रकार हम भी अपने बच्चों के घात, हत्या का बदला लेने के लिए सच्ची अदालत (भगवान की) में पुकार कर सकते हैं। परन्तु

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

पहले हम तुम्हें वास्तविकता से अगाह कर देना चाहते हैं कि हमारे बच्चों के मांस की बोटी बोटी का तुम्हें हिसाब चुकता करना पड़ेगा। यह कहाँ की समझदारी है कि दूसरों का घर बर्बाद करके अपना घर आबाद किया जाये। यह कहाँ का न्याय है कि दूसरों के घर मातम का साया करके अपने घर रंगरंलियाँ मनाई जाये, जशन मनाये जाये। कितने आश्चर्य की बात है कि यदि तुम्हारे पाँव में तुच्छ सा कांटा भी चुभ जाये तो तुम चीख-पुकार कर आकाश सिर पर उठा लेते हो परन्तु हमारे बच्चों की गर्दने उतार कर फैंकते हुए, पेट चीर-फाड करके खाल उतारते हुए तुम्हें किंचक मात्र भी दया नहीं आती है। हमने तो सुना था कि भगवान ने तुम्हें फरिश्ता पैदा किया है। गुरूओं ने तुम्हें देवता की पदवी दी है। परन्तु क्या देवताओं का यही धर्म है कि पराये पेट चीर-फाड कर उस मांस को खाकर अपना पेट भरे। हे दुःखी दिलों की पुकार सुनने वाला दिल रखने की गुहार लगाने वाले मानव! उस समय तुम्हारा दिल कहाँ होता है जब तुम बेगुनाहों, मूक जानवरों की गर्दन पर छुरी चलाने के लिए कसाई का रूप धारण कर लेते हो। तुम्हारा यह, मन-मंदिर तो खुदा का इबादत खाना बनाया गया था परन्तु तुम तो उसको कब्रस्तान बना कर अपनी बुद्धि का अनोखा परिचय दे रहे हो। क्या तुम्हें ज्ञात नहीं कि प्रत्येक जीव को अपनी जान प्यारी होती है। परन्तु जब तुम जीवित रहने के इच्छुक असहाय तथा वैष्णव जीवों को अपने फंदे में फंसा कर स्वः स्वाद हित कत्ल करने लगते हो तो तुम्हारे हृदय में यह विचार क्यों नहीं कौंधता कि यदि तुम्हारे से शक्तिशाली, तुम्हारे सिर पर तुम्हें कत्ल करने के लिए, खंजर लिये खड़ा हो तो तुम्हारे मानस-पटल पर क्या वीतेगी। हमने तुम्हें कई बार यह कहते हुए सुना है कि यदि मैं जावनरों को मार कर न खाऊँ, न खत्म करूँ तो समस्त पृथ्वी पर इन्हीं का एक छत्र राज्य हो जायेगा। परन्तु क्या तुम बता सकते हो कि यह पृथ्वी केवल मनुष्य मात्र ही की धरोहर है या परमेश्वर के अन्य जीवों का भी इस पर कुछ अधिकार है। क्या अन्य नस्लों का कत्ल करके, उन्हें खत्म करके स्वयं ही इस भू मंडल पर प्रभुत्व जमाना तुम्हारा ही हक हैं। तुमने तो जंगल काट काट कर हमारे गृह-जंगल समाप्त कर दिये हैं। वृक्षों को काट कर लाखों पक्षियों को बेघर कर दिया है फिर भी अभी तक तुम्हारी तृष्णा की अग्नि शान्त नहीं हुई। मजबूर होकर, अपना बस चलता न देखकर हमने तुम्हारा अधिपत्य स्वीकार कर लिया है। हमने गुलामी स्वीकार कर ली है। अपने पाँवों में तुम्हारी दासता की बेड़ियाँ पहन ली है। तुम्हारे कैदी बन गये हैं। अपने बच्चों की भूख को तृप्त करवाने वाला अपना दूध तुम्हारे तथा तुम्हारे बच्चों के लिए देना प्रारम्भ किया है। अपने शरीर के रोएँ उतरवा कर तुम्हारे ओढ़ने के लिए गर्म वस्त्र बनवाने स्वीकार किये हैं। भार ढोना आरम्भ किया है। घास तथा बिनौलों की खली (छिलका) खा-खा कर तुम्हें अमृत दूध देने से भी पीछे नहीं हटे।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

हे स्वार्थी मनुष्य! क्या इस सबका बदला तुमसे यही मिलना था। क्या इससे अलग कुछ आशा करना अनुचित था। शरणागत में आए हुए का कत्ल करके उसके मांस का कबाब बनाकर, मसाले डालकर महफिलों में खाने की उम्मीद तुमसे ही की जा सकती थी।

हे स्वार्थी मनुष्य! हमने तुम्हें यह कहते भी सुना है कि झटका करने या ज़िह्बा करने से जानवर सीधे बहिश्त पहुँच जाते हैं परन्तु हमारा एक छोटा सा सवाल है कि यदि स्वर्ग की विधान-सभा-सीटों पर हमने प्रभुत्व जमा लिया तो तुम्हारे परिवारजनों का क्या होगा। क्या तुम नहीं चाहते कि तुम्हारे निकट सम्बन्धी भी स्वर्ग की कुर्सियों पर विराजमान हों। यदि यही चाहते हो तो क्यों नहीं उनको भी झटके से या हलाल करके स्वर्ग का सर्टीफिकेट दे कर, वहाँ भेजते। स्वयं भी किसी और से टिकट प्राप्त कर वहाँ की तैयारी करते? क्या तुम वहाँ तभी जाओगे जब बहिश्त—विधानसभा में पॉव रखने की भी जगह नहीं बचेगी। क्या तुम्हारी इच्छा केवल दोज़ख चैम्बर की खाना पूर्ती करने की ही है ? तुम्हें अपने इस कथन पर अमल करना चाहिये। कथनी करनी एक होनी चाहिये अब्बल खेशां बाद दरवेशां।"

कई बार तुम्हें यह कहते भी हमने सुना हैं कि मांस का सेवन करने से वीरता पैदा होती है। इसके प्रत्युत्तर में हम यह कहना चाहते हैं कि यह विचार केवल ढकोसला मात्र ही है। जिस समय तुम मांस प्राप्त करते हो तो वह जानवर अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने की कोशिश करता है। उसके अन्तर्मन में उस समय डर तथा सहम पैदा होता है। फलस्वरूप उसमें कायरता के प्रमाणु पैदा होते हैं। तुम स्वयं ही निश्चय करके बताओं कि डरपोक, कायर, कमज़ोर तथा सहमें पशु का मांस खाने से तुम्हारे अन्तर्मन में वीरता का संचार होगा या कायरता का। कोई भी वैज्ञानिक सिद्धान्त इस विचार का समर्थन नहीं करता कि कायर एवम् डरपोक जानवर का मांस खाने वाले के हृदय में वीरता के कण होंगे।

कोई भी सिद्धान्त इस विचार को खंडन करने की क्षमता नहीं रखता कि कायर पशु का मांस खाने वाले के शरीर में कायरता ही पैदा होगी। हे वीरता की कामना करने वाले मनुष्य! हमारा मांस खाने से तुम कभी भी वीर-पुरूष नहीं बन सकते। इसलिए यदि तुम वीर बहादुर बनना चाहते हो तो हम निरीह, मूक, निःसहाय पशुओं का मांस खाना छोड़ दो। मांस खाने से तुम केवल कायर ही बनोगे वीर, बनना तो दूर की बात है। तुम्हारे ही द्वारा लिखा इतिहास इस बात का साक्षी है कि वह शूरवीर जिनका उदाहरण आज ढूढने से भी नहीं मिलता, पूर्ण शाकाहारी थे, मांसाहारी नहीं थे। श्री राम चन्द्र जी, वीर लक्ष्मण, वीर हनुमान तथा उनके और साथी मांस नहीं खाते थे। इन सब के वीरता के प्रकरणों से तो रामायण भरी पड़ी है। श्री

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

कृष्ण और बलराम मांस को छूते तक न थे। जिस वीरता से उन्होंने कंस तथा केसी आदि को पछाड़ा, चंदूर मुशटक तथा कुवल्लिया पीड़ हाथी की खबर ली, वह अपनी मिसाल आप ही है। भीम सैन तथा अर्जुन की वीरता से कौन परिचित नहीं है। वह मांस नहीं खाते थे। शाकाहारी थे। भीष्म पितामह जैसे महान वीर सेनापति मांस को देखते तक नहीं थे। उनके बल तथा प्राकर्म के सम्मुख भगवान श्री कृष्ण जी ने भी अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी थी। बंदा बैरागी वैष्णव था, मांस को छूता भी नहीं था परन्तु उसकी वीरता के कारनामों से इतिहास भरा पड़ा है। इसलिए संसार के मालिक मानव! तुझे यह भ्रम है या स्वार्थवंश तुमने यह ढकोसला बना रखा है कि मांसाहारी वीर होते है। मांस खाने से वीरता पैदा होती है। हज़रत! आप तो सभी नस्लों के बादशाह हैं, सम्राट हैं। हम तो तुच्छ से जीव हो कर भी अपने धर्म का त्याग नहीं करते। हम बकरियाँ, भेडे, गाये, घोडे, गधे, गौरैया, बटेर आदि जितने भी शाकाहारी जीव है कभी मांस को मुंह भी नहीं लगाते चाहे हम भूखे मर जायें। यही हमारा धर्म है। यही हमारा नियम है, यही हमारा स्वभाव है। आप सभी नस्लों में से सर्वश्रेष्ठ होते हुए भी अपनी खुराक शाक-सब्जी से सन्तुष्ट नहीं होते तथा मांस खा कर मानव धर्म से गिर रहे हो। ज़रा सोचो तो सही, तुम्हें मांसखोर जानवरों की भांति प्रकृतिक कारखाने में से कुत्तो, भेड़ियों तथा चीतों आदि की तरह नुकीले दाँत नहीं मिले हैं। बिल्लो तथा शेरों जैसे तेज नाखूनो जैसे नश्तर भी प्राप्त नहीं हुए। तो साधनों के बिना ही तुम जानवरों को मारो, उनकी खाल उतारो तथा मांस को चीर-फाड़ करो यह सर्वथा उनके साथ अन्याय है। न ही तुम्हे चील तथा गिरज जैसी लम्बी तीखी नुकीली चोंच मिली है जिससे तुम मांस नोच सको। हड्डियों को खुर्च सको। फिर तुम इन प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध बगावत क्यों करते हो? हम सब शाकाहारी जीव इन्सानियत के नाम परए न्याय के नाम पर, धर्म के नाम पर, अक्ल के नाम पर, रहम के नाम पर एवम् आपके सर्वश्रेष्ठ होने के कारण आपसे नम्र निवेदन करते हैं कि अब इस ओर से मुह मोड़ लो। निर्दोष जानवरों को अभयदान देते हुए अपने धर्म का पालन करो। मनुष्य से खुंखार जानवर मत बनो, देवता बनने का प्रयास करो। हम आशा करते हैं कि आप हमारी इस प्रार्थना, विनय, अनुरोध को स्वीकार कर लेंगे नहीं तो यह मामला उच्चतम न्यायालय (सर्वशक्तिमान परमात्मा) में ले जायेगे। वहां आपको लेने के देने पड़ सकते हैं।

हम हैं आपकी नस्ल से रहम की आशा रखने वाले निःसहाय एवम् निरीह शाकाहारी जीव

मुर्गे, मुर्गियाँ, भेडे, बकरियाँ, दूम्बे, गायें, हिरन, खरगोश, कबूतर, बेटर, गौरैया, तितियर आदि

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

पंछीआ दी अपील

असी गरीब निमासो पंछी, मुःहों बोल न सकीए।
ऐ इनसान रहिम तेरे वल, कद दे बिट बिट तकीए।
रंग बरंगीआं पहन पुषाकां, दुनीआं असीं सजाईए।
वन सुवंने मिठे मिठे, गीत खुशी दे गाईए।
खाईए पीईए रब्ब दा दित्ता, खिदमत तेरी करीए।
है केडी एह बे-इन्साफी, तेरे हत्थों मदीए।
कदी असाडीआं उडदीआं डारां गोली मार डड़ावें।
कदी कलोल करदिआं सानूं, टाहणी तो पटकायें
वच्चे कइ मासूम असाडे, चोगा लैंदे लैंदे।
हो के जुल्म निशाना तेरा, कदमां ते ढहि पैंदे।
कई असाडीआं वसदीआं कौमा, उजड़ पुजड़ गईआं।
कई असाडीआं मोहनीआं नसलां, असलों ही मिट गईआं।
बुलबुल रो रो फावी होई, कोइल रो रो काली।
अज तक किसी न दरदां वाले, साडी सुरत संम्भाली।
कदों तीक साडे सिसकण नूं, वेख वेख खुश होसें।
लहु साडे तों भरीआं उंगलां, कदों तीक न धोसें।
जिस रव्व नूं सभना विच दसें, साडे विच वी वस्से।
सानूं जद फड़ फड़ के कोहें, अकल तेरी ते हस्से।
कदी सोचिआ ई दिल तेरा, किस लई चैन न पावे।
तेरी बेइन्साफी तेरे, मुड़ मुड़ अगे आवे।

पक्षियों की पुकार

हम गरीब निसहाय पंछी, मुख से कुछ न बोल सके,
हे इन्सान रहम के लिए, एक टुक तुमको देखे,
रंग विरंगी पहन पोशाकें, दुनियाँ हम सजाते हैं।
भांति भांति के मीठे मीठे, गीत खुशी के गाते हैं,
खाये पीये भगवान का दिया, सेवा तुम्हारी करते है।

प्रीतलड़ी (अप्रैल १६३८ का पृष्ठ ३०) यह नज़्म स. रघबीर सिंह जी 'बीर' की ओर से प्रकाशित हुई थी। समस्त जानवरों की विनती से सम्बन्धित होने के कारन पाठकों की भेंट की गई है।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

यह कितनी तुम्हारी निर्दयता, तरे हाथों से ही मरते हैं।
नभ में उड़ता हमको देख, गोली मार उड़ाता है।
कलोल कर रहे पक्षियों को शाख से पटकाता है।
बच्चे कई मासूम हमारे, चोगा चुगते चुगते।
ज़ुल्म तेरे का बन निशाना, कदमों में गिर पड़ते ।
कई हमारी बसती कौमे, तरे हाथों उजड़ गई।
कई हमारी सुन्दर नस्लें, धरती से ही उठ गई।
बुलबुल रो रो हुई व्यथित, कोयल रो रो काली।
अभी तक न किसी दर्दी ने, हमारी होश सम्भाली।
कब तक हमको देख सिसकता, खुश तुम होते रहोगे।
खून हमारे से लथपथ पाँचों, कब तक नहीं धोवोगे।
जिस राम को सबमें बसाओ, वह हममें भी है बसता।
हमें पकड़ जब तू नौचे, अक्ल तेरी पर वह हँसता।
क्या कभी सोचा है तुमने, दिल चैन क्यों नहीं पाता।
तेरा नाइन्साफ ही बार बार, तेरे आगे आता।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

गुरु नानक धर्म प्रचार मंडल एवम् मांस

सर्वप्रथम यह विचार करना अनिवार्य है कि गुरु नानक देव जी का इस धरती पर अवतृत होने का कारण हमारे विचारधीन विषय पर क्या प्रकाश डालता है। गुरुवाणी, वारां भाई गुरदास एवम् सिक्ख इतिहास के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मांसाहार उन विशेष बुराईयों में से एक थी जिनको समाप्त करने का उद्देश्य लेकर गुरु साहिब ने इस झुलसती पृथ्वी पर प्रकट होने की आवश्यकता महसूस की। दीनबन्धु जी ने बड़े विस्तार से बताया कि कलयुग के लोगों के मुख रक्तरंजित हो चले थे। जिस प्रकार कुत्ता हड्डी को नहीं छोडता उसी प्रकार लोग मांस खाना नहीं छोड़ते थे। इनका खाना मृतक शरीर हो गया है। कुत्ते का काम हैं मांस या हड्डी को खाते समय और कुत्तों को भौंकना, काटने को दौड़ना। यही हालत कलियुग के जीवों की हो रही हैं। पराया हक हज़म करने के लिए आपस में लड़ते झगड़ते रहते हैं। झूठ वोल बोल कर लड़ते-झगड़ते, भौंकते रहते हैं। धार्मिक विचार विमर्ष का नाम निशान भी नहीं रह गया है। जीवित जीवों का आदर-सम्मान नहीं तथा लोगों की मृत्योपरान्त भी बुराई ही की जाती है। लोग बड़ाई नहीं करते हैं। औरते उपदेश करने लग पड़ी है। शील, संजम सुच्च तथा सत्य का सर्वनाश हो गया है। खाने के लिए वह भोजन है जिसको खाने का कोई लाभ नहीं। लज्जा उल्टे पाँव अपने धर चली गई है। इज्जत ने अपना बोरिया विस्तरा गोल कर लिया है। सारंग की वार पौड़ी १४ का यह श्लोक प्रत्यक्ष प्रमाण के लिए प्रस्तुत है:—

श्लोक महला १
"कलि होई कुत्ते मुही खाजु होआ मुरदारू॥
कूड़ु बोलि बोलि भउकणा चूका धरमु विचारू॥
जिन जींवदिआ पति नहीं मुइआ मंदी सोइ॥
लिखिआ होवै नानका करता करे सु सोइ॥१॥ महला १॥
रंना होईआं बोधीआं, पुरुस होए सईआद॥ (पृष्ठ १२४२)
सीलु संजम सुच भंनी खाणा खाजु अहाजु॥
सरम गइआ घरि आपणै पति उठि चली नालि॥
नानक सच्चा एकु है अउरू न सच्चा भालि॥२॥

तिलंग राग में मुर्दा खाने के बारे में गुरु जी का कथन है—'दुनियाँ मुरदार खुरदनी।" मुर्दार शब्द के अर्थ जो गुरुवाणी द्वारा सिद्ध किये जाते हैं वह

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

पराया हक खाना तथा झूठ बोलना है। गुरु जी ने मुस्लमानों के लिए पराया हक सुअर का मांस तथा हिन्दुओं के लिए गाय के मांस को करार दिया है। अब विचाराधीन विषय यह है कि जो लोग मुर्गियों, मुर्गों, बकरियों, बकरों, भेडो, छत्तरों, गौरैयों, बटैरों तथा तिलियरो आदि बेचारे, निरीह, निर्दोष, पक्षियों को मार कर, उनके मांस से अपना भरण-पोषण करते हैं उनके लिये यह पराया हक नहीं है। कोई भी समझदार तथा न्यायप्रिय व्यक्ति यह फैसला देने की गलती नहीं कर सकता कि वह खाने वाले का अपना हक है। किसी भी जानवर का शरीर उसकी अपनी सम्पति है, बपौती है न कि किसी दूसरे की। प्रत्येक जीव को स्व प्रिय होता है। वह स्वयं के लिए जीवित रहना चाहता है। प्रत्येक जीव को अपनी जान प्यारी होती है-मनुष्यों को अपनी तथा पशुओं को अपनी। यदि कोई यह कहे कि जो पशु या पक्षी खरीद लिया जाये वह खरीददार की सम्पति हो जाती है इसलिए उस खरीदे हुए जीव को मार कर उसका मांस खाना उसका एकाधिकार हो जाता है तो यह कथन न्याय की कसौटी पर खरा नहीं उतरता। पक्षियों को वनों में से पकड़ कर पक्षियों को बेचते हैं उनको भगवान की ओर से या पक्षी समाज की ओर से ऐसा कोई अधिकारपत्र नहीं मिला होता कि वह उनको पकड़ कर अपने एकाधिकार में कर ले, रोज़ी-रोटी कमाने के लिए गैरों को बेच दे। खरीददार तो कह सकता है कि उसका यह हक है-पशु-पक्षियों को खाने का। परन्तु उन लोगों को इस बात पर भी गौर करनी चाहिये कि कई अमीर लोग गरीबो को या गरीब बच्चों को खरीद लेते हैं, पालते हैं। परन्तु इस अधिकार से वह वंचित होते हैं कि उन खरीदे हुओ की जीवन-लीला समाप्त करके उनका मांस खा ले। खरीददार उनसे अपनी सेवा-सुश्रूषा तो करा सकते हैं परन्तु उनको मार कर खा नहीं सकते, अन्यथा दंड के भागी भी उनको ही बनना पड़ेगा, इसकी सजा भी जीवन के बदले जीवन ही है। इसी प्रकार यदि मनुष्य कुछ पशुओं तथा पक्षियों को खरीदता है या उनके बच्चों को पालता है तो वह उनसे सेवा तो ले सकता है, उनको मार कर उनके मुर्दा शरीर का मांस खाने का अधिकारी वह कदाचित्त नहीं हो सकता। इसमें एक युक्ति और भी है कि यदि मनुष्य अपनी नस्ल के किसी जीव की जान लेता है तो उसे प्राण दंड मिलता है। गैर इन्सानी नस्ल के किसी जीव की जान लेने पर वह निर्दोष कैसे हो सकता है। वह यह तो कह सकता है कि संसार की किसी भी अदालत में वह दोषी करार नहीं दिया गया परन्तु उसे इस बात का भान होना चाहिये कि उसने अपनी अदालतों में तो उन निरीह, मूक जीवों की फरियाद के लिए कोई जगह ही नहीं रखी। परमात्मा की अदालत में तो उनको टके का सा जवाब नहीं मिलेगा। वहाँ तो उनकी फरियाद सुनी ही जायेगी। श्री गुरु नानक देव जी का कथन है:—

"जे सकता सकते कउ मारे,
तां मनि रोसु न होई॥ (पृष्ठ ३६०)

पर—"सकता सींहु मारे पै वगै"—तो "खसमै सा पुरसाई॥" अर्थात् यदि शक्तिशाली शक्तिशाली को मारे तो मालिक-परमात्मा को कोई रोष महसूस नहीं होता। यदि शक्तिशाली शेर निरीह गायों के झुण्डों को मारता है, शक्तिशली निर्बल मनुष्य को मारता है तो उसकी पूछ पड़ताल मालिक परमात्मा को ही होगी। उपरोक्त शब्द के अन्त में गुरु नानक देव जी कहते हैं कि शक्तिशाली एवम् अत्याचारी मनुष्यः—

जे को नाउ धराए वडा साद करे मनि भाणे॥
खसमै नदरी कीड़ा आवै जेते चुगै दाणे॥
(आसा महला १ पृष्ठ ३६०)

भाव यदि कोई मनुष्य अपने को प्रभावशाली, शक्तिशाली, समझदार प्रकट करने के लिए तथा अपनी जिह्वा के स्वाद हेतु मनभावन बाते करें अर्थात् पशु पक्षियों को मारकर, मांस का कबाब बना कर, मिर्च मसाले डाल कर खाता है तो उसे यह बात याद रखनी चाहिये कि जिन पर वह अत्याचार करता है, उनके मालिक-परमात्मा की दृष्टि में तो वह छोटे छोटे कीड़े भी हैं जो पृथ्वी पर गिरे हुए दानों को चुग कर, खा कर अपना जीवन-निर्वाह करते हैं। इसलिए श्री गुरु नानक देव जी के इन कथनों के अनुसार जानवरों का मालिक, निर्बलों का मालिक भगवान उनके सिर पर है। उस मनुष्य से वह जवाव तलब करेगा जो उसकी इच्छा के विरुद्ध, अनाधिकार से उनकी जान लेगा तथा उनके मुर्दा शरीर से अपना पेट भरेगा।

श्री गुरु अर्जन देव जी के रूप में गुरु नानक देव जी कहते हैं:—

सारंग महला ५॥
अंधे खावहि बिस् के गटाक॥
नैन स्रवन सरीरू, सभु हुटिओ सासु गंइओ तत घाट (रहाउ)॥
अनाथ रञाणि उदरू लै पोखहि माइआ गईआ हाटि॥
किलविख करत करत पछुतावहि कबहु न साकहि छांटि॥१॥
निंदकु जमदूती आइ संघारिओ देवहि मूंड उपरि मटाक॥
नानक आपन कटारी आपस कउ लाई मनु अपना दीनो फाट॥
(पृष्ठ १२२४)

मुर्दार का संसार प्रसिद्ध अर्थ प्राणविहीन शरीर है जिसको खाना तो दूर छूना भी अपवित्र माना जाता है। जानवर को चाहे किसी भी तरीके से मारा जाये, वह प्राणहीन हो जाने के कारण मुर्दा हो जाता है। कितनी आश्चर्यजनक बात है कि प्राणहीन मानव शरीर को स्पर्शमात्र करने से ही मनुष्य अपने आपको अपवित्र समझने लगता है। पवित्र होने के लिए वह स्नान करता

है, उस समय पहने हुए कपड़ों तक को धोता है। परन्तु गैर मानवीय नस्ल के मुर्दे को काट-छांट कर मिर्च-मसालों में पका कर महाप्रसाद कह कर पेट के डाकखाने को भरता है। इसलिए गुरु नानक देव जी कहते हैं कि घोर कलियुग आ गया है। इस समय के जीवों का भोजन मुर्दार हो गया है।

इसलिए जिन बुराईयों को मूल से उखाड़ फैंकने के लिए सिक्ख धर्म के प्रर्वतक श्री गुरु नानक देव जी अवतृत हुए-शिकार खेलना, मांस खाना बहुत बड़ी तथा बुरी बुराईयाँ थी। खेद है कि अपने आप को धर्म के ठेकेदार-धर्म के नेता समझने वाले अनेक सिक्ख प्रचारक एवम् ज्ञानी कहलाऐ जाने वाले लोग उस बुराई के स्वयं आदि हो रहे हैं तथा दूसरों को अभ्यासी बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं जिनको जड़ से उखाड़ फैंकने के लिए गुरु नानक देव जी अवतत हए थे।

स्वतः प्रमाण गुरु वाणी तथा मांस

प्रत्येक धर्म ग्रन्थों के प्रमाणों को स्वतः प्रमाण तथा प्रतः प्रमाण-दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। हिन्दू धर्म में वेद स्वतः प्रमाण तथा शास्त्र, स्मृतियाँ, पुराण प्रतः प्रमाण के अर्न्तगत आते हैं। इस्लाम धर्म में कुरान स्वतः प्रमाण एवम् हदीसें तथा तवारीखी पुस्तकें प्रतः प्रमाण की कोटि में आती हैं। इसी प्रकार सिक्ख धर्म में गुरुवाणी स्वतः प्रमाण तथा शेष सिक्ख साहित्य प्रतः प्रमाण में आता है।

माननीय भाई गुरदास तथा दिवान नंद लाल की रचनाओं को पंचम गुरु गुरु अर्जनदेव जी तथा दसम् गुरु गुरु गोबिन्द सिंह जी ने मान्यता दी है इसलिए इन सबको भी प्रायः स्वतः प्रमाण की कोटि में ही रखा जाता है। बुद्धिमान लोगों को स्वतः प्रमाण एवम् वाणी प्रमाण हर रूप में स्वीकृत होता है। प्रतः प्रमाण केवल वह ही स्वीकार्य होता है जो स्वतः प्रमाण वाणी के अनुकूल हो। प्रतिकूल प्रतः प्रमाण किसी को भी स्वीकार्य नहीं होता है। इसलिए सर्वप्रथम स्वतः प्रमाण पेश किए जाते हैं।

१ *"धौल धरमु दइआ का पूतु"* *(जपु जी)*

२ *असंख गलवढ हतिया कमाहि (जपु जी)*

३ *"भुगति गिआनु दइआ भंडारणि"* *(जपु जी)*

४ *"दईया जाणै जीअ की किछु पुंन दानु करेइ॥ (आसा दी वार)*
(पृष्ठ ४६८)

५ *"दईया कपाह संतोख सूत"* *(आसा दी वार)* (पृष्ठ ४७१)

६ *"होइ सगल की रेणुका हरि संगि समावउ॥*
दूखु न देई किसै जीअ पति सिउ घरि जावउ॥"
(गउड़ी महला ५) (पृष्ठ ३२२)

७ *अठसीठ तीरथ सगल पुंन जीअ दइया परवानु॥"*
(बारहामाह माझ महला ५)

८ *"दइयालं सरबत्र जीआ" (श्लोक सहसकृत महला५)*(पृष्ठ १३५७)

९ *जे रतु, लगै कपड़े जामा होइ पलीतु॥*
जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु॥"
(माझ दी वार महला १ पृष्ठ १४०)

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

१० मिहर मसीति सिदकु मुसला हकु हलालु कुराणु।"
(माझ दी वार पृष्ठ १४०)

११ तउ नानक सरब जीआ मिहरंमति होइ॥"
(माझ दी वार पृष्ठ १४१)

१२ हकु पराइआ नानका उसु सूअर उस गाइ॥
गुरू पीरू हामा ता भरे जा मुरदारू न खाइ॥"
(माझ दी वार पृष्ठ १४१)

१३ जे सकता सकते कउ मारे ता मनि रोसु न होई॥ (रहाउ)
सकता सींहु मारे पै वगै खसमें सा पुरसाई॥"
(आसा महला १ पृष्ठ ३६०)

भाव यदि ताकतवर ताकतवर को मारता है तो परमात्मा को कोई रोष नहीं होता पर यदि शक्तिशाली शेर समान हो और निर्वलों रूपी गायों के झुण्ड को मारे तो उसकी भगवान की अदालत में पूछ पड़ताल होगी।

१४ जे को नाउ धराए वडा साद करे मनि भाणे॥
खसमै नदरी कीड़ा आवै जेते चुगै दाणे॥"
(आसा महला १ पृष्ठ ३६०)

भाव—जो लोग नवाव वन कर जीवों का कबाब भून कर, मिर्च मसाले डालकर, खा कर, मन इच्छित स्वादों का आनन्द प्राप्त करते है उन्हें यह वात सर्वथा याद रखनी चाहिये कि उस परमात्मा के ध्यान में दाने चुग चुग कर, खाकर पेट भरने वाले नन्हें कीड़े भी हैं।

१५ हथि छुरी जगत कासाई॥" *(आसा दी वार)* (पृष्ठ ४७२)

१६ बेदु पड़ै मुखि मीठी वाणी।
जीआं कुहत न संगै पराणी ॥ (गउड़ी महला १ पृष्ठ २०१)

१७ "आतमा परातमा ऐको करै॥
अंतर की दुबिधा अंतर मरै।" (धनासरी महला १ पृष्ठ ६६१)

अर्थात् पराई आत्मा को भी अपने समान ही जानना चाहिये

१८ "कादी कूड़ बोलि मलु खाइ॥
ब्राहमणु नावै जीआ धाइ॥
जोगी जुगति न जाणै अंधु॥
तीने ओजाड़े का बंधु ॥" (धनासरी महला १ पृष्ठ ६६२)

१९ "एकादस इकु रिदै वसावै॥
हिंसा ममता मोहु चुकावै॥ (बिलावल महला ४) (पृष्ठ ८४०)।

२० मनि संतोखु सरब जीअ दइआ॥

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

इन बिधि बरतु संपूरन भइआ॥ (गउड़ी थिती महला ५ पृष्ठ २६६)

२१ "जिसु मनु मानै अभिमानु न ता कउ हिंसा लोभु विसारे॥
सहजि रवै वरू कामणि पिर की गुरमुखि रंगि सवारे॥"
(सारंग महला १ पृष्ठ ११६८)

२२ कलि होई कुते मुही खाजु होआ मुरदार।१।
(श्लोक महला १ सारंग दी वार १२४२)

२३ राजे सीह मुकदम कुते॥
जाइ जगाइन्हि बैठे सुते॥
चाकर नहदा पाइन्हि घाउ॥
रतु पितु कुतिहो चटि जाहु॥" (पृष्ठ १२८८)

२४ जीवतु मरै ता सभु किछु सूझै अंतरि जाणै सरब दइआ॥
नानक ता कउ मिलै वडाई आपु पछाणै सरब जीआ॥
(रामकली सिध गोष्ट महला१ पृष्ठ ६४०)

२५ 'मनमुख मरहि मरि मरणु विगाड़हि ॥
दूजै भाइ आतम संघारहि॥"
माझ महला ३ अष्टपदी। (पृष्ठ ३६२)

२६ "अंधे खावहि बिस् के गटाक॥
अनाथ रञाणि उदरू ले पोखहि माइआ गईआ हाटि॥
किलविख करत करत पछुतावहि कबहु न साकहि छांटि॥
नानक आपन कटारी आपस कउ लाई मनु अपना कीनो फाट॥
(सारंग महला ५ पृष्ठ १२२४)

२७ "नमस्तं रहीमे॥ नमस्तं करीमे।
करुणालय है अर घालय हैं॥ (जापु साहिब)

परमात्मा की उपमा, प्रशंसा करते हुए दशम् गुरु परमात्मा को रहम करने वाला, क्षमा करने वाला तथा कृपा गृह कहते हैं। यही गुण गुरु तथा गुरु के शिष्य में होने चाहिये क्योंकि यथा राजा तथा प्रजा।

२८ "अलप आहार सुलप सी निंदरा दइआ छिमा तन प्रीत॥"
(दशम हज़ारे)

२६ "मज़न तेग बर खून कस बेदरेग॥
तुरां नीज़ ओ खून रेज़द बतेग़॥
(ज़फरनामा श्री मुखवाक पातशाही १०)

किसी की गर्दन पर निर्दयी होकर छुरी न चला क्योंकि तुम्हारी गर्दन भी उपर वाले की तलवार से काटी जायेगी।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

३० जीअ बधहु सु धरमु करि थापहु अधरमु कहहु कत भाई॥
आपस कउ मुनिवर करि थापहु का कउ कहहु कसाई॥"
(मारु कबीर जी पृष्ठ ११०३)

अर्थात् मांस खाने के लिए जीवों का वध करके उसे धर्म का नाम देते हो तो अधर्म क्या होगा? जीवों को अपनी जिह्वा के स्वाद हेतु कत्ल करने वाले मुनि, धर्मात्मा है तो कसाई किसको कहोगे।

३१ "रोजा धरै मानवै अलहु सुआदति जीअ संधारे॥
आपा देखि अवर नहीं देखै काहे कउ झख मारै।
(आसा कबीर जी पृष्ठ ४८३)

हे अल्ला के बंदे। रोज़े रख कर अल्लाह को मनाता है परन्तु अपने स्वाद के लिए दूसरे जीवों का संहार करता है। अपना ही ध्यान रखता है कि तुम्हें कोई दुःख न दे परन्तु दूसरों के दुःख को तुम क्यों नहीं महसूस करते हो। पर उपदेश करते समय ऊल जलूल कहते रहते हो।

३२ सब जीवों में एक ही खुदा का निवास बताने का दावा करने वाले मुल्ला को सम्बोधन करते हुए कबीर जी का कथन है:—

बेद कतेब कहहु मत झूठे झूठा जो न बिचारै॥
जउ सब महि एकु खुदाइ कहत हउ तउ किउ मुरगी मारै॥"
(प्रभाती कबीर जी पृष्ठ १३५०)

३३ मांस खाने के लिए ज़िव्हा करने वाले को ज़बरदस्ती अत्याचार करता हुआ बताते हुए कबीर जी कहते है:—

"कबीर जोरी कीए जुलमु है कहता नाउ हलालु॥
दफतरि लेखा मांगीऐ तब होइगो कउनु हवालु॥ (पृष्ठ १२७४)

३४ "कबीर जीअ जु मारहि जोरू करि, कहते हहि जु हलालु॥
दफतर दई जब काढि है होइगा कउनु हवालु॥"
(श्लोक कबीर संख्या १९९ पृष्ठ १३७५)

३५ "कबीर जोरू कीआ सो जुलमु है लेइ जबाबु खुदाइ॥
दफतरि लेखा नीकसै मार मुहै मुहि खाइ॥"
(श्लोक २०० पृष्ठ १३७५)

३६ "सिमरनु भजनु दइआ नहीं कीनी तउ मुखि चोटा खाहिगा॥'
(मारु कबीर पृष्ठ ११०६)

३७ "मुंद्रा मोनि दइया करि झोली॥" (रामकली कबीर पृष्ठ ९७०)

३८ "कहतु कबीरू सुनहु रे संतहु धरमु दइआ करि बाड़ी

३९ "दइआ धरमु अरू गुर कीं सेवा ए सुपनंतरि नाहीं॥"
(पृष्ठ ९७१)

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

४० कबीर खूबु खाना खीचरी जा महि अंम्रित लोनु॥
हेरा रोटी कारने गला कटावै कउनु॥ (पृष्ठ १३७४)

खीचरी शब्द का भाव केवल दाल चावल की खिचड़ी से नहीं है। खीचरी पद का भाव है मिले जुले वह पदार्थ जो कबीर जी स्वयं परमात्मा से मांगते हुए कहते हैं:—दुई सेर मांगउ चूना (आटा) पाउ घीऊ संग लूना॥ अध सेर मांगउ दाले॥ मोकउ दोनउ वख़त जिवाले।"

कबीर जी उपरोक्त श्लोक में कहते हैं कि वह सतोगुणी मिश्रित पदार्थ वढ़िया है जिनमें नमक रूपी अमृत विद्यमान होता है। हेरा (अहेरा से शिकार, शिकार से भाव मांस) रोटी खाने के कारण परलोक में अपना गला कौन कटायेगा। इस लिए हे मानव, हमें दाल-रोटी ही सर्वोतम खाना लगता है।

४१ "बाट पारि घरू मूसि बिरानो पेटु भरै अप्राधी॥
जिहि परलोक जाइ अपकीरति सोई अबिदिआ साधी॥
हिंसा तउ मन ते नही छूटी जीअ दइआ नहीं पाली॥
परमानंद साधसंगति मिलि कथा पुनीत न चाली॥"
(सारंग परमानंद पृष्ठ १२५३)

४२ "तीरथ देखि न जल महि पैसउ जीअ जंत न सतावउगो॥'
(रामकली नामदेव जी पृष्ठ ९७३)

४३ फरीदा जौ तै मारिन मुकीआं तिन्हा न मारे घुंमि॥
आपनड़ै घरि जाईऐ पैर तिन्हा दे चुंमि॥
(फरीद जी पृष्ठ १३७८)

४४ "जे तउ पिआ मिलन दी सिक हिआउ न ठाहे कही दा॥
भाई गुरदास जी (१३८४)

४५ सीहं पजूती बक्करी मरदी होई खिड़ खिड़ हस्सी॥
सीहुं पूछै विसमाद होइ इत अउसर कित रहस रहस्सी॥
बिनउ करेंदी बक्करी पुतर असाडे कीचन खस्सी॥
अक्क धतूरा खांदिआ कुह कुह खल उखल्ल बिणस्सी
मास खाण गल वढ के हाल विनाड़ा कउण होवस्सी॥
गरब गरीबी देह खेह, खाज अखाज अकाज करस्सी॥
जग आइआ सब कोई मरसी॥ (वार २५ पउड़ी १७)

४६ कुहै कसाई बक्करी लाइ लूण सीख मास परोआ॥
हस हस बोले कुहीदी खाधे अक्क हाल इह होआ॥
मांस खाण गल छुरी दे हाल तिनाड़ा कौण अलोआ।
जीभै हंदा फेड़िऐ, ख[illegible] मुख भंन वगोआ॥
(वार ३० पउड़ी २१)

४७ बधिक उधरे आखिअन फाही पाहि न फड़ीऐ टंगा।
जे कसाई उधरिआ जींआ घाइ न खाइऐ भंगा।
(बार ३१ पउड़ी ६)

४८ "कलि होई कुते मुही खाज होआ मुरदार गुसाई॥"
(भाई गुरदास वार १)

ऐतिहासिक प्रमाण

गुरुवाणी, भक्त वाणी एवम् भाई गुरदास जी की वाणी द्वारा मांस निषेध के विषय पर प्रमाण प्रस्तुत करने के उपरान्त अब पाठकों की सेवा में ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत किये जाते हैं। स्वतः प्रामाण वाणी की पुष्टि करते हुए सिद्ध करते हैं कि सिक्ख धर्म में मांस खाना वर्जित है। इस के खाने पर प्रतिबन्ध है।

(अ) पुरोहित को उपदेश

श्री गुरुनानक देव जी के "जनेऊ संस्कार के समय लोगों को प्रीति भोज कराने के लिए मांस पकवाने के लिए बकरे मंगवायें गये।" —भोजन हेत अंन इक ठाई। (१) आम्खि कारन छांग (२) मंगाई॥ जो छत्री कालू के गिआती समन आमंतू (३) समक अमंतुदीनै खयाती। नानक प्रकाश पूर्वार्द्ध खंड अध्याय ६। जब पुरोहित ने गुरुजी को जनेऊ धारण करने के लिए कहा तो गुरु नानक जी ने उच्चारण किया :—

पाइ सूत गर करत कुकरमा।
धन हित हिंसा घोहि अधरमा॥
अंत प्रयंत दुशटता धारे॥
झूठ पिशनता चित हितकारे॥१७॥
सो खतरी दिज किधो चंडाला॥
सहाहि जाइ जमदंड बिसाला॥
कौन जनेऊ तिह फल दीना।
पायो नरक ईहां अघ कीना।

गुरुजी ने पंडित जी से प्रश्न किया, "हे पंडित जी! क्या धर्म केवल जनेऊ धारण करने से रहता है या दया आदि शुभ कर्मो के धारण करने से। जो लोग गले में जनेऊ धारण करके लोभवश विश्वासघात करते है। झूठ बोलते है, चुगली निन्दा आदि कुकर्म करते हैं वह क्षत्रिय द्विजाति के अर्न्तगत आते हैं या चंडाल जाति के। जनेऊ ने उनको क्या फल प्रदान किया जिन्होंने इस लोक में बकरे मार कर पाप किया। क्या अंत में वह नर्क के भागी नहीं बनेगे? तो पुरोहित हरदयाल ने पूछा नानक! किस प्रकार का जनेऊ धारण करने से नर्क प्राप्ति से छुटकारा मिल सकता हैं। "तो गुरु जी ने इस श्लोक

---

१. आमिख—मास २. छांग-बकरे ३. आमंतू-न्यौता।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

का उच्चारण किया—श्लोक महला १॥—

दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु।
एहु जनेऊ जीअ का हई त पांडे घतु.....
तगु कपाहहु कतीऐ बामण वटे धतु॥ (पृष्ठ ४७१)
कुहि बकरा रिंनि खाइआ सभु को आखै पाइ॥

अर्थात् दया की कपास से संतोख का सूत कातकर, फिर ज्ञान की गांठे लगा कर, सच्चाई का बट चढ़ा कर तैयार किया हुआ जनेऊ पहनने से नर्क-फल प्राप्ति से छुटकारा मिल सकता हैं। इसलिए हे पुरोहित! मुझे इस प्रकार का जनेऊ धारण करवा दो। परन्तु तुम तो लाखों चोरियाँ एवम् अनैतिक कार्य करते हो, लोगों को ठगते हो और कपास-सूत का जनेऊ पहनते हो, बकरियों, जीवों को हलाल कर उनका मांस खाते हो तथा दूसरों को भी खाने के लिए कहते हो। इस प्रकार का दिखावे का जनेऊ मुझे तुमसे धारण नहीं करना है।

इस कथा से यह स्पष्ट होता है कि श्री गुरु नानक देव जी ने मांस खाने की निन्दा की है। धर्म का जनेऊ धारण कर जीवों पर दया तथा रहम करने का उत्तम उपदेश दिया है।

(आ) देवलूत को उपदेश

श्री गुरु नानक देव जी जीवों का उद्धार करते हुए देवलूत राक्षस के यहाँ पहुँचे । देवलूत आपका सेवक बन गया तथा भोजन ग्रहण कर अतिथ्य स्वीकार करने का अनुरोध करने लगा। तो सच्चे पातशाह जी ने प्रत्युत्तर में कहा "देवलूत! जब तक तुम मांस खाना नहीं छोड़ोगे तब तक हम तुम्हारे घर का भोजन ग्रहण नहीं करेंगे।" देवलूत ने गुरुजी की आज्ञा का पालन किया तथा भविष्य में मांस न खाने का प्रण किया। तत्पश्चात् गुरु जी की आज्ञानुसार बाला जी ने देवलूत से सूखा अनाज़ लेकर भोजन पकाया। गुरु जी द्वारा लगे भोग से प्रसाद ग्रहण कर देवलूत के अन्तर्कपाट खुल गये। उसे वास्तविकता का ज्ञान हो गया । इससे सम्बन्धित श्लोक नानक प्रकाश पूर्वार्द्ध भाग अध्याय ५५ में लिखा है:—

करहु रसोई संत जी भोजन अचहु बनाइ।
सरधा पूरन कीजिऐ सुन सिरी गुरु अलाइ। (दोहा)

गुरु जी

सुभ उपदेश जो लहु हमारा।
असन करहिं तब अंगीकारा।
यो नहि तुमरो खाइ कदापी।
हउ सब जीवन के संतापी॥५॥
देवलूत कहि—'जिहा विधि कहि हैं।
सिरी गुरु जी मैं तह बिधि रहि है॥६॥

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

गुरु जी

प्रिथम तजहु आभिख (मांस) को खाना॥
करहु जास हित जीवन हाना॥७॥
देवलूत—"दरसन करत पाप मति भागी॥
सुन के बचन नाम लिवलागी॥
तुमरे चरनन मनु अनुरागा॥
भइओ आज ते मैं वडभागा॥१४॥

श्री वाला जी श्री गुरु अंगद देव जी को सुनाते हुए कह रहे हैं:—

तिह छिन कीन आहार तियागा।
अचवन लगे रूप करतारा॥१५॥
केतक दिज तहि रहे गुसाई।
गुरसिखी की रीत चलाई।
सब राखस को नाम जपाइओ॥
आमिख खान तिनहि तजवायो॥१६॥
जीअ घात की बान बिसारी॥
सति संगत करही सुख बारी॥
भै तिआर जब चलने हेता॥
भनत भए बेदी कुलकेता॥१६॥
हिंसा नहि जीवन की कीजै॥
सतिगुरं जाप जपहु दुख छीजै॥२०॥

(इ) राजा शिवनाभ

संगला द्वीप के राजा शिवनाभ को उपदेश देते हुए श्री गुरु नानक देव जी ने कहा, "शिवनाभ! तीन प्रकार की हिंसा का त्याग करके अहिंसक बन जाओ। तीन प्रकार की हिंसा मनसा, वाचा कर्मणा है। अर्थात्, जो हम मन, वाणी तथा शरीर से हिंसा करते हैं। किसी दूसरे के प्रति मन से, हृदय से बुराई सोचते हैं, चिन्तन करते हैं, मन की हिंसा है। वाणी से बोलकर किसी को कष्ट पहुँचाते है, वाणी की हिंसा है। किसी दूसरे को शरीरिक कष्ट देना शरीरिक अहिंसा है। तन की अहिंसा हैं। नानक प्रकाश पूर्वार्द्ध भाग अध्याय ४८ पृष्ठ ५३१ पर लिखा है—

"एक अहिंसा जानीऐ मन बच काइआ तीन।
पर का बुरा जे चितवना मन की हिंसा चीन।
फिक्का बोल हनाइ दुखावै।
हिंसा बचनन की कहि लावै।
तीसर मारन जीवन केरी।
इन कउ तिआगे छै बिन देरी।"

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

(ई) मांस खाने का परिणाम

लाहौर के पास एक गाँव में दुनी चंद क्षत्रिय के गृह श्री गुरु नानक देव जी पधारे। घर में धूमधाम देख कर गुरु जी दूनीचंद से पूछते हैं, "दुनी चंद! आज तुम्हारे घर में क्या है ?" दूनी चंद उत्तर देता है महाराज! आज मेरे पिता जी का श्राध है। इस उपलक्ष में मैंने सौ ब्राह्मणों को भोजन करवाना है।" गुरुजी ने उसे बताया कि उसका बाप तीन दिनों से भूखा है। उसे खाने के लिए कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ।" दुनी चंद ने आश्चर्यचकित होते हुए पूछा "दीन दयाल! वह कहाँ है?" फिर गुरुजी ने उत्तर दिया, "यहाँ से पाँच कोस के फासले पर एक भेड़िये के रूप में एक बेर की झाड़ी के नीचे बैठा है। तुम उसके लिए एक थाली में भोजन परोस कर ले जाओ, डरना नहीं। तुम्हें देखते ही उसकी पशु बुद्धि परवर्तित होकर मानवीय हो जायेगी।" दुनीचंद गुरु जी की आज्ञानुसार वहाँ पहुँचकर निर्भय होकर भोजन की थाली भेड़िए के आगे रख देता है। भेड़िए की बुद्धि परिवर्तित हो जाती है। दुनीचंद पूछता है, --पिताजी! आप तो वहुत ही उत्तम प्रकृति के पुरुष थे, शुभ कर्म करने वाले थे। तो यह भेडिए की योनि आपको क्यों मिली?" यह सुनकर भेड़िए रूपी पिता ने कहा, "हे पुत्र! मेरी यह दशा इसलिए हुई क्योंकि मूझे पूर्ण गुरु की प्राप्ति नहीं हुई थी। जव मेरा अन्तिम समय आया तो पास पड़ोस में किसी ने मांस पकाया था। उसकी बू मेरे तक पहुँची। तब मेरा मन उसे खाने के लिए ललचाने लगा। उसी लालच के कारण एवम् परिणामस्वरूप मुझे यह भेडिए का जन्म मिला है। हे पुत्र! तुम्हें पूर्ण गुरु की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना चाहिए तांकि उसकी सुशिक्षा से तुम अपना जीवन सुधार लो तथा मरणोपरान्त भी तुम्हें अच्छी यौनि मिले।"

(भाई बाले वाली बड़ी जन्म साखी जो खालसा गुरमत प्रैस छिहरट्टा (अमृतसर) द्वारा अभी कुंछ समय पहले ही प्रकाशित हुई है। पृष्ठ ५६०-५६१)

(उ) मक्का में उपदेश

श्री गुरु नानक देव जी ने अरब देश के संसार प्रसिद्ध इस्लाम-तख्त मक्के तथा मदीना में जा कर हाजियों तथा मोलवियों को यह उपदेश दिया कि मांस खाना हराम है। जिसके खाने से क्रोध, खुदी, अहंकार, गर्व, कामचेष्टा का जन्म हो, उसका खाना धिक्कार है। यह सुन कर पीर बहावुद्दीन जी प्रश्न पूछते है," हे पीर जी! कौन कौन सी चीजें खाने से विकारों की उत्पत्ति होती है। प्रत्यत्तुर में गुरु जी निम्नलिखित शब्द का उच्चारण करते है।

'जबरा मार न सकनी चीते शेर पिलंग,
थीए हराम बहु जालमा जो मारनं अर्गो डंग।
डाढिआं कोई न मारई करन जो अर्गो ज़ोर

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

जो ग़रीब निमानड़े तिन्हां लैंदे मांस अधोड़।
लिखिआ चार किताब विच सब पर ज़ोर हराम।
सोई कलमे पाक जो मंने रब कलाम।" (जन्म साखी पृष्ठ १६२)

(ऊ) मांस खाने से तौहीन

मदीने में चार इमामों से विचार-विमर्श करते हुए गुरु नानक देव जी कहते हैं:—

"लै फुरमान खुदाइ दा आए मुसलमान।
मारन गऊ गरीब नू दिते भुला शैतान।
कहिंदे पकड़ परिंदिआ और कहिंदे जीअ।
मारन छुरीआ लात दे कहिण हलाली थीअ।
तुरदे फिरदे जीआं नू देवन तुरक अज़ार।
खावण मास हलाल कहि होसन अंत खुआर।
(जन्म साखी पृष्ठ २६२)

हिन्दू मुसलमान दुइ हुइ बंध निआरे दोइ।
ओन्हा खाधा हड मास उह पीवन दुध लै चोइ।
जिदो जिदी आपो विच हिन्दू तुरक लड़ाइ।
ओहना मारिआ सूर नू ओहना मारी गांय।
दोहां कीती हतिआ मुए न जीवन फेर।
दरगह सचे रब दी दुइ लैण सजाई ढेर।" (पृष्ठ १६७)
"सुणहु पीर बहावुदीन आखे नानक पीर।
बेगुनाह जो जानवरां करदे किउं तकबीर।
ज़ोर जुलम हराम है सिर गरीबां सोइ।
बेज़ुबाना नू मार के खावे मास जि कोइ।
जिती पैदाइश रब दी कान हैवान नबात।
सबना अंदर इक रब कीचन नाही घात।
किती शई पाक है किती शई पलीत।
नफसे कारन मारीऐ कही खुदाई हदीस।
कारन सवादे नफस दे जाना ज़िब्हे कराए।
जिसनू कोई मारसी फिर उह भी कुहसी आइ।
तंदरूसत न मारीऐ जो फिरदा गलीआ माहि।
आई अज़ल जो गिरे सो कहे हलाली खाइ।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

नफ़स रज़ाई वातली कहिआ मूल न मान।
जो करें रिआज़त बंदगी तिन्हा मास न पाक।
सवना अंदर रम रहिआ हर दम साहिब आप।"

कमलादीन ने प्रश्न किया "पीर जी! यदि इन जीवों को न मारा जाये तो यह सारी पृथ्वी पर अपना एकाधिकार स्थापित कर लेंगे । गुरु जी ने उत्तर दिया:—

"आखै नानक शाह सच सुगाहु इमाम कमाल।
जो गालिब होइ इन्सान पर मारन तिन्हा हलाल।
गऊ भैंस ते मुर्गीआ जौ हैन हवान गरीब
तिह पर छुरी हराम है खावन तिन्हां पलीत।
ज़बरा मार न हंधीऐ जो करन अगों ते जोर।
जिस पर जोरा ना चले देण हराम कर छोर।
जो बिचारे जानवर मारन तिन्हां रवाल।
विना रज़ाइ खुदाइ दी तिह पर छुरी ज़वाल।
मूई शै मुरदार है सहिके जान कवाइ।
खाणा इह हलाल है तिस पर छुरी रवाइ।
खाधिआं मास गुनाह है जोरी कीआ हलाल।
जोरी कुठा हराम है तिस ते होइ ज़वाल। (पृष्ठ ३०७)

(ए) दर्दवंद दरवेश

तउरेत अंजील ज़बूर फुरकान।
चारौं कूर्के ज़ोर हराम।
अलह फुरमाइआ मंने न कोइ।
खुदी बखीली करे सब कोय।
वे ज़बान पर छुरी हराम।
किआमत लेखा रहिआ अमान।
जैसा करे तैसा ही पावै।
हथे हथी झगड चुकावै।
साबर दरद देरवेश।
बे दरदां के किआमत पेश।
देणा लैणा छडे न कोइ।
आखर वक्त निबेड़ा होइ। (पृष्ठ ३०८)

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

(ऐ) शीहें उप्पल को उपदेश

सुरज प्रकाश् रास १ अंसू १६ में एक कथा है कि एक बार श्री गुरु अंगद देव जी खडूर साहिव से गोइंदवाल साहब जा रहे थे। मार्ग में उनको उनका शिष्य शींहा उप्पल मिल गया। वह अपने पुत्र के अनुष्ठान के उपलक्ष में मांस पकाने के लिए एक सौ एक बकरे ले जा रहा था। गुरु जी ने पूछा, "भई यह बकरों को हाँक कर क्यों ले जा रहे हो? शीहें ने विनती की, "महाराज! मेरे पुत्र का अनुष्ठान है। हमारे पूर्वजों की यह परम्परा है कि इस अवसर पर भाइचारे को तथा आए अतिथियों को मांस के साथ खाना खिलाया जाये।" गुरुजी ने कहाः

इतने जीवन हिंसा करैं।
पाप विसाल आपन सिर धरैं।
अब तो सुगम जानीऐ करबो।
अंत महादुख नरकन परबौ।
देहिं सासना जम के दूत।
तहा न पहुँचे बंधप पूत ।८।
जिनके हित अघ करम कमाहि।
तहां न रंचक होह सहाइ।
सुख भोगनगे सगरे लोक।
अपदा परे तोह बड शोक (६)
धरम राइ जब कर है लेखा।
लहै महा दुख रहे न सेखा।"

शीहा उप्पल को भयः—

सतिगुरु जी के वचन सुन कर शीहां बहुत डरने लगा उसने करबद्ध बिनती कीः—

नीकी बात आप मुझ कहो।
बच जिस रहों सो मैं भी चहों॥११॥
होइ न पाप नरक नहि परहं।
जीव घात ते चित महि डरहं॥
आप शकत घरहो सम्रथ्थ।
राखहु मेहि देहु हरि हधु॥१२॥
तुम ते वडो कहा मैं पावों॥
परिओ शरण, मैं मित गुण गावो।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

जिम इह जीअ घात नहि होवै।
नहीं जठेरन कउ दुख जौवे।।१३।।
अस उपाइ अब आप अलावहु।।
अपने सेवक जान बतावहु।।

गुरु जी:—

हमरे दुआरे मुंडन करो।।
उ को भरम सगर परहरो।
बिघन जठेरन को नहि कोइ।।
सिमरहु सत्नामु दुःख खोइ।।१५।।
जिन को दुखदायक तूं जानै।।
जे तेरे सम बिघनन ठानै।।
सरब ओर ते होहि रखवारै।
सब सुख देहि न काज बिगारै।।१६।।
अज सगरे अब दीजै छोर।।
नरक निहारहि नहि दुख घोर।।

शीहें उप्पल ने गुरु जी की आज्ञानुसार सारे बकरे वहीं पर ही छोड़ दिये!

"अज खलास तिस छिन सब कीने।।
गुर के चरन कमल मन लीने।।

इस प्रसंग से ज्ञात होता है कि गुरु अंगद देव जी जीव हिंसा तथा मांस खाने के घोर विरोधी थे। आप मांस खाने का परिणाम नर्क की प्राप्ति मानते हुए अपने शिष्यों को जीव हिंसा करने तथा मांस खाने के विरुद्ध उपदेश देकर उनका भला चाहते थे।

(ओ) छट्टे गुरु जी एवम् तिलोका

श्री गुरु हरिगोबिन्द साहिब, मीरी पीरी के मालिक जीवों पर दया करने का उपदेश देते थे। इतना ही नहीं अहिंसक सिक्खों की सहायता करना भी उनके स्वभाव का अंग था। इसके बारे मे गुरु बिलास पातशाही छः अध्याय ८ छंद ८९ से आगे लिखा है:—

सच्चे पातृशाह श्री अकाल तख्त पर शोभित हैं। तिलोका नामक आदमी चरणों पर शीश झुकाकर उपदेश प्राप्त करने की विनय कर रहा है:—

गुरु कहा सतिनाम रिद धारो।।
सब जीवन पर दइआ विचारो।।९०।।दोहरा।।
सरब भूत आतम पिखो किसे दुखावो नांहि।।
या सम भगति न होर है धरो सत रिद माहि।।९१।।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

भाई तिलोका भजन (उपदेश) ले, शीश झुका कर विदा हो गया। वह गजनी के मुगल बादशाह का नौकर था। उसका वेतन पच्चास रुपये मासिक था। एक दिन वह मुगल बादशाह शिकार के लिए निकला। तिलोका भी साथ ही गया। तिलोके के सामने से एक गर्भवती हिरनी गुजरी। भाई तिलोके ने शीघ्रता से भाग कर हिरनी को तलवार मार कर उसके दो टुकड़े कर दिए हैं:—

'तिलोके तमक तेग तहिं झाड़ी॥
गरभ सहित मृगनी भी मारी॥
तांहि उदर तो बॅच गिराए॥
निकस तड़फ तिह प्रान तजाए॥६४॥दोहरा॥
तिलोका देख बिसमै भयो निज मन धृगे उचार॥
गुर का बचन बिसारिओ जड़ह मूड़ गवार॥६४॥
गुर का बचन दया रिद धारौ॥
सरब भूत आतम दृष्टारो॥
सो विसार तै मन ते दीना॥
सो विसार हिंसा को कीना॥
तांते तेग रखों नहि पासा॥
होवत तेग जीव होइ नासा॥
काट तेग मिआन मध डारी
मूठ लोह तेहि साथ सवारी ॥६६॥

एक दिन भाई तिलोके की निंदा करने वाले एक निंदक ने बादशाह पास जाकर शिकायत की कि तिलोके के पास काठ की तलवार है जिससे यह भय है कि कहीं समय पड़ने पर वह सरकार को धोखा न दे जाए। बादशाह ने इस बात की परीक्षा लेने के लिए एक विशेष दरबार लगाया तथा सभी सरदारों को आज्ञा देकर कहा है, कि वह सब उसको अपनी-अपनी तलवारें दिखायें। तलवार दिखाने का नाटक एक ओर से आरम्भ हो जाता है। भाई तिलोका जी मीरी पीरी के स्वामी श्री गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी के चरनों में विनती करते हैं कि उनकी लज्जा अब उन्होंने ही रखनी है। उन्हीं की आज्ञा की, उपदेश का, अमल करते हुए उसने गुप्त रूप में काठ की तलवार रखी हुई है। यदि पर्दाफाश हो गया तो उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा। उनको ही लाज लगेगी। जब भाई जी की बारी आती है तो वाहिगुरु शब्द उच्चार कर विश्वास के साथ म्यान में से तलवार खींचते हैं। बिजली के समान चमचमाती हुई तलवार को देखकर लोगों की आँखे चुंधियाँ जाती हैं। गुरु विलास के रचयिता इस के बारे में लिखते हैं:—

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

सतिनाम कहि तेग निकारी।
उत्तम असि जिहि कीमत भारी।
तिलोके दिख धन गुरु को कहा।
मुगल तेग दिख बड सुख लहा।१०४॥

परिमाणस्वरूप उस निदंक का मुह काला होता है तथा उसको नौकरी से निकाल दिया जाता है। कुछ समय पश्चात् भाई तिलोका गुरु जी के चरणों में उपस्थित होकर सारी घटना सुनाता है। गुरु जी कहते है:—भाई! जो सिक्ख जीवो पर दया करता है, संकट समय गुरु जी उसकी सहायता के लिए प्रकट होते है।

सिरी गुर कहा दइआ अस भाई।
दया देख गुर करै सहाई॥

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

शंकाएँ तथा समाधान

इस प्रकरण में मांसाहारी सिक्खों की शंकाओं का समाधान पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है। शंकाए निम्नलिखित हैः—

१ गुरु नानक देव जी ने कुरुक्षेत्र में मांस पकवाया तथा मांस मांस कर मूरख झगड़े" मल्हार की वार में उच्चारण किए गये श्लोको द्वारा मांस खाने का प्रचार किया।

२ गुरु अंगद देव जी के समय लंगर में मांस पकाया जाता था।

३ गुरुवाणी में आता है—"सिंघ रुचै सद भोजन मांस।"

४ भाई गुरदास जी ने लिखा है—मांस पवित्र गृहस्थनों।"

५ अमृत छकाने के समय दशम् गुरु गोबिन्द सिंह जी ने वकरे झटकाए थे।

६ अमृत छकाते समय चार घातक मर्यादाओं में से एक यह बताई कि—"कुठा नहीं खाना" जिसका अर्थ यह किया जाता है कि झटका खा लेना है।

७ मांस का नाम महाप्रसाद सिद्ध करता है कि मांस उत्तम प्रसाद है।

८ महाप्रसाद के खाने से शूरवीरता तथा युद्ध में जुझने की शक्ति का, विनाशकारी प्रवृति का प्रादुर्भाव होता है।

९ श्री गुरु हरिगोबिन्द जी तथा श्री गुरु गोविन्द सिंह जी के शिकार खेलने से यह सिद्ध होता है कि वह मांस खाना पाप नहीं समझते थे।

१० दशम् गुरु जी ने माछीवाड़े के जंगलों में मांस खाया।

११ वन्दा वैरागी के आश्रम में बकरों को झटकाया गया।

१२ यदि मांस खाने से जीव हत्या होती है तो अन्न जल का भी त्याग करना पड़ेगा क्योंकि गुरु नानक जी ने लिखा है कि—जेते दाणे अंन के जीआं बाझ न कोइ॥ पहिला पाणी जीउ है जित हरिआ सव कोइ॥"

(अ) समाधान कुरुक्षेत्र कथा

१. कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण के समय श्री गुरु नानक देव जी का मांस पंकवाने का प्रसंग मांसाहरियों की ओट बना हुआ है परन्तु इस प्रकरण द्वारा गुरु नानक देव जी द्वारा मांस पकाने या मांस खाने का प्रचार करना कहीं भी

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

सिद्ध नहीं होता है। इस प्रकरण को सिक्ख इतिहासकारो ने जैसे लिखा है पहले हम उसे यहा लिखते है।

जन्मसाखी, भाई बाले वाली, सबसे बड़ी छापा टाईप, पृष्ठ ३१९ से ३२७ तक, पर लिखा है कि पटने शहर का राजकुमार शत्रुओं का भगाया हुआ उस समय कुरुक्षेत्र में आया। वह रास्ते में शिकार खेल कर एक मृग मार लाया। उसने वह मृग गुरु जी को भेंट किया। इसमें आगे लिखा है कि गुरु जी की आज्ञानुसार भाई बाले ने हांडी में वह पकाने के लिए रख दिया। सन्यासियों के पूछने पर गुरु जी ने उत्तर दिया कि मांस पकाने के लिए रखा है। तो सन्यासियों ने कहा, "भाई! उधर सूर्य ग्रहण लगा हुआ है इधर तुम मांस पका कर खाते हो। तो श्री गुरु नानक देव जी ने कहा, "ज्ञान चर्चा करो।" तो एक सन्यासी ने और लोगों को पीछे हटाया और कहा, "संत जी! ज्ञान की चर्चा करो जी। तो गुरु जी ने एक श्लोक का उच्चारण किया:–

पहिला मासहुं निंमिआ.... (श्लोक मल्हार वार)

श्लोक सुन कर सब को ज्ञान हो गया है। ग्रहण समाप्त होने पर उसी देगची में से उसी राजकुमार के हाथों से सब को खीर खिलाई गई, लिखा हुआ है।

२. गुरु विलास पातशाही ६ अध्याय ९ छंद १६१ में भाई जेठा जी के पूछने पर श्री गुरु हरगोबिन्द जी ने कुरुक्षेत्र का प्रसंग बताते हुए कहा है कि "मच्छी मास लिआवे जाए॥ बाला आरीआ मान सिधाए।"गुरु जी की आज्ञानुसार बाला जी मांस पकाने के लिए चढ़ा देते है। सन्यासियों सहित नानू पंडित पता लगने पर गुरु जी के साथ ऊचा-नीचा बोलते हैं तब नानू पंडित का गर्व खत्म करने के लिये यह श्लोक उचारण करते हैं–ताके मान निवारन हेता। भाखे बच का गुरु कृपा निकेता॥१७१॥ तत्पश्चात् लिखा है कि उन सब का इस से मान अभिमान समाप्त हो गया। उन्होंने गुरुजी के चरण स्पर्श किए। गुरु जी ने भाई बाले से कहा कि यह देगची तोड दो। उसने देगची जमीन पर फैंकी तो टूटी देगची में से कुछ भी नहीं निकला। सभी आश्चर्य चकित से देखते रह गये। "बाले कुंनी भूम गिराई॥ कछ न मास दिख बिसमै पाई॥१८३॥

३. नानक प्रकाश उत्तरार्ध खंड अध्याय ७ में लिखा है कि जब गुरुजी ने कुरुक्षेत्र में चारों वर्णो एवम् चारों आश्रमों के लोगों को एकत्रित हुए देखा तो 'सिरी नानक ठानी मन ऐसे॥ इनसो चरचा करीए कैसे॥ पंडित वडे रिदै जिन गरबा ॥ मानी संनिआसी जे सरबा॥" आगे लिखा कि कि एक राजकुमार ने शिकार करके मरा हुआ मृग भेंट किया जिसको गुरु जी की आज्ञा अनुसार उसी राजकुमार ने पकाने के लिए रख दिया। तब जैसे पंडितों

ने प्रश्न किया कि सूर्य ग्रहण के समय मांस पकने के लिए क्यों रखा है। गुरु जी ने मल्हार की वार के श्लोक उच्चारण किए जिनको सुनकर सब का भ्रम मिट गया। तत्पश्चयात् उन्होंने नम्रता से विनती की कि सूर्यग्रहण के समय मांस खाना पौराणिक ग्रन्थों में कहीं भी नहीं लिखा है। तो गुरु जी ने प्रत्युत्तर में कहा कि हमने तो बहुत सारी गायों का दूध मंगवा कर खीर बनवाई है।

जो जग बडे अचारज होवहिं॥ सो पूरबली रीत न खोवहिं ॥७२॥ पूरब दिवस महि मास अहारा खान पुरान न किसे उचारा॥ सुन कर बोले गुणी गहीरा॥ हम तो धरिओ देग महि खीरा॥ बहुती धेन चुआई मंगाई॥ रधिहि पाइस को इह थाई॥ इसके बाद सब को पंक्तियों में बिठाकर राजकुमार द्वारा खीर बंटवाई गई।

तवारीख (इतिहास) गुरु खालसा भाग नम्बर १ पृष्ठ १४४ से १४८ पर उपरालिखित समस्त कथा उसी प्रकार की लिखी हुई है। केवल राजकुमार लिखा हुआ है और नानक प्रकाश में एक राजकुमार लिखा हुआ परन्तु ज्ञानी ज्ञान सिंह जी हांसी के राजा अमृतराय का बेटा जगत राय मृग मार कर लाया लिखते है।

५. श्री गुरु नानक प्रबोध ज्ञानी दित्त सिंह कृत में पृष्ठ ११० पर लिखा है कि जब देखा इस तीरथ माहीं। सरब ओर ते मानस आहीं। एक दूसरे पाछे जाहीं। सूरज ग्रहणि पुरब दिन माना। नहीं भरम ताका कुछ जाना।..... तिसी काल गुर जू यह कीना। बक्करा मार मास तिस लीना। चाहड़ देगची आग जलाई। बैठे आप पकावत आई। जब लोगन यह हाल निहारो। हाहा पाप कहि ऊच पुकारो। चारो ओर घेर कर ठाढे। महा अगन रिम मन महि बाढे। तिन महि पांडा एक पुराना। आचो महा भरा अभिमाना। पाहि समय पूरबी के माहीं । सूरज ग्रहण भयो है जांही। मांस महा नीचन को खाना। तुमने चहा सु याहि पकाना। जब पांडे इस भात पुकारा। तब गुर नानक शब्द उचारा।" पहला मासहुं निंमिआ॥

विचार—विमर्शः उपरालिखित ऐतिहासिक दस्तावेजों से ज्ञात होता है कि मांस किसने पकाया और कौन शिकार करके लाया तथा क्या बांटा गया. विषयों पर सभी इतिहासकार विभिन्न मत रखते है। एक कहता है पटने का राजकुमार मृग लाया तथा भाई बाला जी ने हांडी में पकने के लिए रखा। दूसरा कहता है मछली मंगवा कर भाई बाले से पकने के लिए रखवाई। भाई संतोख सिंह जी का कथन है कि कोई एक राजकुमार मृग मार कर लाया परन्तु ज्ञानी ज्ञान सिंह जी कहते हैं कि नहीं आप भूल रहे हैं वह तो हाँसी के राजा अमृत राम का पुत्र जगत राय था। भाई दित्त सिंह जी

किसी भी राजे का नाम तक नहीं लेते। न ही बाला से मांस पकवाते हैं। उनका कथन है कि गुरु जी ने अपने कर-कमलों द्वारा बकरा मार का स्वयं ही हांडी में चढ़ा दिया।

जन्म साखी बाले वाली में लिखा है कि जब गुरु जी से प्रश्न किया गया कि हांडी में पकने के लिए क्या रखा है तो गुरुजी ने उत्तर में कहा "मांस पकाने के लिए रखा है।" नानक प्रकाश के कर्ता का विचार इससे भिन्न है। वह कहते है, "नहीं भाई हमने तों खीर बनाने के लिए गायों का दूध रखा है। "जन्म साखी तथा नानक प्रकाश में तो लिखा है कि बाद में खीर बनी तथा बांटी गई। गुरु बिलास में हांडी फोड़ देने पर उसमें से कुछ भी नहीं निकला, बताते हैं। जहाँ तक मांस पकवाने या पकने का प्रश्न है एक कथन मृग का मांस पकने का है, दूसरे का मछली मंगवा कर बनवाने का है, तीसरे का कथन है कि गुरु जी ने बकरा मार कर हाड़ी में मांस पकना रख दिया। क्या मांसाहारी सज्जन यह बताने का कष्ट करेंगें कि वास्तव में किस जानवर का मांस पकाया गया था। मृग का, मछली का या बकरे का ? इन विरोधामास विचारों से तो प्रतीत होता है कि इसमें लेशमात्र भी सच्चाई का अंश नहीं है। यदि कुछ समय के लिए मान भी लिया जाय कि मांस किसी न किसी रूप में पकाया गया। तब भी कवि संतोख सिंह एवम् ज्ञानी दित्त सिंह जी द्वारा लिखित प्रमाणों से तो यही ज्ञात होता है कि वह अज्ञानी लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने मात्र का एक माध्न मात्र ही था। किसी भी इतिहासकार ने अन्त में मांस का खिलाना या गुरु जी द्वारा खाना कहीं नहीं लिखा है। कवि संतोख सिंह जी ने सबको पंक्ति जिसे कि पंगत कहा जाता है में खीर खिलाई, लिखा है। भाई बाला जी के अनुसार भी खीर ही बांटी गई । कुछ विद्वानों का मत है कि नानू आदि पंडितों के प्रति उच्चारण किए गये, तीन शब्द प्रौढ़ावादी हैं । जिस पुरुष ने आम तौर पर किसी व्यस्न का खंडन किया हो परन्तु एक बार उसे प्रसंगवश या किसी ओर कारण से सहारा बनाया हो उसको प्रौढ़ीवाद कहते हैं। गुरु नानक देव जी ने भी अनेकों ही स्थानों पर अपनी वाणी द्वारा मांस खाने तथा हिंसा का बार बार खंडन किया है। मांसहारियों के घर से उन्होंने खाना तक खाना स्वीकार नहीं किया। इस लिए इन श्लोको का भावार्थ—प्रोढ़ीवाद के अनुसार वह ही समझा जायेगा जो इससे सम्बन्धित और वाक्यों का सहज भाव से अर्थ समझा जाता है।

यदि कोई मांसाहारी सज्जन अभी भी इस बात का हठ करता है कि इन शब्दों में मांस खाना उचित बताया है तो उसे इस बात की ओर ध्यान अवश्य देना चाहिये कि इन श्लोको में किस, मांस का किस ढंग से खाना उचित बताया है। यहाँ पर गुरु जी ने माता-पिता, बहिन-भाई, स्त्री-पुरूष सब का मांस-रूप में ही वर्णन किया है । मुँह, जीभ, हड्डी, चमडा और थन

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

सभी सामग्री मांस ही है जिनको प्रकृतिक नियम अनुसार सभी कही न कहीं प्रयोग कर रहे हैं। मांसाहारी लोगो के तरीके झटके या हलाल करके तो इस मांस का प्रयोग असभ्य कहे जाने लोग भी कभी नहीं करते। मातृ-स्तन से दूध पीकर मानव आज तक पलता आया है। आगे भी उसका पालन-पोषण होता रहेगा। परन्तु मांसाहारी सिक्खों के अनुसार माताओं के स्तन को उन्हीं के तरीके से काट कर मांस/महाप्रसाद पका कर बच्चों को खिलाने का सोचा जाये तो मात् शक्ति तथा बाल शक्ति का हश्र बुरा ही होगा। इसी प्रकार पति पत्नी गृहस्थ धर्म की मर्यादा अनुसार संतान पैदा करने के लिए जीवन जीते है परन्तु इसके विपरीत यदि वह एक दूसरे को मार कर महाप्रशाद बना कर खाने के लिए सोचे तो इससे क्या होगा? मनुष्य जाति के लुप्त होने में कितना समय लगेगा। इसीलिए गुरु नानक देव जी कहते, "हे मूर्ख! मांस मांस कह कर झगड़ा करता है परन्तु ज्ञान तथा ध्यान (प्रभु का, धर्म का) द्वारा यह समझने का प्रयत्न क्यों नहीं करता कि मांस और शाक सब्जी में क्या अन्तर है। मांस कौन सा है तथा शाक कौनसा ? किसके प्रयोग करने से, किसको पाप है किसके खाने से पुण्य है। यह प्रश्न बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि गुरुजी, द्वारा माँ, बाप, पत्नी, पुत्र, पुत्री, राजा, प्रजा सबको मांस रूप ही तो बताया जा रहा है। चाहे सबका मांस एक है ? सबकी बनावट एक जैसी है। परन्तु बर्ताव सबके साथ एक सा नहीं है अलग अलग है। एक स्त्री को पति पत्नी की दृष्टि भाव से, पुत्र मातृ भाव से आदर करता है । भाई बहिन की दृष्टि से प्यार करता है, पिता पुत्री की नज़र से प्यार करता है। यदि केवल मांसाहारी की दृष्टि से देखा जाय तो मांस तो एक ही है परन्तु व्यवहार में अन्तर क्यों ? "मास मास कह मूर्ख झगड़े गिआन धिआन नही जाणा। कउण मास कउण साग कहावै किस महि पाप समाणै" की समस्या यहाँ भी सुलझती नहीं दिखाई देती जिसको मांसाहारी पुरूष आज तक नहीं सुलझा पाया। गुरुजी ने यहा साग आहार तथा मांस आहार को ध्यान में रखते हुए पूछा है कि माता, पुत्र, बहिन, लड़की तो सभी मांस के ही हैं परन्तु मास कौन सा है और साग शाक कौन सा? किसके किस प्रकार खाने, प्रयोग करने से पाप होता है । इसलिए अपनी पत्नी के साथ पत्नी वाला व्यवहार करना उत्तम है परन्तु, लड़की को, बहिन को तथा माता को पत्नी की दृष्टि से मानना, समझना अनुचित मर्यादा. प्रतिकूल व्यवहार है, यह पाप है। इस विचार से इन श्लोको में जगत प्रसिद्ध मांस का खाना उत्तम भाव नहीं बल्कि सत्य न होकर असत्य है। मांस रूपी इस संसार में अपने अपने अधिकार क्षेत्र में रह कर ही व्यवहार करना उत्तम प्रयोजन है। इसलिए गुरूवाणी तथा एतिहासिक तथ्यों के प्रकाश में श्री गुरु नानक देव जी के मांस से सम्बन्धित विचार के बारे में ज़रा भी संदेह नहीं रह जाता । जब आप स्वयं मांसाहारियों के घर से भोजन तक ग्रहण नहीं करते थे, देवलूत जैसे

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

राक्षसों को मांसाहार छुडवाए बिना उपदेश नहीं करते थे, मक्के मदीने में भी जहाँ चारों ओर मांसाहारियों का जमघटा था, अपना यही मत प्रकट करते थे कि मांस खाना पाप है तो कुरुक्षेत्र में आप ब्राह्मणों को यह उपदेश कैसे दे सकते हैं कि मांस खाना उचित है। इसलिए मल्हार के श्लोको का तात्पर्य केवल नानू जैसे पंडितों के पांडित्य का अभिमान चूर चूर करना था तथा उन सभी लोगें को सही पथ प्रदर्शित करना था।

(आ) श्री गुरु अंगद देव जी एवम् मांस—

मांसाहारी लोग अपने मांस खाने के पक्ष को उचित ठहराने के लिए प्रायः यह कहते हैं कि गुरु अंगद देव जी के समय लंगर में मांस पका करता था। परन्तु पाठको ने पिछले अध्याय में पढ़ा है कि श्री गुरु अंगद देव जी ने शीहां उप्पल को मांस खाना पाप कहा तथा अपने स्वार्थहित मांस खाने के लिए जीव हत्या करने का परिणाम नर्क की प्राप्ति होता है, बताया। इसलिए उनका कथन है:—

"अब तो सुगम जानीअहि करबो॥
अंत महा दुख नरकन परबो॥
देहि सासना जम के दूत॥
तहा न पहुँचे बंधप पूत॥ (सूरज प्रकाश रास१असू २६)

कहने का भाव यह है कि हे शीहां। अब तो अपने पुत्र के अनुष्ठान पर प्रीति भोज के लिए तुम्हें बकरे मारने बड़े असान लग रहे हैं। इसका फल तो मृत्योपरान्त नर्क-प्राति ही होगा जहा यमदूत असहनीय दुख देंगे तथा कोई भी भाई बन्धु वहाँ पहुँच कर तुम्हारी मदद नहीं कर सकेगा। अब विचाराधीन विषय तो यह है कि जब श्री गुरु अंगद देव जी ने अपनी पवित्र जिह्वा से शीहें उप्पल को अहिंसा का उपदेश देकर बकरों को छोड़ देने के लिए मजबूर किया था तो वह अपने समय बनते लंगर में मांस पकवा कर लोगों को कैसे खिला सकते हैं। जिस प्रंसग के आधार पर लंगर में मांस पकने की बात की गई है, कल्पना की गई है, वह इस कथा से जिसमें शीहे उप्पल को उपदेश दिया गया है उससे ११ अध्याय पहले का वर्णन हैं जो कि श्री गुरु अमरदास जी के गुरु धारण करने के विषय के साथ सम्बन्ध रखती है। प्रसंग इस प्रकार है कि जब श्री गुरु अमरदास जी एक जिज्ञासु बन कर गुरु अंगद देव जी के चरणों में उपस्थित हुए तो लंगर छकने के समय उन्होंने देखा कि चावल बांटने के साथ मांस भी बटने लगा है। उनके मन मे गिलानी पैदा हो गई क्योंकि वह तो पूर्णतया वैष्णव थे। अन्तर्यामी गुरुजी ने कहा कि पंगत में जो नया पुरुष आया है उसको मांस नहीं देना। यह सुन कर गुरु अमरदास जी के मन्न की गिलानी दूर हो गई तथा श्रद्धा भाव मन में हिलोरे लेने लगा। इस विषय पर निम्नलिखित बातें विचार करने

योग्य है:—

१ यह घटना विशेष थी या सदा के लिए मांस बनता था ।

२ यदि विशेष थी तो उसको एक नियम माना जा सकता है कि नहीं?

३ इस समय भी गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु अमर दास जी के मन की शंका को निवृत करने के लिए मांसाहार करने के पक्ष में कोई उपदेश दिया या नहीं।

विचारः—यह घटना विशेष थी जिसका प्रमाण यह है कि किसी भी इतिहास कार ने लंगर में मांस पकने के बारें में नहीं लिखा है।

२ विशेष या किसी के नियमित घटना को कभी नियम नहीं माना जा सकता है न ही कभी माना गया है। गुरु इतिहास में अनेको ऐसी घटनाएँ प्रसिद्ध हैं। जिनको नियम के रूप में कभी ग्रहण नहीं किया गया। जिस प्रकार गुरु नानक देव जी ने हरिद्वार में कुम्भ के मेले पर सूर्य को अर्घ्य न चढ़ा कर खेतों को पानी देना आरम्भ कर दिया था। मक्का जा के मुसलमानो की संसार-इवादत कावा शरीफ की ओर अपने चरण करके लेट गये। धानक रूप धारण किया, सिक्खों को मुर्दा खाने की आज्ञा दी, आदि। अव यदि कोई सिक्ख यह कहे कि चूंकि गुरु जी ने गंगा तट पर उल्टी ओर पानी देकर खेतों को सींचना शुरु कर दिया था इसलिए प्रत्येक सिक्ख को यह चाहिये कि जब भी गंगा स्नान के लिए जाये तो गुरु जी की भांति उल्टी ओर पानी का अर्घ्य चढ़ाना आरम्भ कर दे। काबा शरीफ की ओर पाँव करके सो जाए क्योंकि गुरु जी ने ऐसा किया था। उनका अनुकरण करते हुए हर मस्जिद की ओर पैर करके लेट जाए क्योंकि गुरू जी ने ऐसा किया था। यह वात करने से पहले उसे सोचना चाहिये कि गुरु नानक देव जी ने ऐसा लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करके उनको कुछ समझाने के लिए किया था। यदि कोई जन साधारण बुद्धि वाला मनुष्य ऐसा करेगा तो वह हास्य का पात्र बनेगा या किसी भी बुद्धिमान को ऐसे नियमों वाले मनुष्य की बुद्धि पर रोना ही पड़ेगा।

३ जिस समय गुरु अमरदास जी के लिए लंगर वाटने वालों को निर्देश दिया कि उनको मांस नहीं देना। उनके वैष्णव धर्म को तोड़ने के लिए तथा मांस खाने के पक्ष में गुरु अंगद देव जी ने कोई उपदेश नहीं दिया। यदि गुरु अंगद देव जी मांस खाने के आदि होते तो वह सिक्ख धर्म में मांस खाने का प्रचार अवश्य करते ।यह विल्कुल उचित अवसर था कि वह गुरु अमरदास जी को मांस खाने के लिए कायल कर लेते। मांस ज़रुर खिलाते परन्तु ऐसा न करना तथा इस मामले को यहीं ठप करना, इस विषय पर कोई भी किसी प्रकार की वात न करना, यह सिद्ध करता है कि यह विशेष धटना गुरु अमरदास जी के वैष्णव गर्व को निवृत करने के लिये रची गई जो एक वज़नदार

दलील के रूप में प्रस्तुत हुई। इसका कारण यह है कि न तो कभी इस धटना से पहले और न वाद में लंगर में मांस पकवाने का कोई प्रमाण मिलता है कि गुरु जी ने या संगत ने मांस खाया था, सिक्ख इतिहास में इस प्रकार का कोई भी उल्लेख नहीं मिलता।

(इ) लंगर के पदार्थ

गुरुवाणी तथ्यों तथा इतिहास में लंगर की जिस सामग्री का प्रमाण मिलता है वह पूर्णतया सात्विक है। इसमें मांस खाने का खंडन तो मिलता है मंडन नहीं। इस से मम्बन्धित कुछ प्रमाण नीचे दिये जाते है:—

(१) "लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अंम्रितु खीर धिआली"
(ग्रंथ साहिब पृष्ठ ९६७)

(२) "नित रसोई तेरीऐ धिउ मैदा खाणु॥ (पृष्ठ ९६८)

(३) "दुइ सेर मांगउ चूना॥ पाउ घीउ संगि लूना॥
अध सेरू मांगउ दाले॥ मो कउ दोनउ वखत जिवाले॥"
(सोरठ कबीर जी पृष्ठ ६५६)

(४) दालि सीधा भागउ घीउ॥ हमरा खुसी करै नित जीउ॥
पन्हीआ छादनु नीका,
अनाजु मगउ सत सी॥ गऊ भैंस मगउ लावेरी
(धन्ना भक्त पृष्ठ ६९५)

(५) कबीर खूबु खाना खीचरी जा महि अंम्रित लौन॥
हेरा रोटी कारने गला कटावे कउन॥" (पृष्ठ १३७४)

(६) प्रिथम सतिगुरु पंगत लाइ॥
लवन बिहू न ओगरा खाइ॥
संगत को अहार सब भांत॥

सवाद सरस हुहि पहितरू भांत॥
अपर सलवण अनिक प्रकारा॥
गोधूम चून पकाइ अहारा॥
सुंदर मधुर बनावहि कितो॥
आइ जाइ नर खाइस जितो॥ (सूरज प्रकाश रास १ अंसू ५६)

उपरोक्त पाँच दस्तावेज, गुरुवाणी में से है तथा छट्टा दस्तावेज़ इतिहास में से जिनसे यह सिद्ध होता है कि गुरु जी के लंगर में खीर, गेहूँ ओगरा तथा ओर अनाज आदि सात्विक पदार्थ तैयांर किये जाते थे। ओगरा से भाव गेहूँ का दलिया है जो घी में भून कर मीठा, फीका तथा नमकीन तीनों ही स्वादों का बनाया जाता है। यह शक्ति प्रदान करने वाला

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary   NamdhariElibrary@gmail.com

तथा शीघ्र पचने वाला भोजन है। मालवे के इलाके में इसका बहुत प्रचलन है।

दस्तावेज़ ३ तथा ४ में आटा, दाल, घी, अनाज, दूध की छाछ तथा मक्खन के लिए दुधारु गाय तथा भैंस की मांग की गई है। यदि गुरु सिक्खों तथा भक्तों का मांस खाना अनिवार्य होता तो गाय भैंस के साथ साथ जहा यह कहा है, "गऊ-भैंस मागे लावेरी" वहाँ यह भी विनती की जाती कि महाराजा महाप्रशाद खाने के लिए मुर्गे, मुर्गियाँ तथा बकरों की कृपा भी कीजिए क्योंकि मांस खाने के बिना हम जीवित नहीं रह सकते।

दस्तावेज़ ५ में अमृत नमक वाले मिले जुले पदार्थ जो सात्विक है, की प्रशंसा करते हुए मांस वाली रोटी की निंदा की गई है तथा कहा गया है कि शिकार भाव मांस की रोटी के बदले में मृत्यु के पश्चात् परलोक में अपना गला कौन कटाये।

इन दस्तावेज़ों से स्पष्ट होता है कि गुरु के लंगर में मांस बनने की सम्भावना गुरुवाणी तथा इतिहास के बिल्कुल विपरीत है। इसलिए गुरु अंगद देव जी के समय लंगर में मांस बनने वाली बात मूलतः गल्त, तथ्यों से निर्मूल है।

(ई) सिंघ रूचै सद भोजन मास

इस पंक्ति का तात्पर्य मांस खाने से नहीं है। इस सम्पूर्ण शब्द का पाठ करने से पाठको को ज्ञात होगा कि इस पंक्ति द्वारा मांसाहारी सिक्खो की इच्छा कतई पूरी नहीं हो सकती। इसलिए पाठकों की नज़र सारा शब्द भेंट करके इस पर विचार किया जाता है। १४३० पृष्ठों वाले श्री आदि ग्रंथ साहिब के पृष्ठ ११८० पर अंकित पंक्तियों इस प्रकार :—

बंसत महला ॥५॥
"हटवाणी धन माल हाटु कीतु ॥
जुआरी जूए माहि चीतु॥
अमली जीवै अमलु खाइ॥
तिउ हरि जनु जीवै हरि धिआइ॥१॥
अपनै रंगि सभु को रचै॥
जितु प्रभि लाइआ तितु तितु लगे॥१॥ रहाउ ॥
मेघ समै मोर निरतिकार
चंद देखि बिगसहि कउलार॥
माता बारिक देखि अनंद ॥
तिउ हरि जन जीवहि जपि गोबिंद॥२॥
सिंघ रूचै सद भोजनु मास॥

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

रणु देखि सूरै चित उलास॥
किरपन कउ अति धन पिआरू॥
हरि जन कउ हरि हरि आधारू॥२॥
सरब रंग इक रंग माहि॥
सरव सुखा सुख हरि के नाइ॥
तिसहि परापति इहु निधानु॥
नानक गुरु जिसु करे दानु ॥

इस शब्द का भावार्थ बिल्कुल स्पष्ट है। गुरु जी, भक्तों को, ध्यान प्रभु नाम मैं लीन करने के लिए निरन्तर कहते है। दृष्टांत, उदाहरण देकर कहते हैं जिस प्रकार दुकानदार का मन धन माल में ही लगा रहता है, जुआरिए का जुए में, नशा करने वाले का नशे में, उसे यही ध्यान रहता है कि वह नशा करके ही जीवित रहेगा, उसी प्रकार हरिजन हरि का नाम सुमरिन करके जीते हैं। सभी अपने अपने रंगों मे रमें हुए हैं तथा भगवान ने जहाँ कहीं किसी को लगाया है वहीं पर वह लगा हुआ है। वादल होने पर जैसे मोर नाचता है, चाँद को देखकर चकवी, चकौर प्रफुल्लित होती है, अपने बालक को देख कर माता आनन्दित होती है उसी प्रकार हरीजन भगवान का नाम सुमरिन करके जीवित रहते हैं। जिस प्रकार शेर की रूचि सदा मांस खाने में रहती है, जिस प्रकार शूरवीर का मन रणभूमि को देखकर उल्लसित होता है; कंजूस का प्यार जिस प्रकार धन से होता है, उसी प्रकार भक्त जन का सहारा हरी है उसका नाम लेना है। इस समस्त शब्द-पाठ के अध्ययन से ज्ञात होता है कि नाम लेवा संतों, भक्तों की नाम रूचि को स्पष्ट करने के लिए जो उदाहरण दिये हैं उनमें से एक शेर का भी उदाहरण है। जिस प्रकार शेर की रूचि सदा यही रहती है कि किसी जानवर या मनुष्य को मार कर मांस खाये उसी प्रकार भक्तों की रूचि सदा ही नाम जपने की होती है। इसलिए यह केवल प्रबल इच्छा का ही उदाहरण है। इसका अर्थ कदाचित यह नहीं हो सकता कि सिंह (गुरु का खालसा) को मांस खाना चाहिये । सिंह (पशु की खुराक मांस ही है। इसलिए उसे सदा मांस ही भाता है। वह अन्न नहीं खाता, दूध नहीं पीता, घी नहीं खाता, केवल मांस ही खाता है। गाय, बकरी भेड़, हाथी, घोड़ा, भैंस या मनुष्य आदि कोई भी शिकार उसे मिल जाये तो उसको चीर फाड़ कर कच्चा ही चवा जाता है। इसलिए जो पुरुष "सिंघ रूचै सद भोजन मास' से मांस खाना स्वीकार करते है उनको चाहिये कि वह या तो सदा ही मांस खाया करें या शेर की भांति जो भी मिले, सामने आए चीर-फाड़ कर कच्चा ही चबा जाये। अन्न, दूध, घी का पूर्णतया बहिष्कार कर दे।

(उ) मांस पवित्र ग्रिसत नों

भाई गुरदास जी ने शीर्षक 'वारा' की वार २३ की पउड़ी १३ में बकरी की नम्रता के कारण उसकी प्रशंसा करते हुए लिखा है कि किसी भी सिक्ख को उससे प्रेरणा लेनी चाहिये। पउड़ी इस प्रकार है:—

"हसति अखाज गुमान कर, सीहं सतागा कोइ न खाई॥
होइ निमाणी बक्करी, दीन दुनी वडिआई पाई॥
मरणै परणै मंनीऐ जरग भोग प्रवाण कराई॥
मास पवित्र गृस्त नों, आदहुं तान विचार वजाई॥
चमड़े दीआं कर जुतीआ, साधू चरण शरण लिव लाई॥
तूर पखावज मड़ीदै, कीरतन साध संगत सुखदाई॥
साध संगति सतिगुरु सरणाई॥ १३॥

मांसाहारी सज्जन इस पउड़ी में से केवल इस आधी पंक्ति का ही अर्थ बता कर सिद्ध करना चाहते हैं कि महान सिक्ख साहित्य के लेखक ने भी गृहस्थी मनुष्य के लिए मांस खाना पवित्र माना है। ऐसा समझना भाई साहिब के विचारों के बिल्कुल विपरीत है। इस पउड़ी में तो आपने हाथी तथा शेर के अभिमानी स्वभाव की निंदा करते हुए बकरी की नम्रता एवम् शरीर द्वारा किए गये उपकारों की प्रशंसा की है। दोनो उदाहरणों को अच्छी तरह समझ लेने से विचार बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है। हाथी तथा शेर दरिंदे जानवर है जो गाय, बकरियों तथा भेड़ों को मार कर मांस से पेट भरते हैं परन्तु बकरियों में नम्रता का दैवी गुण है तथा अपने शरीर को जीवित तथा मरकर दूसरो की सेवा का माध्यम बना कर प्रसंशा की पात्र बनती हैं। संसारी लोग विवाह-शादियों तथा मृत्यु संस्कारों में उसके मांस को पवित्र मानकर प्रयोग किया करते हैं। यज्ञ में उसके दूध की खीर बनाई जाती है। उसकी आंतड़ियों की तार बनाकर बजाई जाती है। चमड़े के जूते बनवा कर साधू जन पहनते हैं। तूर, पखावज आदि संगीत यन्त्र को इनसे मढ़ा जाता है जिससे साधु लोग कीर्तन करते हैं। बकरी का शरीर दुनियादारों तथा साधु दोनो के काम आता है। इस लिए उसे प्रशंसा मिलती है। भाई गुरदास जी इन दोनो उदाहरणों द्वारा मनुष्य को यह प्रेरेणा देना चाहते है कि हाथी तथा शेर की भांति कमज़ोरो का मांस खाने वाला दरिंदा न बने बल्कि परोपकार तथा धर्म के लिए अपने शरीर तक की शहादत देने की शिक्षा ग्रहण करे। वास्तव में यही विचार भाई जीने यहाँ पर दिया है। इस पउड़ी द्वारा उन्होंने मांस खाने को उत्तम नही बताया बल्कि घोर निंदा की है। यदि भाई साहिब मांस खाने की पुष्टि करते तो वह अपनी रचनाओं में यत्र तत्र इस का समर्थन करते है। परन्तु आपकी समस्त रचनाओं का अध्ययन करने से यही विचार मिलेगा कि उन्होंने मास खाने का खंडन किया है मंडन कहीं नही किया है।

इस विचार की पुष्टि के लिए उनकी रचनाओं में से कुछ अंश प्रस्तुत हैं:—

"शीहु पजूती बकरी, मरदी होई खिड खिड हस्सी।
बिनउं करेंदी बकरी, पुत्र असाडे कीचन खस्सी।
अक्क धतुरा खांदिआं, कुहि कुहि खल्ल उखल्ल विणस्सी।
मास खान गलु बढ के, हाल तिनाड़ा कौण होवस्सी।
गरब गरीबी देह खेह खाज अखाज अकाज करस्सी।
जग आइआ सभ कोई मरस्सी।" (वार २५ पउड़ी १७)

"कुहै कसाई बक्करी लाइ लूण सीख मास परोआ॥
हस हस बोले कुहींदी, खाधे अक्क हाल इह होआ
मास खाण गल छुरी दे, हाल तिनाड़ा कउण अलोआ।
जी हंदा फेड़िए, खउ दंदा मुख भंन वगोआ।" वार ३७पउड़ी२१

निर्णय

वार ३१ पउड़ी ९ में भाई साहव ने यह स्पष्टतया बता दिया है कि जीव हत्या तथा मांस खाना बहुत ही बुरा है

'जेकर उधरी पूतनां, विहु पिआलण कम्म न चंगा।
गेनिका उधरी आखीऐ, पर घर जाइ न लईऐ पंगा।
वाल्मीक निसतारिया, मारै वाट न होइ निसंगा।
वधिक उधरे आखिअन, फाही पाइ न फंडीऐ टंगा।
जे कासाई उधरिया जीआं घाइ न खाईऐ भंगा।
पार उतारे बोहिथा, सोइना लोह नाही इक रंगा।
इत भरवासै रहण कुंढंगा।"

(ऊ) अमृत संस्कार तथा बकरे

ऐसा प्रचलित है कि गुरु गोविन्द सिंह जी ने जव अमृत छकाने का कार्य आरम्भ किया था उस समय उन्होंने बकरे झटकाए थे, इस कथा को हम प्रमाण के रूप में प्रस्तुत नहीं कर सकते है। इस विषय पर निम्नलिखित तर्क विचाराधीन हैं:—

क्या वास्तव में ही गुरु जी ने बकरे झटकाए थे या अपने शिष्यों को ही कत्ल करके पुर्नजीवित किया था।

यदि बकरों को ही झटकाया था तो क्या वह अपने शिष्यों को परखने के लिए किया था या मांस खाने-खिलानें के उद्देश्य से।

वाद–विवाद

इसमें कोई भी संदेह नहीं है कि इतिहासकारों ने इतिहास में बकरे झटकाने

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

का प्रसंग लिखा है परन्तु गुरु जी का निम्नलिखित कथन बकरे-झटकाने वाले प्रसंग का खंडन करता है।

हमूं मरद बायद शबद सुखनवर॥
न सिकमे दिगर दर दहाने दिगर (जफरनामा हकायत १)

अर्थात् मर्द वहीं होता है जो करनी कथनी से एक हो। उसे मर्द नहीं कहा जा सकता जिसकी करनी तथा कथनी में अन्तर हो। जो कहे कुछ और करे कुछ और ऐसे मनुष्य को गुरुवाणी में कच्चा मर्द कहा गया है।

जिनि मनि होर मुखि होर सि काढे कचिया॥

इसलिए पहली बात यह कि शमियाने के अन्दर बकरों को झटकाना तथा बाहर आकर मनुष्यों को मारना कहा जाना गुरु गोविन्द सिंह जी जैसे मानव को शोभा नहीं देता।

दूसरा यह प्रसंग गुरुवाणी विरुद्ध होने के कारण स्वतः प्रमाण विरुद्ध है इसलिए उसे कोरी कल्पना ही मानना पड़ेगा।

तीसरी बात जब भी कोई माली पोधारोपण करता है तो वह उसी पोधे की कलम करता है। इसलिए गुरु गोविन्द सिंह जी ने भी माली के रूप में सिक्खों के सिर ही कलम किए थे न कि बकरे झटकाए थे। तत्पश्चात् उनको जीवित भी किया था। अमृत छका कर, उन्हें सुरजीत करके अमृत-शक्ति का परिचय दिया था।

इन प्रमाणों तथा पक्तियों के प्रसंग में बकरे झटकाए जाने की बात अनावश्यक सी हो जाती है। परन्तु यदि फर्जी तौर पर मान भी लिया जाये कि गुरु जी ने बकरे ही झटकाए थे तो भी यही सिद्ध होता है कि शिष्यों के सब्र की परीक्षा लेने के लिए उन्होंने ऐसा किया था न कि मांस खाने के लिए। प्रेम नाटक की इस लीला के अन्तर्गत कही भी यह वर्णन नहीं किया गया हैं कि उन झटकाए गये बकरों का मांस बना कर महाप्रशाद के रूप में बांटा गया हो। अपने शिष्यों के साथ प्रीति भोज किया हो।

(ए) कुठें के स्थान पर झटका

मांसाहारी सज्जनों की यह कल्पना भी कि 'कुठा नहीं' खाणा" का भाव है कोह कोह या नोच नोच कर या थोड़ा-थोड़ा काट कर मारा गया जीव तो नहीं खाना परन्तु झटका किया हुआ भाव एक बार से मारा गया जीव या बकरा खा लेना है, बिल्कुल निराधार है। स्वतः प्रमाण वाणी में हिंसा करने को तथा मांस खाने को यत्र तत्र नकारा गया है। जैसे—

१ रोजा धरै मनावै अलहु सुआदत जीअ संघारै॥
(आसा कबीर पृष्ठ ४८३)

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

२ "हिंसा तउ मन ते नहीं छूटी जीअ दइआ नहीं पाली॥"
(सारंग परमानंद पृष्ठ १२५३)

३ हैरा रोटी कारने गला कटावै कउनु॥' (श्लोक कबीर जी पृष्ठ १३७४)

४ जीअ बधहु सु धरमु करि थापहु अधरमु कहहु कत भाई॥
आपस कउ मुनिवर करि थापहु का कउ कहउ कसाई॥
(मारु कबीर जी) (पृष्ठ ११०३)

५ "जीअ जो मारहि जोर कर कहिते हहि जो हलाल॥
दफ़तर लेखा मागीऐ होइगो कउन हवाल।" (शलोक कबीर जी)

६ "जे सभ महि एक खुदाइ कहित हउ तउ किउ मुरगी मारै॥'
(बसंत कबीर जी)

७ असंख गल वढ हत्या कमाहि।" (जपुजी गुरु नानक साहिब)

८ मजन तेग बर खूनि कस बे दरेग॥" (दशम् पात्शाह)

भाव निर्दयी होकर किसी की गर्दन पर छुरी नहीं चलानी चाहिये। उपरालिखित प्रमाणो से यह सिद्ध होता है कि गुरुवाणी में हिंसा, हत्या जोर-जुल्म को सख्ती से नकारा गया है। जानवर की जान लेने के लिए प्रत्येक ढंग हिंसा, हत्या अत्याचार पर निर्भर करता है। हलाल करने वाला भी निर्दयी तथा बेदरेग है, झटका करने वाला भी निर्मम तथा हिंसक है क्योंकि दोनों ही जानवर के प्राण लेते हैं तथा मांस खाते हैं। यहाँ पर कबीर जी का निम्नलिखित कथन बड़ा प्रसंगिक है:—

"उन झटका उन बिसमिल कीआ, दइआ दोहां ते भागी॥
कहित कबीर सुनहु रे संतहु आग दोहा घर लागी॥"

गुरुवाणी में "कुठा' शब्द 'मारे' के अर्थो में ही प्रयुक्त हुआ है। जैसे:

'भाउ दुइआा कुठा'॥

तवारीख गुरु खालसा भाग १ के पृष्ठ संख्या ६१ से ६४ तक यज्ञोपवीत (जनेऊ) के प्रसंग में लिखा है:—हरदयाल पूरोहित जब बाबा जी (गुरुनानक जी) के ग्यारहवें वर्ष में उन्हें जनऊ धारण करवाने लगे तब बकरा काटा गया। बाबा जी ने श्लोक उच्चारण किया

"तग कपाहहु कतीऐ बाहमण वटै आए
कुहि बकरा रिनं खाइआ सब को आखै पाए..."

बाबा जी ने कहा "परोहित जी! आपने बड़े उत्साह से कपास के धागे का जनेऊ धारण करवाने के लिए बनाया। ब्राह्मणों को आमन्त्रित किया, अपने स्वाद हेतु बकरा मारा। इससे यह स्पष्ट होता है कि गुरु नानक देव जी भी मारे हुए के लिए 'कुहि' शब्द (कुठा) ही प्रयोग करते थे। क्षत्रिय लोग हलाल

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

नहीं झटका ही करते थे। इससे गुरु जीने उन्हें कठोर शब्दों में रोका। इस लिए गुरुवाणी में 'कुठा' शव्द झटके, हलाल अथवा किसी भी तरीके से मारे गये जानवर का पर्याय ही है। इसलिए गुरु गोबिन्द सिंह जी का 'कुठे' के मना करने से भाव मांस न खाने से ही था। इसके लिए जानवरों की हत्या करनी पड़ती है। गुरुनानक वाणी अनुसार यह नीची जाति के लोगों का ही कर्म हैं।

२ यदि कुछ समय के लिए यह मान भी लिया जाये कि 'कुठा' नहीं खाना का भाव यह लिया जाता है-कुठा नहीं खाना पर झटका खा लेना चाहिए तो इस कुरहित की ओर भी ध्यान देना चाहिए कि तुर्क स्त्रिी का गमन कर लेंना चाहिये। परन्तु इस प्रकार की कल्पना को कोई भी बुद्विमान, संत, महात्मा कतई नहीं मानेगा। इस प्रकार यह कल्पना करना भी गलत है कि 'कुठा' की तो मनाही है झटके की स्वीकृति है।

विचार तुर्कनीगमन कर लेना चाहिए से यह कल्पना भी स्वीकार करनी पड़ेगी कि प्रत्येक धर्म की स्त्री से वर्जित सम्बन्ध रख लेने चाहिए। परन्तु इस प्रकार की कल्पना को कोई भी बुद्धिजीवी मानने को तैयार नहीं हो सकता। इसलिए जैसे यह कल्पना अनुचित है उसी प्रकार कुठे के स्थान पर झछकें की आज्ञा की कल्पना करना भी अनुचति है।

३ यदि 'कुठा' तथा 'झटका' दोनो पद एक दूसरे की उपेखिआ के नियम को लेकर सापेक्षक भी माने जाये तो भी 'झटका' द्वारा प्राप्त किया मांस, खाने की आज्ञा नहीं है। यह कुरीतियां घातक (वज्र) कुरीतियों के नाम से जानी जाती हैं। वैसे तो चोरी, वेश्यागमन, ठगी, झूठ, कपट, निंदा, चुगली, मांस खाना तथा शराब पीना आदि सिक्ख धर्म में वज्र कुरीतियाँ ही मानी गई है। परन्तु धातक कुरीतियाँ चार हैं। जिनके पालन से सिक्ख पतित हो जाता है। दूसरे बुरे काम करने से कोई भी सिक्ख अपने क्षेत्र में ही रहेगा परन्तु कुट्ठा, तम्बाकू, केशो का निरादर तथा तुर्क स्त्रिी गमन, चारो कुरीतियो के लिए मुसलमान का आश्रय लेना पड़ता है। उसकी संगत करनी पड़ती हैं। 'कुट्ठा' करके मांस बनाने वाले कसाई मुसलमान, केश काटने वाले नाई मुसलमान तवाकू जिससे पीया जाता है उस हुक्के वाले मुसलमान तथ तुर्क स्त्री तो होती ही है इस्लाम वीज रक्षक। इसलिए इन चारों घातक कुरीतियों को करने से किसी का भी मुसलमान वन जाने का अंदेशा हो सकता है। गुरु गोविन्द सिंह जी दूरदर्शी थे इसलिए उन्होंने इनको त्यागने के लिए बहुत सख्त तथा कठोर ताड़ना करनी उचित समझी इसलिए इन घातक कुरीतियों का भाव यह कभी भी नहीं माना जाना चाहिये कि तबाकू के स्थान पर शराव पी ली जाये। कुठे के स्थान पर झटका खा लिया जाये। तुर्क स्त्रिी के स्थान पर और किसी भी जाति की स्त्री को वेश्या के रूप में समझ कर उसका साथ कर लिया जाये। किसी भी प्रकार से प्राप्त किया हुआ मांस

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

गुरुमत अनुसार खाना अस्वीकृत है।

श्री सति गुरु राम सिंह जी जिनको सभी नामधारी गुरु मानते हैं परन्तु जो उनको गुरु नहीं मानते है वह सिक्ख भी इतना विश्वास तो अवश्य रखते ही है कि—बाबा राम सिंह जी गुरु गोविन्द सिंह के पूर्ण सिक्ख थे। उन्होंने संकटमयी समय गुरु गोविन्द सिंह जी की मर्यादा कायम रखी तथा सिक्ख धर्म का प्रचार किया। इस उपकार के कारण समस्त सिक्ख समाज उनका ऋणी है। गैर नामधारी सिक्खों के इस विचार अनुसार कुठे की मनाही तथा झटके का मांस खाना सही मानना उचित नहीं लगता क्योंकि सति्गुरु राम सिंह जी ने (जो उनके विचारों अनुसार श्री कलगीधर जी की मर्यादा को सबसे अधिक जानने वाले तथा प्रचारक समझे जाते हैं) अमृत छकाने के समय सिक्खों को विशेष आज्ञा दी कि मांस तो बिल्कुल ही नहीं खाना चाहिए। परिणामस्वरूप लाखों सिक्खों ने मांस का त्याग कर दिया। नामधारी खालसा जी इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

(ऐ) महाप्रसाद का संकेत

मांसाहारी सिक्ख मांस को महाप्रसाद के नाम से पुकार कर आदर सम्मान देते हैं। परन्तु सिक्ख साहित्य में 'महाप्रसाद' का प्रयोग कतई नही किया गया है। हा भाई गुरुदास जी ने कड़ाह प्रसाद के लिए महाप्रसाद शब्द का प्रयोग किया है। यही कारण है कि कई गुरुद्वारे के ग्रन्थी कड़ाहप्रसाद की प्रार्थना (अरदास) करते समय कहते हैं कि "सच्चे पातशाही जी! आप द्वारा प्रदान की गई अमूल्य निधियों में से महाप्रसाद की देग हाज़र है।" परन्तु कड़ाह महाप्रसाद से अर्थ का प्रचलन करना कि यह सिक्ख धर्म की मर्यादा के विरुद्ध होने के कारण अनुचित है। दूसरी बात यह शब्द सिक्खों में मांस के लिए प्रयुक्त होना प्रचलित हो चुका है। इस लिए कड़ाह प्रसाद और वह भी गुरु जी को भोग लगवाने के लिए पावन पवित्र कड़ाह प्रसाद है के लिए इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करना सर्वथा अनुचित है, निराधार हैं। मनमत है। तीसरा 'प्रसाद' शब्द तो स्वयं पावन पवित्र है जो सिक्ख संगत में परम्परा से प्रचलित नाम है इसलिए किसी और पद का इस के स्थान पर प्रयोग करना अनावश्यक एवम् अनुचित है।

मांस का महाप्रसाद नामं बाह्य पंथियों की नक्ल है। उनकी तंत्र पुस्तकों में बुरी तथा अतिं धृणात्मक वस्तुओं को उत्तम नामों से पुकारने का प्रयास किया गया है। जिस प्रकार मछली को 'जलतुम्बका; शराब को तीर्थयात्रा एवम् भैरवी चक्र समय शराबी की उल्टी को खा जाने वाले को महासिद्ध का नाम दिया गया है। चक्रवर्ती महापुरुष की उपमा करते हुए लिखा गया है कि जो शराबखाने में बैठा बोतल पर बोतल घटकता चला जाए एवम् पूरी रात वैश्या के घर पर काटे उसे चक्रवर्ती महापुरुष समझना चाहिये "हाला

पीवती दीक्षत से मंदरे सपूते निशाया। गतिका गृहंसू बिराजते सा कौलव चक्रवर्ती"। इस प्रकार और भी अनेक प्रकार के शब्द संकेत है जिनको असभ्य होने के कारण यहाँ पर लिखना कतई उचित नहीं है। इन बुरी वस्तुओं के सुन्दर नाम पुकारने का उद्देश्य केवल इतना ही था कि और दूसरे लोग इनको धृणात्मक समझ कर धृणा न करें। मांसाहारी लोगों की ओर से मांस के लिए 'महाप्रसाद' का लेवल इसी लिए ही चिपकाया गया है बुरी तथा अभाज्य वस्तु समझकर खाने वालों से न खाने वाले धृणा न करें।

भाई गुरुदास जी ने इस संदर्भ में एक वहुत ही सुन्दर पउड़ी छन्द रचा है। वह कहते है:—

महुरा मिठा आखीऐ रुठी नू तुट्ठी।
वुझिआ वडा वखाणीऐ सावारी कुट्ठी।
जलिआ ठगे, गईने आई, तो उठी
अहमक भोला आखीऐ सब गल उपट्ठी।
उजड़ तुटि बेमुखा, तिन आखण मुठी
चौरे संदी भाउ जिउ, लुक रोवै मुठी (बार ३४ पउड़ी १४)

इस प्रकार इस पद में जिस प्रकार ज़हर को मीठा, रूठे को प्रसन्न, बुझे हुए को वड़ा, नोची हुई को संवारी हुई, जले मुर्दे को ठंडा हो गया कहते हैं, खराब हुई आंख को आ गई कहते हैं, विधवा दूसरा घर बसा ले तो उसे 'उठ गई' कहते हैं, अहमक को वड़ा भोला कह कर पुकारते है, उसी प्रकार माँसाहारी मांस की हड्डियों तथा मांस के लोथडों को महाप्रसाद का नाम देते हैं। इस लिए भाई गुरुदास अनुसार मांस को महाप्रसाद कहना उल्टी मति तथा मनमत है।

(ओ) मांस खाने से वीरता संचार ?

मांसाहारी सज्जनों का यह विचार भी केवल कपोल कल्पित ही है कि मांस खाने से हिम्मत आती है तथा देश, जाति, धर्म के लिए युद्ध करते समय बलिदान देने की शक्ति का प्रादुर्भाव होता है। संसार प्रसिद्ध वीर लोगों का इतिहास भी उपरालिखित वात का खंडन ही करता है। सिक्ख इतिहास ही ऐसे अनेक शूरवीरों, वहादुरों तथा शहीदों के सुनहरी कारनामों से भरा पड़ा है जो माँसाहारी नहीं थे, शाकाकारी थे। सतिगुरु जी की कृपा द्वारा ही उन्होंने वीरता के ऐसे जौहर दिखाये जिन पर सिक्ख लोग आज भी गर्व करते है। यहाँ नीचे कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं:—

१ कलगीधर पातशाह गुरुगोविन्द सिंह जी के चारों साहिबजादों का जन्म, पालन-पोषण ऐसी परिस्थितियों में हुआ था जहां मांस तो क्या उन्हें रोटी के भी लाले पड़ जाते थे। उन्होंने तो कभी मांस का सेवन किया ही नहीं था परन्तु उनकी शूरवीरता, हिम्मत तथा युद्ध करने की शक्ति जैसा उदाहरण

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

शूरवीरता के इतिहास में और कहीं भी नहीं मिलता।

२.श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के सेवारत सिक्खों को जिन्होंने आनन्दपुर साहिब के युद्ध में शत्रुओं के दांत खट्टे किए, कई कई महीने भूखे प्यासे रहना पड़ा था। वृक्षों के पत्तों का सेवन करके अपना पेट पालते थे। उनके मांसाहारी होने का प्रमाण कहीं भी नहीं मिलता है। आनन्दपुर से सरसा के मार्ग में, सरसा नदी के किनारे तथा चमकोर की गड़ी में गुरुगोविन्द सिंह जी के नेतृत्व में जिस बहादुरी तथा पोरुषत्व से सिक्ख सेवक बलि वेंदी पर चढ़े वह अतुलनीय तथा प्रशंसनीय है। अनुपम है। चमकौर साहिब में केवल चालीस सिक्खों ने शत्रु की उस दस लाख सेना को नाकों चने चबाये जो दूंबे खा खा कर पली हुई थी, भी मांसाहारी नहीं थी।

३ श्री गुरु गोविन्द सिंह जी ने अपने मामा कृपाल चन्द की शूरवीरता का वर्णन अपनी रचना वचित्र नाटक में अपनी लेखनी द्वारा किया है वह भी मांसाहारी नहीं थे।

४ श्री मान भाई दया सिंह, धर्म सिंह, हिम्मत सिंह, मोहकम सिंह तथा साहिब सिंह जिनकों गुरु गोविन्द सिंह जी ने पाँच प्यारों की पदवी से सुशोभित किया था क्योंकि उन्होंने गुरु जी की एक ही मांग पर अपना सिर उनके चरणों में अर्पित कर दिया था, उनके बारे में मांस खाने का कहीं भी वर्णन नहीं मिलता है। आप पाँचों गुरु जी की आज्ञानुसार धर्म की वलि वेदी पर अर्पित हो गये।

५ मुक्तसर के मैदाने-जंग में गुरु जी के लिए चालीस महापुरूष जो शहीद हुए और जिनको वाद में चालीस मुक्तों की पदवी दी गई, के वारे में भी ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता है कि उन्होंने कभी भी मांस खाया हो।

६ वन्दा वहादुर जिसने गुरु साहिव के चारों साहिवजादों की शहीदी का प्रतिकार लिया, जिसने उन दुष्टों को खोज खोज कर मौत के घाट उतारा, जिसका नाम सुन कर दुंवों का मास खाने वाले वड़े वड़े खान बहादुर तथा शाही फौजों के सेनापति भी थर थर काँपते थे, प्रारम्भिक जीवन से ही शाकाहारी थे। अहिंसक थे। वैष्णव मत के अनुयायी होने के कारण उन्होंने कभी मांस नहीं खाया।

७ भाई महिताव सिंह एवम् सुखा सिंह जैसे बहादुर जिन्होंने हरिमन्दिर साहिब में मस्से रंधड़ का शीश काट कर दरबार साहिब की पवित्रता को कायम रखा था, भी माँसाहारी नहीं थे।

८ श्री हरिमन्दिर साहिब के ग्रंथी श्री मान संत मनी सिंह जी ज्ञानी जिन्होंने सिक्ख धर्म की आन, वान तथा शान को चार चाँद लगा दियें, अपने शरीर के अंग अंग कटवा कर शहीदी जाम पिया, भी मांस नहीं खाते थे।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary   NamdhariElibrary@gmail.com

९ और भी अनेक सिक्ख जो जंगलों में मारे मारे फिरते रहे, कभी काहूवाण के छंभ में गुजारा करते रहे, कभी जंगली फल तथा कभी वृक्षों के पत्तो को खा खा कर गुज़ारा करते रहे। देश पर मर मिटने का जज़बा रखते थे, मांसाहारी नहीं थे।

१० श्री सतिगुरु राम सिंह जी के प्रिय सिक्ख भाई हीरा सिंह तथा उनके साथ शहीद होने वाले उनके साथी, जिन्होंने मलेर कोटले में रियास्त की फौजों का डट कर मुकावला किया, तोपों के सम्मुख छाती तान कर हँसते-हँसते शहीदियाँ प्राप्त की, फासियों के रस्सों को चूमा, मांसाहारी घरों का पानी तक भी नहीं पीते थे।

११ श्री अमृतसर दरवार साहिब के पास घंटाघर वाला मैदान ज़िव्हाखाना वन चुका था। इस ज़िव्हाखाने तथा दरवार साहिव को एक ही दिवार अलग अलग करती थी। वहाँ दिन दिहाड़े गायों को कत्ल किया जाता था। मांस के चीथड़े तथा हड्डियाँ चीले उठा उठा कर श्री अमृतसर के पवित्र सरोवर में फैंक देती थी। कुछ नामधारी बड़े बूढ़े दरवार साहिब को इस प्रकार अपवित्र होता देखकर, उसका निरादर होता सहन नहीं कर सके। परिणामस्वरूप उन्होंने एक रात जिव्हाखाने में प्रवेश कर वहाँ बंधी हुई गायों के रस्से काटने शुरु कर दिए। उनके रस्से काट कर उनको फाटक से बाहर कर दिया। तत्पश्चात् कसाईयों को ललकारा। मार काट आरम्भ हो गई। केवल गिणती के चार सिक्खों ने अनेकों कसाईयों को परलोक की टिकटें कटा कर इस संसार से विदा कर दिया। स्वयं वाल वाल बच गए। पुलिस ने दोषियों को गिरफ्तार करने के लिए पूरी शक्ति लगाई परन्तु असफल रही। सतिगुरु राम सिंह जी की कृपा दृष्टि के कारण यह सिक्ख स्वयं ही कोतवाली में पेश हो गये। अतः उन्होंने अपना जुर्म इकबाल कर लिया तथा हल्फनामा दिया कि फलां तारीख को ज़िव्हाखाने में कत्ल की वारदात हुई थी उसके मुज़रिम वह ही हैं। उनके साधू वेप तथा संत स्वभाव देख कर कोतवाल साहिब को कतई विश्वास नहीं हो रहा था। अन्त में उनके द्वारा ही दबाए हुए शस्त्र जब उनको वरामद कराये गये तो तब कही जाकर कोतवाल को विश्वास हुआ। सैशन जज ने उनको फांसी का हुक्म सुनाया। वह गुरुवाणी के शब्दों का कीर्तन करते हुए शहीदी प्राप्त करने गये। फांसी देने के लिए जब उनके गलों में रस्से डालने लगे तो उन्होंने इन्कार कर दिया। उन्होंने कहा कि वह ऐसी अपवित्र रस्सी को अपने गले से छूने भी नहीं देंगे। इनके लिए रेशम के रस्से तैयार किए गये। इन्हीं नामधारियों के आग्रह पर सर्वप्रथम रेशम के रस्से तैयार किए गये थे। अन्ततः सिक्ख हँसते हँसते सत् श्री अकाल के नारों से आकाश को गुंजाते हुए शहीदी जाम पी गये। यह शहीदी प्राप्त करने वाले महापुरुष उस घर का भोजन तथा उन हाथों से पानी भी लेकर नहीं पीते थे जो मांसाहारी होते थे।

१२ लार्ड हार्डिंग की ताज़पोशी के समय देहली में दरवार हुआ। रस्सा खींचने का मुकावला हुआ। सरकारी तथा गैरसरकारी टीमों ने भाग लिया। परन्तु जिस टीम ने बाजी मार कर ईनाम प्राप्त किया वह नामधारी सिक्खों की टीम थी। इस टीम का सम्वन्ध ढोटियाँ जिला लायलपुर से था। इस टीम के सदस्यों ने जीवन में कभी भी मांस नहीं खाया था। जितेन्द्रिय रहना, वादाम, घी तथा दूध का सेवन करना ही अनकी शक्ति का रहस्य था। उस समय के नरायण सिंह जी (लम्वे) अभी तक जीवित हैं। वूढ़े होते हुए भी दो दो आदमियों से अभी भी शक्तिशाली हैं।

१३ वावा दरगाहा सिंह जी:—श्री गुरुगोविन्द सिंह जी के अवचली करतव के पश्चात् श्री मान संत दरगाहा सिंह जी (निर्मले) ने अपने साथी संतों सहित दक्खन से चल कर गंगा तट पर कन्खल (गुरूद्वारे वाले स्थान पर) संवत् १७६७ विक्रमी में निवास किया। संतों के निवास के लिए घास फूस तथा तिनको से झोपड़ियाँ वनाई गई। स्वयं वावा जी कई माह तक पीपल के पेड़ पर ही सोते थे। आप सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर थे। एक वार उस कस्वे के राय अहमद राजपूत पर नज़ीवावाद के रूहेलों ने आक्रमण कर दिया। वावा जी ने सारी रात उसी पीपल के पेड़ से ऐसी तीरों की वर्षा की कि अहमद को कस्वे की ओर नहीं जाने दिया। जव राय अहमद को वावा जी के इस कारनामे का ज्ञान हुआ तो वह बाबा जी के चरणों में आ गिरा। उसने प्रार्थना की कि हे महाराज! आप अपना घोड़ा जहाँ तक इच्छा हो घुमा कर पृथ्वी ले लीजिए। बाबा जी इन लौकिक वस्तुओं से परे थे। उनकी इनमें कोई रूचि नहीं थी। वह त्यागी महापुरुष थे। इसलिए उन्होंने कहा, "हमें इसकी कोई आवश्यकता नहीं।" अन्ततः राय अहमद ने स्वयं जहाँ तक वावा जी के साथियों की झोपड़ियाँ थी, चारदिवारी वनाकर उन्हें जगह दे दी।

१८ १७८३ विक्रमी में उसके इस धरती का पटा भी लिख दिया। वह पटे के कागज़ इस समय के उनके वारिसों के पास मौजूद हैं। यह स्थान वाड़ा वावा दरगाहा सिंह के नाम से प्रसिद्ध है। यह वावा जी पूर्ण योगीराज महापुरूष थे। मांसाहारी को अति नीच मान कर उसको छूते तक नहीं थे।

(औ) सिक्ख राज से पहले के सिक्ख

दशम् गुरु गुरु गोबिन्द सिंह जी से लेकर वावा बन्दा वहादुर तक खालसा पंथ के शूरवीर अपनी धार्मिक मर्यादा के अनुसार समय व्यतीत करते थे। उनका लिवास दैवी तथा शूकवीरों जैसा होता था। उनका भरा हुआ चेहरा, खुला लम्वा दाढ़ा, सीधा तथा सफेद दस्तारा (पगड़ियाँ), भोजन अवतारों का सा था। वह परालौकिक वृति, साग-सब्जी प्रेमी, धर्म तथा अधर्म का, सुकर्म तथा कुकर्म का विचार करने वाले विशेष गुणों के धारणी होते थे। राजनैतिक

धन्धों के अतिरिक्त गुरुवाणी पाठ, कथा कीर्तन का आनन्द प्राप्त करना, जोड़मेला करना, हवन यज्ञ करवाना, परस्पर प्रेम-भाव रखना उनका स्वभाव था। पंथ प्रकाश, संस्करण ६ पृष्ठ ११०८:—

घनाक्षरी छन्द:—
सूधे दाडे मुख अच्छ, दसस्तारे शवेत स्वच्छ
कटि प्रतच्छ कच्छ, पच्छ, दिड़ह धारते।
जीविका पिंगम्बरी थी, अंबरी रखन चाल,
कंवरी पटँबरी ते अधिक संभारते ।
राग साग खाइके दराज काज कीन आछे,
धरम अधरम सुकरम बिचारते।
कीरतन कथा ठाठ गुरु ग्रंथ जू के पाठ,
जोड़ मेल माहि वाठ काठ न संभारते।
सूरमे अपार थे, उदार तब सिंघ सारे,
राज साज पाइके न होइ अभिमानी थे।
होम जग करवाते, परसाद बटवाते,
रौणक रखाते गाते शब्द ज़बानी थे।
देते जो किसान आन लेते सिंध मोद मान,
हने हने बादशाही करत महानी थे।
दानी थे, गुमानी थे, इमानी थे, ज़हानी बीर,
देवगण सानी थे बिदेह सम गिआनी थे।"

(क) सिक्ख राज्य की स्थापना

साग-सब्जी खाने वाले देवता स्वरुप सिक्खों के बलिदानों की बदौलत सिक्ख राज्य स्थापित हुआ। महाराजा रणजीत सिंह जी की फौजों ने, हरी सिंह नलुआ तथा बाबा फूला सिंह के नेतृत्व में दुंबे खाने वाले पठानों को वह नाकों चने चवाये कि उनकी आज तक की सन्तान भी उनका नाम सुन कर तोबा कर उठती है। सिक्ख शूरवीरों के नाम सुन कर काबुल कन्धार की दिवारें भी थर थर काँपती थी।

(ख) सिक्ख राज्य का पतन

सिक्ख महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के पश्चात् जब धर्मात्मा बीर इस दुनियाँ से कूच कर गए तो उनका स्थान विषय वासनाओं में ग्रसे लोगों, शराबियों कबाबियों ने ले लिया। परिणामस्वरूप कुछ ही दिनो में शान शौकत वाला सिक्ख सम्राज्य पतन के कागार पर पहुँच गया। ज्ञानी ज्ञान सिंह जी पंथ प्रकाश में लिखते है कि सिक्ख धर्म की मर्यादा बदल गई। लिबास और हो गया, श्वेत गुरुमुखों वाले दस्तारों का त्याग कर दिया गया, भारी भारी टेड़ी पगड़ियाँ बाधने लग पड़े। कच्छों के स्थान पर धोतियाँ गरारे (सलवारें)

पहनने लगे, लुंगियाँ पहनने लगे। सिक्खों सरदारों का आचार, आहार एवम विचार ऐसा भ्रष्ट हो गया कि सिक्खी गाय को वह कसाई का रूप दिखाई देने लगा। दशम् गुरु की सिक्खी तो देश से निर्वासित हो ही गई। वह तो पँख लगा कर उड़ ही गई। मनमति सिक्खी बदसूरत बेहया औरत की भांति सज्ज संवर कर देश के गले पड़ गई। कई सिक्खो ने दाढ़ियों को काटना आरम्भ कर दिया। कईओं ने मोचने से बालों को नोचना आरम्भ कर दिया। टागों के बालों को उस्तरों से खत्म करना आरम्भ कर दिया। मूछों के बालों को भी हाथों से उखाड़ने लगे। सफेद दाढ़ियों को खिज़ाब लगा कर काला करने लगे। वास्तव में खानदानी सिक्खों के सपूत अपने नाम के साथ सिंह शब्द लगाने वाले सिक्खी रूपी गाय को कसाई रूप हो कर ज़िव्हा करने लगे।

घनाक्षरी छन्दः—
औरें रीत, औरे मीत, और प्रतीत प्रीत,
खान पहिरान गिआन मान ऐरै जनकै॥
डारै दसतारे साफे भारे हैं सम्भारे आछै,
कच्छै तज गए धोती सुथु तंग तनकै॥
धारे हैं गरारे तम्बे, तहिमत अधिक लम्बे,
जिन्हें देख सिखी गऊ कंबै तुरक गन कै॥★
सिखी दसमेश की सु कीआ परदेसगी,
असिखी परी पेशगी छिनार वन ठन कै॥
एक बार पारैं, ओचैं नाक नौचें मोचेन लै,
कोई खोंचै लतन को सौचे न लखाइ हैं।
कोउ दाढे ही उखाड़ैं, मूछै पाड़ै झाड़न जिऊं,
पूछें संत छाड़ैं कोऊ साड़ैं दवा लाइ हैं।
वगलै उपारैं कोऊ भौहें सोहें की उखारैं।
नासका के फारैं हाथ माथ पै चलाइ है।
सिक्ख न के पूत मजवूत सिंघ नाम वारे,
हाइ वे कसाई रहे सिक्खी गऊ घाइ हैं। (पंथ प्रकाश अंतम निवास)

(ग) संत खालसा

अकाल पुरख परमात्मा एवम् कलगीधर परम पिता को भला यह कब स्वीकार्य था कि शूरवीरों का, बहादुरों का खून बहा कर सरसब्ज किया हुआ सिक्खी बगीचा शराबियों, कबाबियों एवम् दुराचारियों के कुकर्मो के परिणामस्वरूप जल कर राख हो जाय, तबाह हो जाये। उन्होंने तो भाई आलम सिंह जी के साथ इकरार किया हुआ था कि वह ग्यारवें रूप में आ कर अपनी खालसा पंथ रूपी खेती की संभाल करेंगे। सौ साखी तथा पथ प्रकाश में लिखा हुआ है कि दशम् पातशाह को आलिम सिंह ने पूछा कि फिर कब दर्शन दिदार होगें? तो श्री सति्गुरु जी ने प्रत्युत्तर में कहाः—

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

वेर गिआरवीं हम चल आवहिं,
जिस ते कोई न हम लख पाविहं॥
पंथ खालसा खेती मेरी,
करों संभालन मैं तिस बेरी। (सू:प:रत ५ अंसू ३८)

इधर तो खालसा नाम, दान, स्नान, गुरुवाणी पाठ, शुभ विचार, शुद्ध आहार, सदाचार एवम् परस्पर प्यार को त्याग कर अपने ही रंग में रंगा हुआ था। उधर हज़रों के स्थान पर पूर्वोक्त इकरारनामें अनुसार नूरानी ज्योति श्री सतिगुरु बालक सिंह जी के रूप में प्रकट हो कर मांस शराब का त्याग करवा कर खालसा पंथ का प्रकाश तथा प्रसार कर रही थी। श्री सतिगुरु बालक सिंह जी ग्यारवें पातशाह अपनी गद्दी श्री सतिगुरु राम सिंह जी को समर्पित कर स्वयं ज्योति ज्योत समा गये थे। सतगुरु राम सिंह जी ने अपने तेज, बल एवम् अलौकिक प्राक्रम द्वारा सुखती हुई सिक्खी की बगीची को पुनः सुरजीत कर हरी भरी कर दिया। आपने मांस, शराब, चोरी, वेश्यावृति तथा झूठ आदि के विरुद्ध इतना शक्तिशाली अन्दोलन चलाया कि अल्पकाल में ही कलयुग का अज्ञान अन्धेरा समाप्त हो गया तथा सतियुग रूपी प्रकाश चारों तरह फैल गया। इस सम्बन्धी ज्ञानी ज्ञान सिंह जी ने अपनी तेजस्वी लेखनी द्वारा इस प्रकार लिखा है:—

घनाक्षरी छन्द :—

हुके छुडवाए, रखवाए केस मोनिओं के,
सुधा छक थाइ सिक्ख भाग जिनै जागिओ।
फैलिओं जस भारी सिक्ख थीए ताहि के अपारी,
सिक्ख पंथ बिरधाइओ नाम रस पागिओ।
फीम भंग पोसत शराब मांस चोरी यारी,
ठगी तज थीए सिंह सत्जुग आगिओ।

इसलिए लाखों ही सिक्ख आज फिर चीनी वाले पातशाह सतगुरु राम सिंह जी की कृपा द्वारा देश की शोभा को चार चाँद लगा रहे हैं। परिणाम यह निकलता है कि खालसा पंथ को उन्नति के शिखर पर पहुँचाने वाले वहीं शूरवीर बहादुर सिक्ख थे जो शाकाहारी थे, मांसाहारी नहीं थे। सिक्ख कौम को तख्त तथा ताज से महरूम करके अवनति के गर्त में धकेलेने वाले वह ही दुराचारी अमीर सिक्ख थे जो मांस शराब के व्यस्नी थे। श्री सतगुरु राम सिंह जी ने, उनके शिष्य नामधारी शहीदों तथा परदेशी हुए सूबों में जिन्होंने कभी भी मांस तथा शराब का प्रयोग करने वाले घरों का भोजन छुआ तक नहीं था, जिस सिक्खी बगीचे पर पतझड़ का काला साया पड़ा

★ सिक्खी रूपी गाय सिक्खो के लिबास से उनको तुर्क जान कर थर थर कांपती थी। भाव सिक्खों की वेशभूषा तथा खाना पीना भी तुर्कों जैसा हो गया।

था, उसमे नये सिरे से वसंत स्थापित कर दी। इसलिए यह विचार तो बिल्कुल निर्मूल है, युक्ति संगत नहीं है कि वीर बलशाली एवम् विजयी होने के लिए मांस का खाना अनिवार्य है। बल्कि उपरालिखित उद्धरणों से तो यह ही स्पष्ट होता है कि शौर्य भावों को अर्जित करने के लिए मांस खाने का त्याग करना सर्वथा उचित है।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

भारत के प्राचीन शूरवीर

अब हम संक्षिप्त में उन प्राचीन भारतीय शूरवीरों के जीवन के बारे में बतायेंगे जो मांसाहारी नहीं थे परन्तु जत, सत एवम् तप के प्रभाव के कारण सर्वश्रेष्ठ शक्तिशाली, बलशाली तथा अलौकिक शूरवीरों की श्रेणी में गणना करवाने योग्य हुए:—

१ श्री राम चन्द्र जी ने सीता स्वयंवर समय शिवजी का वह धनुष बड़ी सुगमता से तोड़ दिया जिसको भारतीय राजे महाराजे तो क्या लंकापति रावण छूने का या धरती से उठाने का साहस नहीं जुटा पाया। अनेकों राक्षसों का संहार करके, अन्त में, उस महाबलि रावण को भी आप ने ही पछाड़ा जिसको उस समय का अजित्य सम्राट माना जाता था।

२ लक्ष्मण जी ने सीता स्वयंवर समय उस परशुराम को निडरतापूर्ण वाकपटुता द्वारा खिन्न कर दिया था जिसने इस धरती पर से क्षत्रियों का २१ बार समूल नाश करने का, प्रण करने का, बीड़ा उठाया था। इस संवाद से ज्ञात होता है कि लक्ष्मण महान योद्धाओं के सम्मुख भी कितने हिम्मती, साहसी, आत्मविश्वास से खरी खरी कहने वाले वीर थे। जिनको इस बारें में कोई संशय हो या इससे अधिक जानने की इच्छा रखते हों वह तुलसीकृत रामचरित मानस के आठ तथा नौ अध्याय का अध्ययन करने का कष्ट करें। इसके अतिरिक्त रावण के सपुत्र मेघनाथ को जिस शोर्य पराकर्म द्वारा रणभूमि में लक्ष्मण जी ने पछाड़ा था, वह तो विश्वास तथा आनन्द गोस्वामी तुलसीदास जी की रामयण, रामचरित मानस का लंकाकांड पढ़ने से मिलेगा। मेघनाथ ने इन्द्र को पराजित करके ही इन्द्रजीत का पद प्राप्त किया था।

३ भरत जी रामवियोगी होने के कारण साधारण भोजन की भी परवाह नहीं करते थे पर उनके बल का ज्ञान उस घटना से लगता है जब हनुमान जी को पर्वत उठाकर आते देख कर बिना नुकीले फल के, तीर के निशाने द्वारा पर्वत को धरती पर गिरा दिया। तत्पश्चात् लक्ष्मण मूर्छा की कथा सुन कर हनुमान से बोले "मेरे तीर के मुख पर बैठ तांकि मैं तुम्हें लंका में श्री रघुनाथ जी पास शीघ्रतिशीघ्र पहुँचा सकूँ॥"

४ हनुमान जी सम्बन्धी सीता जी का पता लाना, राक्षसों को पछाड़ना, बाग को उखाड़ना, लंका दहन, सूर्योदय से पूर्व संजीवनी बूटी का पर्वत लाना, आदि अनेक ऐसी प्रसिद्ध घटनाएँ हैं जिनसे एक शाकाहारी तथा फलाहारी राम भक्त की अनुपम वीरता के जौहर प्रकट होते हैं।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

५ श्री रामचन्द्र जी की ओर से अंगद जी जब रावण के दरबार में राजदूत के रूप में पहुँचे तो रावण के साथ बरसरे इजलास में ऐसी निर्भीकतापूर्ण बात की कि सुनने वाले आश्चर्यचकित रह गये। रामचरित मानस में यह कथा प्रचलित है कि अंगद वीर की टाँग को रावण का कोई भी शूरवीर हिला नहीं सका था। अन्त में जब रावण स्वयं उसका पांव पकड़ कर उठाने को तैयार हुआ तो उस निडर बहादुर ने कहा, "मममद गहै न तौर उधारा, भाव मेरा पाँव पकड़ने से तुम्हारा उद्धार नहीं होगा" श्री रामचन्द्र के चरन क्यों नही पकड़ता ?" "गहिस न रामचरन सठ जाई॥ सुनत फिरा मन अति सकुचाई'" (राम चरित मानस, लंकाकांड)

६ श्री कृष्ण जी तो पले ही मक्खन खा कर थे। उन्होंने कभी मांस की ओर देखा तक नहीं था। आज भी उनको मक्खन का ही भोग लगता है। कंस के रंगभूमि के दरवाजे सम्मुख आपने कवल्लिया पीड़ नामक हाथी को मलयुद्ध में पछाड़ा, उसका शब्द चित्र गुरु कलगीधर जी ने अपने दशम् ग्रथ में कृष्णावतार के छन्द ८४७ में इस प्रकार खींचा हैं:

कैंप करिओं मन में हरि ज तिह को तब दाँत उखाड लायो है।
दई गज सूड विखै कुप दूर सीस के बीच दयो है
एक चोट लगी सिर बीच घनी धरनी परसे मुरझाइ पयो है।
सो मर गओ रिपरके बधं को, मथुरा के को आगमआज भयो है।

(अ) इसके बाद रंगभूमि में कंस के विशेष पहलवान चंड्र को पछाड़ कर यमलोक भेज दिया।

(आ) इसके पश्चात् अपने मामा महाराजा कहलवाने वाले कंस को ऐसा धोबी पटका मारा कि वह दुबारा उठ ही नहीं सका तथा मौत के मुह में चला गया।

(ज) बलदेव जी गदा युद्ध के वहुत बड़े उस्ताद थे। भीम तथा दुर्योधन ने इनसे ही गदा प्रहार की शिक्षा ग्रहण की थी। कंस की रंगभूमि में भी श्री कृष्ण जी का जब चंड्र पहिलवान के साथ मल्लयुद्ध हुआ तो उसी समय बलदेव जी ने मुशटक पहलवान को पछाड़ दिया था। दशम पातशाह जी के शब्दों में उस मल्लयुद्ध का वर्णन इस प्रकार अंकित किया गया हैं:

"तो न्रिप बैठ सभा हूं के भीतर,
मल्लन सिउं जदुराइ लरायो।
मुशठ के साथ लरिओ मुसली,
ओ चंड्र सो सयाम ज, जुध मचायो
भूम परे रन की गिर सो,
हरि जो मन भीतर कोप बढायो।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

एक लगी न तहां घटका,
धरनी पर ताकहु मार गिरायो॥ (छंद ८४६)

कंस को केशो से पकड़ पछाड़ने का वर्णन गुरु जी इन सुन्दर शब्दों में करते है।

"गहि केसन ते पटकार्यो धर सो,
गहि गोडठ तें तब घीस दयो।
त्रिप मार हुलास बढयो जी मैं।
अति ही पुर भीतर शोर पयो।
कवि सयाम प्रताप पिखो हरि के,
जिन साधन राख कै छत्र छयो॥
कट बंधन तात दए मन के,
सब ही जग में जस वाहि लयो॥ (८५२)

८ भीष्मपितामह बाल ब्रह्मचारी थे, मांसाहारी नहीं थे। महाभारत में श्री कृष्ण जी का शस्त्र उठाने वाला व्रत आपने ही तोड़ा था। दसवें दिन ऐसी वीरता से भीष्ण युद्ध किया कि एकेलो ने ही पाँच हज़ार की रथ सेना, दस हज़ार हाथी सवार सेना, दस हज़ार घुड़सवार सेना, एवम् चौदह हज़ार पैदल सेना को मौत के घाट उतारा, सात महारथियों को मृत्यु की गोदी में सुला दिया।

(कृष्ण चरित्र, पंडित लक्ष्मण नरायण पृष्ठ २२२ एवम् २२६)

६ भीमसेन की वीरता तथा बल के बारे में कुछ अधिक कहने की आवश्यकता नहीं। श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने दशम् ग्रंथ में लिखा है, तहा "शत्रु के भीम हस्ती चलाए॥ फिरे गैण मध अजौ लौ न आए॥"

भाव महाभारत के युद्ध में भीम ने शत्रु सेना के हाथियों को सूंड से पकड़ कर इतनी शक्ति से आकाश की ओर फैंका था कि वह अभी तक वापस नहीं आए। आजकल के तार्किक बुद्धिवाले लोग इसे पुराने समय की दन्तकथा ही मानते हैं। परन्तु इन लोगों को यह याद रखना चाहिये कि राजा जनमेज्या ने इस बात को सुन कर, गप समझ कर नाक मुह चिढ़ाया था, फलस्वरूप उसके नाक से कोढ़ का रोग समाप्त नहीं हुआ था जो गप समझने के कारण हुआ था। गुरु नानक देव जी ने भी इस घटना पर अपनी छाप लगा दी है, वह कहते है।

"रोवै जनमेजा खुइ गइआ। एकी कारन पापी भइया॥" भावार्थ राजा जनमेज्या अपनी भूल पर रोया क्योंकि एक बात पर निष्ठा न करने के कारण कुष्टि रह गया। वह एक बात भीमसेन की आकाश मं हाथी फैंकने की थी। इसके अतिरिक्त दुर्योधन तथा उसके सौ भाईयों को भी एकेले भीम ने ही मौत रानी की गोद्दी में सदा के लिए सुला दिया था।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

१० अर्जुन की वीरता का उदाहरण तो वह स्वयं ही है। महाभारत के युद्ध के निर्णय का आधार अर्जुन ही था। जब तक अर्जुन युद्ध के लिए तैयार नहीं हुआ तब तक युद्ध के प्रारम्भ का नगाड़ा नहीं बजा था। भीष्म पितामह जैसे शूरवीर बहादुर से युद्ध करना केवल अर्जुन का ही काम था। पितामह को तीरो की शैय्या पर लैटाने वाला भी और कोई नहीं बल्कि अर्जुन ही था। एक घटना देखिए। तीर शैय्या पर लेटे भीष्म पितामह को प्यास लगती है। दुर्योधन सोने के पात्र में जल ले कर आता है परन्तु वीर पितामह यह कह कर पानी पीने से इन्कार कर देते हैं कि यह जल शूरवीरों के पीने के लिए नहीं है। अर्जुन की ओर संकेत होता है। वह पृथ्वी में इतनी शक्ति से तीर मारते हैं कि पानी का चश्मा फूट पड़ता है। इस पानी को भीष्म पितामह प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करते हैं तथा अर्जुन के बल की भूरि भूरि प्रशंसा भी करते है। (कृष्णाचरित्र पृष्ठ २२८)

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

शिकार एवम् मांस

श्री गुरू हरिगोबिन्द जी एवम् श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के शिकार खेलने से इस परिणाम पर पहुँचना कि वह स्वयं मांस खाते या अपने सिक्खों को खाने का आदेश देते थे सर्वथा अनुचित है। इतिहास के अध्ययन से ज्ञात होता है कि गुरु जी अपनी दिव्य दृष्टि से उन जानवरों की पिछली योनि के बारे में जान कर शिकार के बहाने उनका उद्धार करते थे। उदाहरण के लिए कुछ उद्धरण पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किये जाते हैं:—

१ सिरी गुरबिलास पात्शाही ६, अध्याय १५, छंद ११८ से आगे कथा इस प्रकार है कि एक बार श्री गुरु हरि गोबिन्द साहिब शिकार खेलने के उपरान्त व्यास नदी के किनारे विश्राम हेतु बैठे हुए थे। गुरु जी के दर्शन करने को अनेक सिक्ख संगत के रूप में उपस्थित हुए । एक सिक्ख ने जो कभी भी जीव हिंसा नहीं करता था, शराब आदि का प्रयोग नहीं करता था, संगत को कुछ दूरी पर बिठा कर गुरुजी के चरनों में आकर चरनवंदना की। गुरु चरनों में सौगात स्वरूप कुछ रख कर प्रार्थना की। परन्तु वह यह देख कर आश्चर्य चकित हो गया कि गुरु जी के एक हस्तकमल में बाज है तथा दूसरे में बटेर। बाज बटेर को नोच नोच कर खा रहा है।

"एक हाथ पर बाज धराए॥
दूती बटेर चीर खवाए॥१२७॥
लोहू भरे हाथ गुर केरे॥
अस नहिं सुने नाहिं हम हेरे॥
गुरु नानक दी गादी भारी॥
अस नहिं हिंसा करैं बिचारी॥१२८॥
कांसी तज हम दरसन आए॥
आगे हिंसा करत दिखाए॥

सत्गुरु जी के कर-कमल खून से लथपथ थे। सिक्ख अपने मन में विचार करता है कि गुरु नानक देव जी की गद्दी पर आज तक न हिंसा होती देखी है न सुनी है। अन्तर्यामी गुरुदेव को शिष्य के हृदय की बात का अभास हो गया तथा बाज को कहा कि तुम अपनी साखी अपने मुख से आप ही कहो—"दया सिन्ध तब बाज को ऐसे कहा सुनाइ॥ निज साखी सब सिख को दीजे आप बताइ॥१३१॥"

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

वाज की साखी

बाज ने कहना आरम्भ किया कि मैं पूर्व जन्म में गुरु राम दास जी का सिक्ख था तथा उन्हीं के चरनों में रहता था। एक दिन गुरु जी ने मुझे किसी काम को करने के लिए भेजा। रास्ते में खर्चे के लिए पाँच पैसे दिए। मैं व्यास दरिया पार करने के लिए नौका पर सवार हुआ । यह बटेर उस समय नौका का मल्लाह था। उसने मुझे नौका पर बिठाने का किराया मांगा, साथ ही कहा कि तुर्क लोगों ने जज़िया कर लगाया हुआ है। इसलिए यदि पौली देगा तो पार कराऊँगा। मैंने एक टका दे दिया परन्तु इसने क्रोधावेश में वह भी नही लिया। तत्पश्चात् मैं इसे पाचँ पैसे भी देता रहा परन्तु यह बहुत क्रोध में था। मैंने इसके सामने बहुत हाथ पैर जोड़े कि मेरे पास और कुछ भी नहीं है। तुम मेरे पाँच पैसे लेकर मुझे उस पार लगा दो । मैं तुम्हारा अभारी रहूँगा, परन्तु इसने क्रोधाग्नि में जलते हुए मुझे नदी के मंझधार में ही फैंक दिया।

अड़िल—

नदीं बीच मलाहि, दीन मम डारकै॥
दे रहिऔ पैसे पाँच, सु बिनत उचार क़ै॥
तब आई मन ऐसे, मोहि अस क्रोध भर॥
हो चक्कीं खावों मांस, इसी तन काट कर॥१३८॥
तब निकसे मम प्रान, एह भी हत भयो॥
धरमराइ की पुरी, गयों मम इह गयो॥
धरम राज अस भाख धरो भव जाइकै॥
हे गुर सेवक, गुर निआव करैं हित लाइकै॥१६६।

चौपाईः

इह कारन तन बाज धरिओ हम॥
दीना नाथ न कौऊ गुरु सम॥
ए सु बटेरा अहै मलाह ॥
चक्की मांस खाऊँ चित चाह॥१३६॥
सुन पिआरे सिख बात प्रसिद्ध ।
अंत काल चितवै दए सिद्ध
सेवक निआइ गुरु जी कीने।
अस कहि तबे प्रान तज दीने॥१४१॥

तत्पश्चात् बाज एवम् बटेर दोनों ही सुन्दर देह धारण करके आकाश से उत्तरे पुष्प विमानों पर बैठ कर स्वर्ग सिधार गये। सतिगुरु जी की कृपा कारण उनका आवागमन का चक्कर समाप्त हो गया।

परिणाम

इस प्रकार के और भी प्रसंग मिलते है जिनके द्वारा सिद्ध होता है कि गुरु जी का शिकार खेलने का कारण उनकी दिव्य दृष्टि द्वारा जीवों का कल्याण, उद्धार करना था, न कि मांस खाना या खिलाना।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी

अब श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के शिकार खेलने सम्बन्धी कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं।

गुरु कलगीधर जी महाराज वजीदपुर (जो फिरोजपुर से पाँच कोस पूर्व की ओर स्थित है।) रात्रि विश्राम करके सुबह प्रभात समय उठे तो एक तीतर कुछ बोला। गुरु जी ने वचन किया "जो बोलिआ तां लभिआ।" भाव यदि कोई बोला है तो मिल भी जाएगा। वह शिकार करने निकल पड़े तथा तीतर के पीछे बाज को लगा दिया। तीतर उड़ता हुआ बहुत दौड़ा परन्तु पाँच कोस पर जा कर बाज ने पकड़ ही लिया। गुरु जी ने उसके पँख उतार कर उसको बाज के आगे छोड़ दिया। जब वह बाज़ उस जीवित तीतर को गुरु जी तथा उनके सिक्खों के सामने ही नोच नोच कर खा रहा था तो घोड़ो को सम्भालने वाले दान सिंह ने प्रार्थना की कि महाराज! आप तो बहुत ही निर्दयी तथा लापरवाह हैं। घोड़ा पसीने से तर है यदि शेर होता तो भी बात थी। आपने तुच्छ से जीव तीतर के ऊपर हमला करवा दिया। मुझे तो इस बात की बिल्कुल भी समझ नहीं आई। गुरु जी ने उत्तर दिया, "दान सिंह! तुम नहीं जानते हम यह क्या कर रहे हैं।

जाट तथा महाजन

सिक्खों के बार बार विनती करने पर सत्गुरु जी ने बताया कि यह बाज महाजन था। जाट ने गुरु जी को गवाह बनाकर इस महाजन से ऋण लिया था परन्तु वह वापिस नहीं किया। इस लिए हमने अपनी गवाही पूरी करने के लिए इस जाट को तीतर बनाया तथा महाजन को बाज। बाज से तीतर पकड़वाया है। भाईयों! हिसाब-किताब तो चुकाना ही पड़ता हैं। (तवारीख गुरु खालसा, गुरु १०, भाग ३, कृते ज्ञानी ज्ञान सिंह, पृष्ठ २००)

३ गुरु गोबिन्द सिंह जी वजीद पुर से चल कर रूपाणे गाँव आ कर ठहर गये (यह गाँव मुक्तसर से तीन कौस दक्खन की ओर है) वहाँ पर चील (घोगड़ जीव) को मारा। जौर सिंह रंधावा के पूछने पर गुरुजी ने इसका कारण बताते हुए कहा कि यह पूर्व जन्म में राजा था। एक सिक्ख की कंवारी कन्या का ज़ब्रदस्ती सतीत्व भंग करने लगा, तो वह विष खा कर मरने लगी, तब उसने इसको अभिशाप दिया कि तुमने गंदी बात की इस लिए सौ जन्म

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

घोगड़ (चील) का जन्म प्राप्त करके गंदगी खा।" श्राप को सुन कर घिघआते हुए यह बोला, " हे देवी। मेरी इस श्राप से मुक्ति कैसी होगी?" कन्या ने प्रत्युत्तर में कहा, "तुम्हारा कल्याण गुरु ही करेगा।" इसलिए हमने इसे इस योनि से छुटकारा दिला कर स्वर्ग को भेज दिया है। (पृष्ठ २००४.२००५)

४ काल झरा गाँव से जब गुरु जी ने शिकार के लिए प्रस्थान किया तो आपने एक काले सर्प का शिकार किया। धर्म सिंह से एक काला कौआ भी मरवाया। सिक्खों के पूछने पर गुरु जी ने उनकी कथा का इस प्रकार व्याख्यान किया। भाई सिक्खो! यह कौआ लंगर पकाता था। यदि कोई उससे प्रसाद माँगता तो दुत्कारता । एक दिन एक संतोषी सिक्ख जो ईमानदारी की कमाई करता था, लंगर के लिए अनाज ले कर आया। उसने प्रसादा (रोटी) माँगा तो इसने उसे दुत्कार दिया। सिक्ख ने सहज भाव से कहा, क्यों कौए की भांति काँव काँव कर कुरलाहट मचा रहे हो। जाओ कौए की योनि मिलेगी।" उसके श्राप स्वरूप वह लांगरी मर कर कौए की जून में पड़ा।

सर्प मसन्द था

भाई सिक्खो! यह सर्प पिछले जन्म में मसन्द था। लंगर के लिए दिए गये पैसो में से तथा सेवा भेंट में से पैसे रख लेता था। चोरी कर लेता था। मरते समय भी तृष्णा पैसे (माया) में ही रही। इसलिए सर्प बना। यह तो इन दोनों के बुरे कर्मो का फल मिला। तामसी स्वभाव तथा पैसे की तृष्णा का परिणाम भुक्तना पड़ा। परन्तु अव हमने इन्हें गुरु जनों के सेवक जान कर इन बुरी योनियों से छुटकारा दिला, सेवा का फल देकर स्वर्ग भेज दिया है।

उपरोक्त सभी प्रसंग/ तवारीख गुरु खालसा में से हैं। गुरु प्रताप सूरज में भी इनका वर्णन मिलता है। जिनसे यह ज्ञात होता है कि छट्टे एवम् दशम् गुरु दोनो ही सर्वज्ञ थे। शिकार के बहाने जीवों का उद्धार करते थे तथा न उनके समय लंगर में मांस बना कर बाँटने की प्रथा थी और न ही उन्होंने कभी सिक्खों को मांस खाने के लिए आज्ञा दी थी।

(अ) माछीवाड़े के जंगल तथा मांस

ऐसी किंवदन्ती है कि जब गुरु जी माछीवाड़े के जंगलों में घिरे हुए थे तो गुलावे मसन्द के घर चुवारे में बकरों का मांस बनवा कर खाया तथा हड्डियाँ उस काजी के घर फैंक दी जिसका साथ वाला घर था। जिन हालतों में से गुरु जी गुजर रहे थे उन पर विचार करने से आश्चर्य होता है कि एक ओर तो गुरु जी शत्रु की सेना में से निकलने के लिए नील वस्त्र धारण करते हैं, उच्च के पीर का लिबास पहनते हैं। दूसरी ओर काज़ी के घर हड्डियाँ

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

फैंक कर स्वयं को प्रकट कर रहे हैं कि वह उस चुवारे में उपस्थित हैं। यह दोनों बातें एक दूसरे के विपरीत हैं। विचारणीय विषय यह है कि एक ओर तो गुरु जी, उस नाज़ुक हालत में सबकी आँख बचा कर, भेस बदल कर छिपकर निकलते हैं दूसरी ओर काज़ी से छेड़खानी कर अपने आप को जहिर करते है। जब चमकौर साहिब से निकल कर आप तीन कोस दूर पहुँचे तो एक गडरिए गुज्जर ने आपको देख कर शोर मचाना आरम्भ कर दिया। वहाँ गुरु जी उसको अपने सोने का कड़ा देकर चुप करवाना चाहते थे परन्तु वह नहीं मानता। इनकी उपस्थिति के बारे में शोर करता ही जाना था तो आपने मजबूर हो कर अन्त में उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। यह प्रसंग पंथ प्रकाश (ज्ञानी ज्ञान सिंह जी) के छट्टे संस्करण के पृष्ठ २५६ पर अंकित है:—

"सतिगुरु लांघ कोस त्रै गए॥
संगी सिंघ विघड़ते भए॥
फेर उछेर चरावन हारे॥
गुजर ने गुरु जात निहारे॥
ऊचै लगो पुकारन बानी॥
दीनो कड़ा ताहि गुर दानी॥
फिर भी सो जब चुप न कीआ॥
मार तेग दे धर कर दीआ॥

इसके आगे लिखा है (पृष्ठ २५६) कि माछीवोड़ के चारों ओर शत्रु की सेना ने जब घेरा डाल लिया तो गुलाबे ने सहम कर गुरु जी से कहा:—

आप ईहां ते अंत सिधारैं॥
नहीं ते तुरक हमें फड़ मारें॥
जदपि गुर धीरज तह दयो॥
पर बुह एक न मानत भयो॥
हुती तहां इक सिक्खणी माई॥
सो रेंजे दो लेकर आई॥
कौरे बसन गुरु सिलवाए॥
स्याम रंग तुरते करवाए॥
वेस तुरकानी सबने धारा॥
भावी दै प्रबल करतारा॥

आश्चर्य की बात यह है कि गुज्जर को तो केवल इसलिए मारा गया कि उसके शोर से लोगों को पता लग सकता था कि गुरु जी जा रहे है परन्तु दूसरी ओर काज़ी के घर हड्डियाँ फैंक कर अपने आपको प्रकट करने का प्रयत्न किया जाता है। इस नाज़ुक समय में ऐसी अनीति गुरु जी जैसे

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

व्यक्तित्व द्वारा कैसे कार्यन्वित की जा सकती है? ऐसे लगता है कि भाई संतोख सिंह जी तथा गुर बिलास के रचयिता ने बिना सोचे बिचारे ही यह प्रसंग लिख दिया है जो एक ओर तो गुरुवाणी के विरुद्ध जाता है दूसरी और राजनीति के विरुद्ध होने के कारण .अविश्वसनीय भी है। ज्ञानी ज्ञान सिंह जी ने पंथ प्रकाश में जिसका विवरण ऊपर दिया गया है में मांस खाने या हड्डिया फैंकने का ज़िक्र तक नहीं है। इस लिए यही सिद्ध होता है कि माछीवाड़े के जंगलों में न मांस बनाने का तथ्य सामने आया और न खाने का समय ही था न, ही वहाँ पर ऐसा कुछ हुआ ।

(आ) बंदा बहादुर तथा बकरे

ऐतिहासिक तथ्य है कि नदेड़ में नरैणदास नामक वैरागी साधू रहता था। गुरु जी उसके आश्रम में गए। वह साधू आश्रम में नहीं था। गुरु जी उसके पलंग पर सुशोभित हो गये। सिक्खों ने उसके दो बकरों को झटका दिया।

विचार:—नरैणदास पहले शिकार खेलता था। परन्तु एक दिन एक गर्भवती हिरनी को मारने पर उसके दिल को काफी ठेस लगी। इसी ठेस के कारण उसने शिकार करना छोड़कर साधू का वेश धारण कर लिया। लूणिए साधू को मिल कर सब ऋद्धि सिद्धि प्राप्त की। वह काफी समय से नंदेड में रहता था। तप तेज उसमें असीम था परन्तु अहंकारी भी बहुत था। फलस्वरूप वह आए साधू जनों का निरादर करने से भी नहीं चूकता था। उसके इसी गर्व को चूर करने के लिए तथा उससे सिक्ख पंथ की सेवा कराने हेतु ही गुरु जी उसके आश्रम में गये थे। जहाँ तक बकरों को झटकाने का प्रश्न है वह बेबुनियाद है क्योंकि एक अहिंसक वैष्णव व्यक्ति जो संसार से निर्लेप रहता है उसे बकरे रखने की क्या आवश्यकता है। जिस मनुष्य ने मांस खाना है, बेचना है, मांस का व्यापार करना है वह तो बकरे रख ही सकता है। परन्तु जो स्वयं मांसाहारी नहीं, मांस बेचने वाला भी नहीं, व्यापारी भी नहीं बल्कि जप तप करने के लिए एकान्त वास के लिए एकान्त जंगलों में रहता है। छोटी सी कुटिया बना कर रहता है उसके लिए कहा गया कवियों का यह कथन हास्यस्पद ही है कि वह बकरों के झुण्ड रखता था। परन्तु यदि कवि की इस कोरी कल्पना को सत्य भी मान लिया जाये तो मांस खाने के लिए बकरों का झटकाना कहीं भी सिद्ध नहीं होता। जिस भाव से पंथ प्रकाश के रचियता ने यह कथा लिखी है उससे तो यह प्रकट होता है कि गुरु जी चाहते थे कि उस साधू को उनके वहाँ पहुँचने का शीघ्रतिशीघ्र पता लगे तथा वह क्रोधावेश में उनका निरादर करे। अपमान करने का प्रयत्न करे। तत्पश्चात् गुरु जी उसको अपना बंदा बना ले। उसका सारा दर्प चूर कर दे। अपनी इच्छानुसार उससे सेवा-कार्य ले सके। इसलिए गुरु जी उसके पलंग पर बैठ

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

जाते हैं तथा बकरे झटकाते हैं। यद्यपि यह दोनों हरकते ही गुरु महाराज की मर्यादा के विपरीत एवम् उनके द्वारा अपनाई हुई सभ्यता के उल्ट हैं परन्तु साधू का मान भंग करने के लिए जानबूझ कर सुचेत होकर की गई प्रतीत होती हैं। अन्ततः साधू क्रोधाग्नि में जल कर पूरे तान से गुरु जी का निरादर करने का प्रयत्न करता है परन्तु असफल रहता है। गुरु जी उसको अपनी शक्ति द्वारा अपना बंदा बना कर पंजाब भेज देते हैं। इन प्रसंगों के संदर्भ में यह स्पष्ट होता है कि यह कथा माँसाहारी सिक्खों के मांस खाने के पक्ष को स्वीकृति नहीं देती।

(इ) जेते दाणें अन्न के

कई सिक्खों का यह मत है कि गुरुवाणी अनुसार प्रत्येक अन्न के दानों में जीव हैं तथा पानी भी जीवों से भरा हुआ है। इसलिए जीव हत्या से बचने के लिए अन्न पानी का त्याग भी कर देना चाहिये।

भोजन के सम्बन्ध में विचारः—गुरु जी ने हमें सोजन के बारे में दो प्रकार के आदेश दिए हैं। (१) भाज्य (२) अभाज्य। भाज्य उन पदार्थों को कहा गया है जिनको हम खा सकते हैं और अभाज्य उनको कहा गया है जिनको हम खा नहीं सकते हैं। जिस प्रकार अपना हक भाज्य विहत तथा वेगाना हक अभाज्य अविहत है। उसी प्रकार अन्न पानी हमारे लिए भाज्य कहा गया है तथा मांस अभाज्य। मांस खाने का दोष लगता है तथा अन्न पानी का कोई दोष नहीं लगता। गुरुवाणी में अन्न पानी की प्रशंसा के बारे में लिखा गया हैः—

"जपीऐ नाम, जपीऐ अनु॥
अंभै के संगि नीका वंनु॥
अंनै बाहरि जो नर होवहि॥
तीनि भवन महि अपनी खोवहि॥
अंनै बिना न होई सुकालु॥
तजीऐ अंनि न मिलै गोपालु॥" (गौंड कबीर जी)

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

द्वितीय भाग

प्रथम भाग में पाठकों ने अध्ययन किया कि सिक्ख धर्म में हिंसा करने तथा मांस खाने की न केवल धोर भर्त्सना की गई है वल्कि इमका खाना पाप माना गया है जिसके फलस्वरूप नर्क का भागी बनना पड़ता है। अब इस भाग में वैदिक तथा दूसरे मतोनुसार एवम् विश्वविख्यात डाक्टरों तथा लेखकों के दृष्टिकोण अनुसार मांस का खाना अयोग्य एवम् हानिकारक सिद्ध किया जाता है।

(१) वैदिक धर्म

वैदिक धर्म के अन्तर्गत यद्यपि अनेक सम्प्रदाय है परन्तु मुख्यता सनातन धर्म तथा आर्य समाज ही हैं। समूह वैदिक सम्प्रदाय वेदों को स्वतः प्रमाण ही स्वीकारते हैं। इसलिए सर्वप्रथम इस विषय पर वेदों में से उदाहरण प्रस्तुत किए जाते है:—

(अ) वेद : (१) यजुर्वेद—अध्याय ४० मन्त्र ६ में बताया गया है कि अपनी आत्मा में ही सभी जीव आत्मा को मानो, एवम् सभी जीव आत्मा में अपनी आत्मा को। ऐसे ब्रह्म ज्ञानी पुरुष की कभी निंदा नहीं की जाती॥

मन्त्र:—

"यस्तू खाणि भूतानी आत्मनेवानु पश्याति।
सर्व भूतेश चातमानं ततो न चिक्तिसकत।"

(२) यजुर्वेद—अध्याय ४० मन्त्र ७ में अंकित है, जो महात्मा विद्वान सम दृष्टि से समस्त जीव आत्माओं को अपनी आत्मा के सम समझता है, एक अद्वितीय परमात्मा की शरण को प्राप्त करता है, उसको मोह, शौक एवम् लालच आदि कभी नहीं सताते। जो लोग अपनी आत्मा का ज्ञान प्राप्त कर परमात्मा की प्राप्ति कर लेते हैं वह स्वयं भी सुखी होते हैं तथा किसी जीव को भी दुखी नहीं करते।

मन्त्र :—

"यसमिनतु सर्वाणि भूतानी आत्मै भुवि द्विजानता
तत्र को मोहकः शोकः एकत्रम अनुपश्यतः।"

(३) अथर्ववेद—सूक्त १५ अनुवाक्य २ एवम् मन्त्र ४ में वर्णन है:—

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

जो तुम्हारी गायों, घोड़ो एवम् निर्बल मनुष्यों को मौत के घाट उतारता है, उस दुष्ट को गोली मार दे। इसलिए कि वह निर्बलों को दुःख देने वाला इस संसार में कदापि रहे ही न।

मन्त्र :—

यदि नो गां हिंस्यदि अश्वं यदि पुरुसभ्र।
तं त्व सीसेन विद्यामों यथानो असो अवीरः।

(४) अथर्ववेद :—अनुवाक्य ६ मन्त्र १९ में लिखा है—

वेद में राजा को आज्ञा दी गई है कि हे राजन्। जो तेरे राज्य में मांस खाए, खून बहाए एवम् दूसरें हृदयों को दुःखी करें वह राक्षस हैं। यदि तुम तेजस्वी, बुद्धिमान एवम् शील स्वभावी हों तो इनका अपने तेज वज्र से सिर धड़ से अलग करदो तांकि औरों को दुःख देने वाला संसार में और दुःखों का प्रसार न कर सकें।

क्रवयाधम अग्नेरुधिचं पिशाचं मनो हनं जेह जात वेद।
तूं इन्द्रै वाजी वज्रेण छितुं सोमाः शिरो अस्यध्रिशोणू॥

(आ) गीता :—गीता वेदों के बाद ऐसी पुस्तक दै जिसको सभी वैदिक मतान्तरों वाले उपनिषदों का सार स्वीकार करते हैं। इसके रचने वाले भगवान कृष्ण माने जाते हैं। आपको सनातन सम्प्रदाय वाले साक्षात् परमात्मा का अवतार मानते हैं। आर्य समाजी वीर, पूर्णयोगी मानते हैं। इस पुस्तक में जिस विशेषता से अहिंसा का प्रचार किया गया है वह अपने आप में एक अनूठा प्रमाण है। इसके कुछ उद्धरण प्रस्तुत हैं:—

(१) मुक्त प्रदाती दैवी सम्पदा के २६ गुणों में दशम् स्थान पर अहिंसा, सोलहा पर जीव दया का वर्णन मिलता है। देखीए—अध्याय १६ श्लोक १,२,३:—

अभयं, सत्व संः शुधिर ज्ञान योग व्यवस्थितिः ।
दानं दमस्च, यज्ञस्च, स्वाध्यायस, तप आर्जवव। (१)
अहिंसा सत्यम्, क्रोधस्, त्यागः शान्त्रिपैशुनभ॥
दया भूतेश्व लंलुपतव मारदवं हत्रचापलम॥२॥
तेजः कश्मा, ध्रतिः शौचमद्रोहो, नातिमानता।
भवन्ति संपदं दैवीमँभजातस्य भारत ॥३॥

(२) शरीरिक तपस्या का वर्णन करते हुए कहा गया है—हे देवताः ब्राह्मण, गुरु एवम् ज्ञानी जनों का पूजन, पवित्रता, सरलता, ब्रह्मचर्या एवम् अहिंसा शरीरिक तपस्या है। (अध्याय १७ श्लोक १४)

(३) तामसिक भोजन :— अधपक्के, रसहीन, दुर्गन्धयुक्त, बासी, जूठे एवम् अपवित्र भोजन को तामसी भोजन मानते हुए कहा गया है कि यह तामसी पुरुषों को प्रिय है—

यातयामं, गत रंस पूति परयुशितं चायत।
उच्चि श्रेपि, चामेध्यं भोजनम् तामस प्रियं।

(अध्याय १६ श्लोक २०)

तामसिक भोजनः— दुर्गन्धयुक्त तथा अपवित्र होने के कारण मांस तामसी भोजन माना गया है। ऐसा कहा जाता है कि यह चंडाल एवम् भील आदि तामसी प्रवृतियों वाले लोगों की खुराक है।

(इ) अत्री मुनि—कपिल मुनि की वहिन सती अनसूया के पतिदेव श्री अत्री मुनि जी का कथन है मद एवम् मांस राक्षसों, भूतों तथा पिशाचों की खुराक है। इसलिए मनुष्य को चाहिए की वह-देव बलि हित भी पशुओं को न मारे और उनका मांस बलि पर न चढ़ाए। स्वयं भी न खाए। देवताओं तथा मनुष्यों के लिए फल-फूल, मेवा आदि अनेक उत्तम पदार्थ है जो उनको चढ़ाए जा सकते हैं—

यक्षस राक्षसः पिशाचाननं मदयं मांसं सुरास्वम।
तद ब्रह्मणनेनातवयं देवा ना मसनताहविः"

(हिन्दू धर्म रहस्य पृष्ठ २१७)

(ई) मनु स्मृति में लिखा है कि आठ पुरुष जीव हत्या में एक समान है।

(१) जानवरों को मारने वाला

(२) मारने की सलाह देने वाला

(३) बनाने वाला

(४) खरीदने वाला

(५) विक्रय करने वाला

(६) पकाने वाला

(७) खाने वाला

(८) एवम् खिलाने वाला

अनुमंता, विशसता, निहंता, क्रय, विक्रयी, संस्कता, चोपहर्ताच खादकस्वेति घातकः (अध्याय ५ श्लोक ५१)

(२) प्राणियों को मारने के विना मांस कभी पैदा नहीं होता, इसलिए प्राणियों को मारकर स्वर्ग की प्राप्ति नहीं हो सकती, नर्क की प्राप्ति ही होती

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

है। ऐसे मांस का सर्वथा त्याग कर दे:–

"न कृतवा प्राणिनं हिंसा, मासभुतपदयके कचिता।
नच प्राणि वधः स्वर्गस्य तस्मान् मांस विवर्जयते॥'

निरन्तर (अध्याय ५ श्लोक ४८)

(३) जो शत् वर्षो तक निरन्तर अश्वमेध यज्ञ करता है तथा जो जीवन भर मांस नहीं खाता है उन दोनों के पुण्य का स्वर्गादि फल एक समान हैं।

"वर्षे वर्षे अश्वमधेणयो यजेति शते समाः मांसानि न खादेर दयस्तोः पुण्यं फलं समम।" *(अध्याय ५ श्लोक ५३०)*

४. पवित्र कन्द मूल खाने एवम् ऋषि मुनियों के खाने योग्य तृण धान आदि के खाने से भी वह फल प्राप्त नहीं होता जो शास्त्रीय नियमोंनुसार नियमों का पालन करके मांस न खाने से मिलता है।

"फल मूलाशनैर मेधबैर मुन्यिननानांचु भोजनैः।
न तत फलमुवापनोति यन मांस प्रवर जिनात।"

(अध्याय ५ श्लोक ५)

(५) जो स्वेच्छा कारण अहिंसक जीवों को मारता है, वह न इस लोक में और न परलोक में सुखी हो सकता है

यो अहिंसाकानि भूतानि हिंसत्यातम सुखेछया।
सः जीर्वोस्व भ्रतस चैवन कचित्त सुख मेधते॥

(अध्याय ५ श्लोक ४५)

(६) जो प्राणियों के बंधन या मारने के क्लेश को नहीं करना चाहता तथा सर्वसुख इच्छित है, उसे अनन्त सुख की प्राप्ति होती है।

ये बंधनवध कालेश्न प्राणिना नचि करिश्यति।
स सर्वस्य हित प्रेपसुः सुखनतयं तमसनुते।

(अध्याय ५ श्लोक ४६)

(उ) **महाभारत** :–चाहे कोई आस्तिक हो या नास्तिक हो यदि न्याय की दृष्टि से देखा जाये तो मांस खाना अनीति है। इसका कारण यह है कि मांस कोई घास या लकड़ी नहीं है, न ही वह पेड़ों को लगता है जो न्याय से प्राप्त होता है यह तो निरपराध जीवों को निर्दयता से मार कर मिलता है। इसलिए मांस खाना दूषित एवम् नीति विरुद्ध है। महाभारत में लिखा है:–

नहि मांसं तृणातं काष्टा दुपला द्वति जायते।
हतुवा जंतुं ततों मांसं तसमाददोषयत् भक्षणे।

नीति का विचार है कि संसार में प्राणों से प्रिय और कुछ भी नहीं है।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

जिस प्रकार मनुष्य को अपने प्राण प्रिय है—यथातमनः प्रिय प्राणाः सर्वेशा प्राणिना तथा।" उसी प्रकार जीवों को भी अपने प्राण प्रिय हैं यदि मांस खाने वाले के कोई प्राण हरे तो उसे कितना कष्ट पहुँचेगा। इसलिए बिना अपराध किसी को दुःख देना अन्याय अर्थात् पाप है।

(हिन्दू धर्म रहस्य पृष्ठ २१८)

(ऊ) एक कवि तथा भिक्षुः—किसी कवि ने भिक्षु के पास मांस देख कर पूछा—भिक्षो! मांस निवेश्णं किमुचितं ?

अर्थात्—हे भिक्षु! मांस खाना कैसे उचित है ?

भिक्षु ने उत्तर दियाः—"किंतेन मदयं विना।"

अर्थात् शराब के बिना मांस का क्या स्वाद ?

कवि ने पूछा :—मदयं चापि तूप्रि ?

अर्थात् आपको शराब भी प्रिय है ?

भिक्षु ने कहा—प्रिये मधे! वहांगनांनिससह ?

अर्थात् शराव वैश्या के साथ ही सुहाती है ?

कवि ने कहा :— वैश्याः द्रव्य रुचि कृतस्व धनं ?"

अर्थात् वैश्या की रुचि धन में होती है ? आप धन कहाँ से प्राप्त करते हो ?

भिक्षु ने उत्तर दियाः—दयूतेन चोरयेणवा।

अर्थात् चोरी करने या जुआ खेलने से धन प्राप्त होता है

कवि ने आश्चर्यचकित हो कर पूछाः—चौरयं दयूत पृग्र हो अपि भवतौ ? अर्थात् आपको चोरी एवम् जुआ भी प्रिय हैं ?

भिक्षु ने मुस्कारते हुए उत्तर दियाः—"भ्रष्ट्स्य का अन्या गति" अर्थात् धर्म भ्रष्ट मनुष्य की ओर क्या गति हो सकती है। भाव मांस खायेंगे तो सभी अनर्थ करने ही पड़ेंगे।

(हिन्दु धर्म रहस्य पृष्ठ २२३)

(ए) नारद भक्ति सूत्रः—अहिंसा सत्य शौच दयासतिकयादि चरित्रयाण परिपालनीयान," (सूत्र ७८) अर्थात् भक्ति साधक को अहिंसा सत्, सुच्चम् दया एवम् आस्तिकिता आदि सदाचारों का पालन करना चाहिये।

(ऐ) सत्यार्थ प्रकाशः—स्वामी दयानंद जी जो आर्यसमाज धर्म के प्रवर्तक थे, द्वारा यह ग्रंथ रचा गया। इसलिए इसे आर्य समाज की प्रमाणिक पुस्तक

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

माना जाता है। हिन्दी संस्करण २० समुलास १०, पृष्ठ १७१ पर चारों वर्णो के उपदेश हेतु लिखा है:—

मद मांस का प्रयोग करने वाले मलेच्छ, जिनका शरीर मद एवम् मांस के जीवाणुओं से युक्त है, उनके हाथों न खाया जाए क्योंकि वह उपकारी पशुओं की हिंसा करते हैं। गाय के शरीर से दूध, धी, बैल, गाये पैदा होने से चार लाख पचहत्तर हजार छः सौ मनुष्यों को सुख मिलता है इसलिए पशुओं को न स्वयं मारे और न किसी को मारने दें। एक गाय से २० सेर तथा किसी से दो सेर दूध दिन का प्राप्त हो तो औसत दूध गयारह सेर बनता है। कोई गाय अट्ठारह महीने कोई छः महीने तक दूध देती, इनकी औसत बारहा महीने दूध देने की तक होती है। एक गाय के जीवन भर के दूध से एक वार में चौबीस हज़ार मनुष्य तृप्त हो सकते है। उसके छः वछड़े तथा छः बछियाँ होती है। यदि उनमें से दो मर भी जाये तो दस वच जाते है। पाँच वछियों के जीवन भर के दूध को मिला कर एक लाख चौबीस हज़ार मनुष्यों की तृप्ति हो जाती है। अव बैलों के बारे में अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि पाँच बैल अपनी आयु में कम से कम पांच हज़ार मन अनाज पैदा कर सकते है। यदि उसमें से प्रत्येक मनुष्य तीन पाव अनाज खाये तो ढाई लाख मनुष्यों की तृप्ति होती है। दूध और अनाज को मिला कर तीन लाख चौहत्तर हज़ार आठ सौ मनुष्य तृप्त होते हैं। दोनों को मिला कर चार लाख पचहत्तर हज़ार आठ सौ मनुष्य गाय का एक वंश पालता है। इस प्रकार वंश दर वंश गणना करने से असंख्य लोगों की पालना होती है। इसके अतिरिक्त बैल-बैलगाड़ी, सवारी, बोझा उठाने आदि का काम करके मनुष्य के लिए अति उपकारी होते हैं... जिस प्रकार वैल परोपकारी होते हैं उसी प्रकार सांढ भी लाभदायक एवम् परोपकारी होते है। गाय का दूध वुद्धि बढ़ाने के लिए भेंस के दूध से अधिक लाभदायक है। इसलिए आर्य समाजी गाय को मुख्य उपकारी जीव मानते हैं।.....बकरी के दूध से पच्चीस हज़ार नौ सौ बीस मनुष्यों का पालन होता है। हाथी, घोड़े, ऊँट, भेड़ें आदि वहुत उपकारी जीव होते हैं। इसलिए इन पशुओं को मारने वालों को मनुष्य हत्या करने वाला माना जायेगा।

प्रश्न:—यदि सभी अहिंसक हो जाये तो भेडिए मांसाहारी जानवर इतने बढ़ जाएँगें कि सव गायों आदि पशुओं को मार कर खा जाएगें।

उत्तर:—यह राजा का काम है, जो हानिकारक पशु या मनुष्य हों उन्हें दंड के भागी बनाया जाये या प्राणहीन कर दिया जाए।

प्रश्न:—क्या उनका मांस फैंक दिया जाए ?

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

उत्तरः—चाहे फैंक दे, कुते आदि मांसाहारियों को खिला दे या जला दे।

समुलास १२ पृष्ठ ३६३ पर अंकित है—"पशु मार कर यज्ञ-हवन करना शास्त्रों में कहीं नहीं लिखा है।"

इसी समुलास के पृष्ठ १६४ पर अंकित है—मांस खाना उन्हीं वाह्ममार्गी टीकाकारों की लीला है इसलिए उन्हें राक्षस कहना उचित है। वेदों में मांस खाने का उपदेश कहीं भी नहीं लिखा हैं।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

अवैदिक धर्म

पाठक पढ़ चुके हैं कि वैदिक धर्मो के अनुसार हिंसा तथा मांसाहार को अत्यन्त निषिद्ध एवम् पाप माना गया है। इस प्रकरण में इस विषय सम्बन्धी वैदिक धर्मो के अतिरिक्त और प्राचीन धर्मो के मत प्रकट किए जाते हैं—

(अ) बुद्ध धर्म

संसार भर में फैले धर्मो में से बुद्ध धर्म एक है। इस धर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध को यदि प्रीत पैगम्बर का नाम दे दिया जाये तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। महात्मा बुद्ध के समय ही भारत में इस धर्म को राज धर्म होने का सौभाग्य प्राप्त हो गया था। सम्राट अशोक तथा चन्द्रगुप्त मौर्य ने बुद्ध धर्म की दीक्षा ग्रहण की थी। यद्यपि समय के साथ साथ तथा समय के प्रभाव के कारण भारतवर्ष में ही बुद्ध धर्म के अनुयायियों की गिणती दूसरे धर्मो की अपेक्षा कम हो गई है परन्तु लंका, ब्रह्मा, चीन जपान तथा थाईलैंड आदि देशों में इस धर्म ने इतना अधिकार जमा रखा है कि किसी और धर्म को वहाँ पॉव भी नहीं रखने दिया। ऐसे प्रभावशाली बहुसंख्यक धर्म की नींव अहिंसा के सिद्धान्त पर रखी गई थी। 'अहिंसा परमोधर्मा' बुद्ध धर्म के अनुयायिओं का मूल मन्त्र है। महात्मा बुद्ध जी का जीवन अहिंसा तथा दया मयी घटनाओं से परिपूर्ण है।

यहाँ पर पाठको के ज्ञान तथा रूचि के लिए महात्मा जी का वह उपदेश अंकित करना अनुचित न होगा, जो अपने महाराजा विम्वसार के कल्याण हेतु उस समय दिया था जब उनकी यज्ञशाला में एक हजार पशुओं की वलि देने का कार्य प्रारम्भ किया जाने वाला था—गडरिए लोग महाराजा की आज्ञानुसार बहुत से पशुओं को हाँक कर राजधानी की ओर ले जा रहे थे। गर्मी का मौसम था। धूप बहुत तेज थी। एक तो गर्मी के कारण दूसरा चरवाहों के डंडों के डर से पशु अत्याधिक घबराए हुए थे। इन पशुओं में से एक पशु वच्चा ऐसा भी था जिसे चोट लगी हुई थी। वह लंगडा कर बडी कठिनाई से गिरता-पड़ता-उठता चल रहा था। इतना ही नहीं उसके छोटे छोटे पावों में से खून बह रहा था। अक्स्मात् महात्मा बुद्ध भी उसी तरफ आ निकले। वइ उस हृदय विदारक दृष्य को देख नहीं सके। दया के कारण उनका दिल

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

पसीज गया। नीर उनके नेत्रों में से छलकने लगा। छलकते हुए नैनो से वह चरवाहों से पूछने लगे, "इतनी तेज धूप में तुम इन जानवरों को ले कर कहाँ जा रहे हो ?" गडरियों ने उत्तर दियाः—महाराज! सम्राट बिम्बसार के यहाँ महान यज्ञ होने वाला है। वहीं पर एक हज़ार पशुओं की बलि दी जाएगी। हम इन पशुओं को वहीं ले जा रहे हैं। भगवान बुद्ध ने कहा, "हम भी तुम्हारे साथ वहाँ पर चलेगे।

चलते चलते वह राजा बिम्बसार की नगरी में पहुँच गए। आप यज्ञशाला में उपस्थित हो गये। उसी समय एक ऋत्विज् पशु के गले पर तेज तलवार का वार करने के लिए तलवारं उठा कर मन्त्रोच्चारण द्वारा कहने लगा "हे देवो! आप सभी आकर इस पशु को स्वीकार करें। यह महाराज बिम्बसार के कल्याण हेतु बलि चढ़ाया जा रहा है।" यह सुनते ही महात्मा बुद्ध पुकार उठेः—

"राजन् ! इसे पशु को आप मत मारने दो।" इतना कह कर उन्होंने शीघ्रता से झपट कर पशु को थम्भे से खोल दिया। उनके आलौकिक तेज़ के सम्मुख कोई कुछ नहीं कह सका। सभी आवाक् से खड़े के खड़े रह गये। तत्पश्चात् आप राजा को सम्बोधित हो कर बोले, "राजन्! तनिक सोचो! प्राण तो हर कोई किसी के ले सकता है परन्तु क्या कोई किसी को प्राण दे सकता है ? चाहे कोई कितना भी नीच, तुच्छ तथा कमीनी योनि का क्यों न हो, प्राण तो सवको प्यारे ही होते हैं। कोई भी अपने प्राण नहीं देना चाहता।" अपने मन में दया का भाव संजोना चाहिये। ऐसा दयालु जीवन ही अमूल्य निधि है। लोग स्वयं तो निर्दयी होते हैं परन्तु देवों से दया की भीख मॉगते हैं। देवो को मनुष्य एवम् पशु का जीवन एक समान है। जिसको यह ज्ञान प्राप्त हो जाता है कि ममम्न जीव एक में हैं, वह सर्वश्रेष्ठ मनुष्य है। जो पशु घास खा कर अमृत तुल्य दूध देता है, लोग उसी की गर्दन पर छुरी चलाते हैं। शास्त्रों में लिखा है कि अनेक मानव इस मानव योनि से मृत्यु के पश्चात् कई प्रकार के पशु पंक्षियों की योनि धारण करते है तथा आखिर में फिर मनुष्य योनि धारण करते हैं। यह जीव आग की चिनगारी की भांति संसार का चक्र लगाता हुआ कभी चमकता है कभी उसी अग्नि की लपटों में विलीन हो जाता है। पशुओं को मारना निश्चित रूप से पाप है। इस प्रकार जीव की गति में रूकावट डालना अन्याय है। जीव खून तथा हत्या से कभी भी शुद्ध नहीं हो सकता । इसी प्रकार यदि देवते भले एवम् भद्र हैं तो इस प्रकार की वलि से वह कतई प्रसन्न नहीं हो सकते । यदि वह खुँखार राक्षस प्रवृति के हैं तो उन्हें प्रसन्न करने की आवश्यकता ही क्या है। किसी भी पुरूष को अपने किए पाप का फल ही भोगना पड़ता है। उसके

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

किए पाप कर्मो का फल किसी भी पशु को रत्ती भर भी नहीं भोगना पड़ता। न ही उसके सिर पर चढ़ता है या उसे लगता है। पाप कर्मो का भागी वह स्वयं ही बनेगा, उसके स्थान पर कोई दूसरा कभी नहीं बनेगा। जीवन में किए गए कर्मो का हिसाब-किताब प्रत्येक प्राणिमात्र को देना पड़ता है। जिस प्रकार के विचार प्राणि के जीवन में होते हैं उसी प्रकार मृत्यु के पश्चात् भली या बुरी योनि मिलती है। यह अटल नियम है। जिसको होनी कहते हैं। वह मानव के कर्मो का ही परिणाम है।

भगवान बुद्ध क़ी इस दयामयी वाणी ने सबको मन्त्र मुग्ध कर दिया। सबने ही दया भाव ग्रहण करते हुए बलि के विचार का परित्याग कर दिया। ऋत्विज् ने तमस अग्नि यहाँ वहाँ बिखेर दी। सम्राट विम्वसार सहित सभी लोग महात्मा बुद्ध की शरण में आ गये। परिणामस्वरूप अगले दिन सम्राट ने निम्नलिखित आदेश सारे शहर में ऐलान कर दिया। इसकी नक्ल स्तम्भों पर खुदवा कर, स्तम्भों को जगह जगह गड़वा दियाः—

राजकीय आदेश

"महाराज विम्वसार आदेश देते हैं कि यज वलि के लिए, अपने खाने के लिए आज तक जो घर घर में भिन्न भिन्न प्रकार के पशुओं को मारा जाता है, उसे पूर्तिया बंद कर दिया जाए। कोई भी व्यक्ति किसी का खून न बहाए। सभी जीव एक समान है। दयालु पर ही दया की जाती है। इसलिए दया धारण करो। किसी को न मारो। यह स्तम्भ आज तक अपने उसी स्थान पर टिके हुए हैं।" (महात्मा वुद्ध) लेखक गुरां दित्ता खन्ना सदस्य नागरी प्रचारणी सभा कांशी पृष्ठ ५० से ५४) भगवान वुद्ध तो जीव हत्या करने वाले को मानव का दर्जा ही नहीं देते थे वल्कि चंडाल मानते हुए कहते थेः—

'जो अपने हाथों से पशु पक्षियों की हत्या करता है वह निर्दयी है। चंडाल है।" (महात्मा वुद्ध, पृष्ठ ५९)

(आ) जैन धर्म

जैन धर्म हमारे देश का महान् संयममयी, महावर्ती एवम् विश्वप्रसिद्ध धर्म माना जाता है। इसके संस्थापकों एवम् प्रचारकों ने पाँच महाव्रतों में से प्रथम स्थान अहिंसा को दिया है, जैन धर्म ने अहिंसा का अत्यन्त सूक्ष्मता से अनुभव किया है। इसीलिए अहिंसा शब्द की सूक्ष्म से सूक्ष्म व्याख्या उनके द्वारा की गई है। एक जैनी के हृदय में अदृश्य जीवों की सुरक्षा का भाव भी विद्यमान है। जैन धर्म अहिंसा को विश्व-शान्ति की अधारशिला मानता है इसी प्रकार हिंसा को विश्व अशान्ति का कारण। जैन धर्म का कथन है

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

कि धर्मिक, समाजिक तथा राजनैतिक आदि सभी परिस्थितियों में अहिंसा का पालन करना अनिवार्य है। जैन धर्म में हिंसा के बारे बताते हुए कहा है कि रागादि विशिष्ट हो कर अपने तथा दूसरों के प्राणों का घात करना अहिंसा कहलाता है—"प्रमत्त योगात प्राण व्यपरोपणं हिंसा।"

हिंसा दो प्रकार की

हिंसा दो प्रकार की मानी जाती है। प्रथम-द्रव्य हिंसा द्वितीयः—भाव हिंसा। प्राणों के घात को द्रव्य हिंसा की संज्ञा दी गई है। क्रोध आदि के फलस्वरूप हृदय में से सत्य, संतोष, विवेक आदि दैविक गुणों के नाश को भाव हिंसा का नाम दिया गया है। इन दोनों प्रकार की अहिंसा से मुक्ति प्राप्त करने को अहिंसा व्रत धारण करना कहा गया है। भाव हिंसा का रूप, अहिंसा का कितना सूक्ष्म अनुभव किया जाना है। वास्तविकता यह है कि किसी के प्राण लेने से पहले हृदय में हिंसा का इरादा उत्पन्न होता है। पहले भाव हिंसा ने जन्म लिया तत्पश्चात् द्रव्य हिंसा ने रूप धारण किया। जैन मत का अभिप्राय यह है कि हदय में कभी भी भाव हिंसा को पनपने नहीं देना चाहिये। मनुष्य की समस्त क्रियाएँ उसके इन्हीं मनोभावों पर ही केन्द्रित नथा आधारित होती हैं। श्री आत्माराम शताब्दी ग्रंथ के हिन्दी संस्करण के पृष्ठ १३९ पर अंकित है, कि यदि हम सही शब्दों में वास्तविक शान्ति तथा वास्तविक स्वाधीनता की प्राप्ति चाहते हैं तो हमें अहिंसक मनोवृतियों से अपनी मनोवृतियों को पवित्र रखना चाहिये। इसलिए शान्ति, क्षमा, संतोष आदि कई प्रकार के उत्तम गुणों से पैदा होने वाला भाव अहिंसा ही परम ब्रह्म है। स्वामी समन्त भद्र का यह प्रवचन सदा ही स्मरण रखने योग्य है:—"अहिंसा भूताना जगति विदितं ब्रह्म परमं।

(अ) देव समाज

देव समाज में मांस खाने को एक बड़ी बुराई माना जाता है। इस समाज की ओर से इस विषय पर दिसम्बर १९३५ ई० में एक ट्रैक्ट प्रकाशित हुआ जिसकी भूमिका में लिखा हुआ है:—

"मांसाहार उन आठ वड़ी बुराईयों तथा गुनाहों में से एक है जिनको देव समाज में वहुत ही बुरी तथा हानिकारक समझा जाता है जिनका त्याग करना देव समाज की केवल मात्र सदस्यता प्राप्त करने के लिए भी अनिवार्य शर्त है।" इसके आगे लिखा है:—"राक्षसी तामसी भोजन के हानिकारक प्रभावों तथा और कुपाच्यों के कारण शरीरिक रोग बढ़ रहे है तथा स्वास्थ्य को वहुत अधिक हानि पहुँचा रहे हैं। इस लिए आवश्यक है कि और बुराईयों

के साथ साथ मांस खाने की अत्याधिक हानिकारक बुराई को भी दूर करने के लिए प्रयत्लशील तथा प्रयासरत रहा जाए। मानव समाज में से आत्मा तथा शरीर के लिए इस कठोर, निर्दयी, हानिकारक बुराई को जड़ से उखाड़ दिया जाना चाहिए।"

पुस्तक गोश्तखोर के पृष्ठ ४७ पर इसके चार कारणों के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए अंकित है कि :—

१. मांस हमारी प्राकृतिक खुराक नहीं हैं।

२. मांस एक अति नकारात्मक प्रकार की अधूरी एवम् खराव खुराक है।

३. मांस स्वास्थ्यवर्धक न होकर विमारियों को जन्म देने वाली खुराक है।

४. मांस निर्बलता पैदा करने वाली तथा जीवन को घटाने वाली खुराक है।

गम्भीर प्रश्नः—इसी पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ ६५ पर संजीदा सवालात् के शीर्षक के अन्तर्गत मानव सम्मुख एक प्रकार से पुनरावेदन किया गया है:—

"हे मानव! क्या तुम्हारे लिए यह उचित है कि शक्तिशाली हो कर निर्वल तथा निर्दोष पशुओं का जीवन तथा उनकी खुशियों का अन्त करें ? अपने पेट को उनकी कर्बो के लिए प्रयोग करें, क्या यह तुम्हें उचित अनुभव होता है? क्या तुम्हें यह शोभा देता है कि तुम लाभदायक पशुओं से अनेक प्रकार की सेवा प्राप्त करके कृतघ्न वन कर उनका खून वहाने में भागीदार वनो ? क्या यह सूझ बूझ का काम है? तुम प्राकृतिक साफ, स्वास्थ्यवर्दक, शक्तिप्रदान करने वाली तथा आयु को लम्वा करने वाली स्वादिष्ट खुराक को छोड़ कर निषिद्ध, मानव धर्म से गिराने वाली मांस की खुराक खाओ जो प्रायः रोगाणुओं से परिपूर्ण एवम् बोरिक एसिड तथा और विषैले तत्वों से परिपूर्ण होती है ? इसी कारण वह निर्दयता के साथ साथ मनुष्य में अनेक प्रकार के रोग पैदा करने का कारण भी होती है। मानव-आयु को बहुत ही कम कर देती है। इसलिए स्वयं का सुधार करो और यह खुराक खाने से रूको, सोचो तथा इसका परित्याग करो।

(ई) ईसाई धर्म

१. ईसा मसीह का एक पीटर नामक अनुयायी था। उसने एक बार स्वप्न में देखा कि एक चादर नीचे उतर कर आ रही है जिसमें व्रह्मांड भर के

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

समस्त पक्षी बंधे हुए हैं। पीटर को आकाशवाणी हुई कि इन सभी पक्षियों को खाओ। पीटर ने अस्वीकार कर दिया। आकाशवाणी तीन वार हुई। वह तीनों वार इन्कार ही करता रहा। अन्त में वह चादर लुप्त हो गई। पीटर की जब आँखे खुली तो उसेन स्वयं को ज्ञान सम्पन अनुभव किया।

(अंजीलमती)

२. रोम की पत्ती बाब १४ में लिखा है, कि "तुम्हारा खुदा कहता है, मेरे बनाये काम को न विगाड़ो? जिससे तुम्हारा भाई ठोकर खाए, वह काम न करो। मांस खाना, शराब पीना अच्छी बात नहीं। इसलिए न मांस खाओ न शराब पियो।

३. ईसाई मत की दस आज्ञाओं में चौथी आज्ञा है कि तुम हत्या न करो।

४. "यदि कोई तुम्हारी दायी गाल पर थप्पड़ मारता है तो उसके सामने बायी गाल भी कर दो। अपने शत्रुओं के साथ भी प्यार करो। जो तुम्हारी बुराई करता है उसे भी आशीर्वाद दो। जो तुम्हारी बुराई करता है तुम उसकी भी भलाई करो, तुम उसके लिए भी प्रार्थना करो । जिससे तुम स्वर्गवासी पिता की सन्तान तथा खुदा के सच्चे सपूत कहलवाने के अधिकारी बनो।

(अंजील)

उपरालिखित अनुसार ईसाई धर्म-पुस्तकों के प्रसंगों से प्रकट होता है कि ईसाई मत के धार्मिक नियम मांस खाने तथा हिंसा के विरोधी है।

५. श्री मान सिडनी एच. बैरे लन्दन, अपनी पुस्तक 'टैस्टीमोनी आफ साईस इन फेवर आफ नेचुरल एण्ड ह्यूयन डाइट के पृष्ठ २ पर लिखते हैः—

"ईसाईयों को अपने वड़े गुरु (यसु मसीह) के इन शब्दों को सदा स्मरण रखना चाहिए कि—जाओ एवम् जानो कि शब्दों के क्या अर्थ हैः—मैं रहम चाहता हूँ न कि कुर्वानी

(उ) इस्लाम धर्म

इस्लाम मत में हज़रत मुहम्मद साहिब अल्ला के रसूल (पैगम्बर) माने जाते हैं। आप द्वारा जो कुरान शरीफ नाज़िल हुआ, मुस्लमान उसे धार्मिक पवित्र ग्रंथ स्वीकार करते हैं। यह भी स्वीकार करते है कि उसमें अल्लाहपाक को रहमान एवम् रहीम माना गया है। जिसका तात्पर्य है कि ईश्वर दयालु तथा कृपालु है। अब विचारणीय विषय यह है कि जब स्वयं हाकम दयालु तथा कृपालु है तो वह खलकत को निर्दयी एवम् कठोरचित होने की आज्ञा कैसे दे सकता है ?

मोमनः—एक मुसमान को मोमन का ख़िताब दिया जाता है जिससे मुराद यह होती है उसका हृदय दूसरे के दुःख को देख कर पसीज जाये, मोम की भांति पिघल जाए परन्तु जो मुसलमान मूक पशुओं के गले पर छुरी चला कर प्रसन्नता प्राप्ति का अनुभव करता है उस पर मोमन शब्द कभी भी लागू नहीं हो सकता है।

कुर्बानी :—ईस्लाम में कुर्बानी को मद्-ए-नज़र रख कर मांस खाना उचित माना जाता है। परन्तु कुर्बानी का मसला अल्ला पाक के नाम अपनी सर्वप्रिय वस्तु को कुर्बान करने की शिक्षा देता है। जब हज़रत ईब्राहीम साहिब से खुदा ने सर्वप्रिय वस्तु की कुर्बानी माँगी नो आपने बलिदान के लिए बकरियाँ आदि कई जानवर पेश किए। परन्तु वह अस्वीकृत कर दिये गये। अन्ततः आपने प्यारे बेटे, लख्ते ज़िगर ईस्माईल को पेश कर दिया। जव ज़िव्ह करने लगे तो हज़रत ज्रिव्राईल ने ईस्माईल के स्थान पर परालौकिक दुंवा रख दिया। उसी समय से कुर्वानी की प्रथा प्रचलित हुई है। इसलिए कुर्बानी के संदर्भ में सर्वप्रियस्वयं या अपने सपुत्र की जान को कुर्वान करना उचित माना जाता है न कि बकरों, दुंबों तथा गायों की गर्दन पर छुरी फेर कर रहीम तथा रहमान की प्यारी मख्लूक को हलाल करके अपने पेट को कब्रस्तान बनाना। सूफी मुस्लमान अपने नफ़स की कुर्बानी को ही सर्वोतम कुर्वानी समझते है, परन्तु यदि कोई हज़रत इब्राहीम की नकल करके कुर्बानी करना चाहे तो उसका कर्तव्य वनता है कि उनकी भांति अपने पुत्र को ज़िब्ह करने के लिए तत्पर रहे। उसकी जगह पर यदि परालौकिक दुंवा हजरत ज़िब्राईल ले आएँ तो कुर्बानी स्वीकार्य समझनी चाहिये।

हिरनी की साखी

"मोअज़्ज़ा महुम्मदी" में शेख इमामुद्दीन ने पृष्ठ १२ से १६ तक एक ऐसा वृतान्त वर्णन किया है, जिसको पढ़कर मानना पड़ता है कि हज़रत मुहम्मद साहिब का दिल जानवरों एवम् संकटग्रस्त पशुओं के लिए दया तथा रहम का कभी न समाप्त होने वाला वाला चश्मा था। यह किस्सा—"कश्फे करामात हज़रत सुअल्ललाह अलैहि वसल्लम में से पंजावी नज़्म में प्रकाशित किया गया है। जिसके अनिवार्य अंश पाठकों के लिए प्रस्तुत हैं—

"अरब वलाइत अंदर सी इक जंगल वहुत नूरानी।
की तारीफ करां मैं उस दी वाह कुदरत सुवहानी।
इस जंगल विच इक हैसी हिरनी, दो वच्चे उस जाए।
नाल मुहव्वत करे दिलासा, घुट घुट शीर पिलाए।

इक दिन उस उजाड़ अन्दर, कोई शिकारी आया,
जानवरां दे पकड़न कारण, ओस कमंद लगाइआ।
उस दिन हिरनी बचिआँ वाली, चरदी जंगल आई।
धोखा दे शिकारी ज़ालिम विच कमंद फसाई।
आज़ज हरनी ज़ोर लगावे, सखत फाही न टुट्टे।
लम्मी पैके करे अवाज़ गर्दन धरती सुट्टे
नाल फरेब असीर कीतोई, ऐ मूर्ख बदचाली
ऐ ज़ालिम की ज़ुल्म कीतोई, हां मैं बच्चिया वाली।
बक मेरे दो भुक्खे मरसन, तूँ सिर खून लिखावें।
नाल अफ़सोस अखेदी हिरनी, शाला रज्ज ना खावें।
रोवे ते कुरलावे हरनी, ना सी कोल शिकारी।
दूर गिया होर मिरिआ पिछे भुल गया राह बारी।
हिरनी ज़ोर तमाम लगाया, आखिर वस्स न चले।
आखे हार नसीबां दित्ती, पै गये तंद अवल्ले।

पुकार-हिरनी

या रब्बा इक वार छुडाई, एस सितम दी फाही।
बक मेरे दो फिरन ढुँढेंदे, जंगल बूहे काही।
कौण उन्हानूं दुध पिलावे, तड़फ तड़फ मर जावन।
जंगल अंदर लक्ख अफ़ाता, मार उन्हानू खावन।
बच्चिआं दा अफयोस ज़िगर विच, नीर पलट्टे अखीं।
ज़ामन तूं इकराम कुन्नदा, ऐस अज़ाबों रक्खी।
कौण उन्हांनू सब्जी देवे, कौण दिलासा करसी।
इक मोइआ तिरे मातम होसन, हिरनी इक न मरसी।
मैथों लाल विछुने रव्वा, भी इक बार मिलाई।
फाही दे तसदीए कोलों, मैनू आप छुडाई।

हज़रत नू वही

हिरनी दी फरियाद सुणी रब्ब, झब्दे वही बुलाइआ।
हबीब मेरे नू ख़बर पुचाई, खालिक एह फुरमाइआ।
नाल शिताबी हाज़र होइआ, जबराईल उथाईं।
आख सलाम दित्ती खुशख़बरी, पाक मुहम्मद ताईं।
हिरनी जंगल फाही फाथी, करदी गिरीआ ज़ारी।
ऐ नबीआ छुडवा दे उस नू, तोड़ कमंद शिकारी।

जल्दी अमल बजा आंदोने, जो अल्ला फरमाइआ।
नंगे कदम उठिया पैगम्बर, तरफ जंगल दी धाइआ।
आ पहुँचे उस थाई साहिब, ढूंद करेंदे वारी।
फाही फाथीं हिरनी डिठी, पास नही शिकारी।
वेखदिआं उह हिरनी कम्बी, मत शिकारी आइआ।
की जाणां की है मुसीबत, धुर दा लेख लिखाइआ।

हे हिरनी ना डर

हज़रत कहिआ जा उस हरनी, मैं सय्याद न तेरा।
दिल विच गैर ख्यांल ना रखी, नेक इरादा मेरा।
हिरनी फेर करे चा अरज़ा, नेक दसीवें कोई।
कढी पैर मेरा इस फाहीओ, नाल फिराके रोई।
मैं जंगल दा मिरीयों साहिब, घाह हमेशा खावां।
भर के पेट रहां नित राज़ी, किसे ना कुझ गवावां
इक हरनी दो बच्चे छोटे, नाल दिलासे पाला।
सख्ती नरमी जो कुझ आवे, जंगल दे विच जालां।
चौथा पहर फाहिआ किसे मैंनू, मुड़ फिर आप ना आईआ।
भुक्खे बक रहे विच जंगल, नाहीं शीर पिलाइआ।
है अफसोस मिला इक वारीं, बच्चिआं शीर पिलावां।
नाम अल्ला दे कट्टी फाही, देख बकां नू आवां।
पाक मुहम्मद फाही कट्टी, हिरनी पैर छुडाइआ।
हिरनी बदले सरवर आलम, कदम मुबारक फाहिआ।
लै रूख्सत पैगम्बर कोलों, हिरनी पहुँची डेरे।
बच्चे देख मिले आ दूरों, करन आवाज़ उचेरे।
जा पैगम्बर हिरनी कढ्ढी, आपणा कदम फसाइआ
हरनी जा मिली फरजंदा, बाद शिकारी आइआ।
फाही अंदर वेख नबी नूं, बहुत वधाइउस गुस्सा।
ग़स्से नाल करे मुःह टेढा, वढ्ढे आपणा जुस्सा।
दस्स कहे जे ज़िन्दगी चाहें, झब दे मिरयों मेरा।
नहीं ता नाल तीर इस वेले, ज़ुदा करां सिर तेरा

नबी का जवाब

पाक नबी ने हस्स फुरमाइआ, ना कर लहिर वधेरी।
पैर कढ्ढीं उत वेले फाहीओं, मिले इमानत तेरी।

फाही तेरी हरनी फाथी, ऐपर बच्चिआं वाली।
गिरीआ कर उस किहा असानूं, हो के वहुत सवाली।
चार पहिर थी फाही फाथी, बच्चिआ शीर न पीता।
इक घड़ी दा अहिद मुक्करर, हिरनी मैं थी कीता।
शीर पिला फरज़ंदा ताईं, वत शितावी आवां।
फाहीओं कढ्ढ तुसानूं साहिब, आपणा पैर फसावां।

माछी

सुण गुफ़तार नवी थी माछी, आखे कौण ऐ दानां,
कौल इकरार वराबर कीते, किस दे नाल हैवानां।
जे कर वादा करे वफाई, नाल तुसाडे हिरनी।
मैं वी दीन तुसाडे अंदर, लग रहांगा सरनी।

हिरनी

जा माछी एह सुखन सुणाए, सरवर आलम ताईं।
उचरां नूं आ हिरनी पहुँची, वच्चिआं सणे उथाईं।
आ के हिरनी पाक नबी दे, कदमीं सीस निवाइआ।
आख शहादत कलमां मुःह थीं, शीरी सुखन अलाइआ।
मै आजज़ दे विछड़े बच्चे, भी मुड तुसां मिलाए।
मैं मसकीन एह बच्चे मेरे पास, तुसां दे आए।
या हज़रत हुणा शैद शिकारी, मैनू करो हवाले।
ऐपर मरे बक बे उज़रे, नाम खुदा दे पाले।
खत्म होई ज़िन्दगानी मेरी, ज़िव्ह करे शिकारी।
पर अफसोस है बच्चियाँ संदा, खून नैणा थी ज़ारी।

हिरनी दे बच्चे

बच्चे बोल उठे उस वेले, नाल माई दे मरसां,
वाझ माई दे जंगल अंदर, किवें इक्कले चरसां।
इक जंगल, इक बाल अजाणे, नाल ना आपणी माई
बाझ अल्ला कोई होर न सानू, ना कोई सज्जन भाई।
जंगल बरल दरिंदे लक्खा, होर कई ने शिकारी।
कूड़ हयाती माई बाझों, कौण करे दिलदारी।

माछी ते असर (माछी पर प्रभाव)

माछी सुण मिरीओं दी बातां, दिल विच शुकर गुज़ारे।
एह पैगम्बर मुरसल सच्चा, रोशन है जग सारे।

मिरीओं करन कलाम इनसानां, एह हुरमत सरवर दी,
उस दा आखिआ साहिब मन्ने, खातिर एह दिलबर दी।

माछी दी बेनती (माछी की विनती)

तां फिर माछी अरज़ी होइआ, पाक मुहम्मद अग्गे।
जिन्न इनसान हैवान परिंदे, कहे तुसाडे लगे।
मैं भुलां हां बख्शी साहिब, जो कुझ हो गुसताखी,
सखत कलाम बेअदवी वाली, नाल खताए आखी,
तं साहिब पैगम्बर सच्चा, कलमा दस्स जबानी।
राहि शैतानी मैं थी छुट्टे, भेद बता रहिमानी।

माछी नू नाम दान (माझी को नाम दान)

माछी ताईं पाक मुहम्मद, कलमां सच्चा पढ़ाइआ।
अमर नहीं जो हुक्म शरहा दा, हक्क हक्क सिखाइआ।
हरनी जंगल रूखसत कीती, नाल दोवें तिस वच्चे।
वाह शाबास रवाना होई, वाह पैगम्बर सच्चे।

इस प्रसंग से, हज़रत मुहम्मद साहिव का खुदा के हुक्म के कारण जानवरों पर रहम करके, उनके स्थान पर स्वयं को शिकारी के जाल में फंसाना, शिकारी पर अपनी इलाही शक्ति का प्रभाव डाल कर हिरनी को उसके वच्चों सहित शिकारी के मौत के पंजे से छुडाना, माछी (शिकारी) से यह नीच एवम् वुरा काम छुड़वा कर उस परवरदिगार की इवादत में लगाना, यह सिद्ध करता है कि हजरत साहिव अत्यन्त अहिंसक एवम् दयालू, प्रवृति के मानव थे जो दूसरे जीवों का दुःख हरने के लिए स्वयं को शिकारियों के जाल में फँसाने से पीछे नहीं हटते थे। पवित्र हदीस में इस विषय के सम्बन्ध में इतना लिखा मिलता है कि—"जनाव रिसालत मआव सुअल्लालह अलहि वस्सलम ने फुरमाया है कि तमाम मख़लूक अल्ला की औलाद है, इसलिए इन्सान को चाहिए कि जैसी हमदर्दी स्वयं की औलाद से करे, वैसी ही तमाम सख़लूक से करे।"

डाक्टर मैहदी हुसैन

विश्ववाणी' मासिक पत्र इलाहवाद के मई १९४१ ई. के संस्करण में 'सम्प्रदायिक एकता' के शीर्षक के अन्तर्गत पृष्ठ ६ पर एक लेख प्रकाशित हुआ है। लेखक श्रीमान डाक्टर मैहदी हुसैन एम.ए. पी.एच.डी. लिट ने अपने इस लेख में अहिंसा का वर्णन करते हुए लिखा है, कि—किसी प्रकार की ज़व्रदस्ती, आक्रमण, अत्याचार, नर हत्या या कत्ल की आज्ञा देना तो दूर रहा, इस्लाम तो अहिंसा पर वल देता है। अनेक प्रमुख सूफी संतों ने मांसाहार

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

करने से रोका है। पशु हत्या को भी वह बिल्कुल नहीं चाहते थे। स्वयं पैगम्बर साहिब, उनकी इकलौती बेटी फातिमा उसका पती अली, उनके बेटे हसन तथा हुसैन प्रायः जो खा कर निर्वाह करते थे। उनके भोजन में नियमपूर्वक जौ कि रोटी, नमक, तेल तथा दूध होता था। यह खाना भी उनको सदा नसीब नहीं होता था।"

(पृष्ठ ५१५ कालम प्रथमक में डाक्टर मैहदी हुसैन साहिब ने व्यान किया है:—

"पैगम्बर मानव मात्र के पथ प्रदर्शक के रूप में आए, उन्होंने उसी रूप में अपने अनुयायिओं को अहिंसा का आदेश दिया। उन्होंने कहा कि परमात्मा ने उनको एक विशेष आज्ञा दे कर इस धरती पर भेजा है। "हम ने तुम्हें दुनियाँ पर सिर्फ रहम करने के लिए भेजा है।" (पृष्ठ २१-१०६)

आगे दूसरे पैरे में आप लिखते है:—

"मुहम्मद ने पशुओं को भी दुःख देने तथा चोट पहुँचाने को रोका है—यदि कोई व्यक्ति किसी गौरेय्या, चिड़ी को भी या किसी और को भी मारता है तो ख़ुदा इस बारे में ज़वावतलव करेगा। जो ख़ुदा के पैदा किए हुए लोगों पर रहम करता है ख़ुदा उस पर रहम करता है। अल्ला के समस्त प्राणी उसका परिवार है क्योंकि वह उसी सहारे जीते हैं। इसलिए अल्ला को सवसे प्रिय वही शख्स है जो उसके परिवार के साथ भलाई करता है। अल्ला सर्वाधिक किसको पसन्द करता है।"

सर्वप्रथम उसी को जो उसके प्राणियों के साथ सर्वाधिक भलाई करता है।

इसके आगे पैगम्बर साहिब का कथन इस प्रकार है—"इन जानवरों की निसवत ख़ुदा से डरें। जब वह सवारी कराने योग्य हो जाए, तभी उन पर सवारी करें और जब वह थक जाएँ, तो उसी समय उन पर से उतर जाएँ।"

"एक दिन अपनी यात्रा के दौरान मुहम्मद साहिब एक उचित स्थान देख कर नमाज पढ़ने के लिए ऊँट से उतर गए परन्तु नमाज़ उन्होंनें तब तक नहीं पड़ी जब तक ऊँट की काठी नहीं खोली गई।"

पहले कालम के अन्तिम पैरे में डाक्टर साहिब का लिखा हुआ है, पैगम्बर ने अपने अनुयायिओं से कहा कि "तुम सृजन हार से प्यार करते हो तो तुमको सर्वप्रथम उसके प्राणियों से प्यार करना चाहिए।" इससे आगे लिखा है—"वह मानवाधिकारों के साथ साथ जानवरों के अधिकारों पर भी वल देते थे। निःसंदेह इन मूक पशुओं पर उपकार करने पर, उनको पानी पिलाने

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

पर मिलने वाले फल के समान का फल, ईनाम मिलेगा।"

पृष्ठ ५१५ के दूसरे कालम में लिखा है—अपने उपदेशों की पैरबी करते हुए, पैगम्बर साहिब ने एक चरित्रहीन स्त्री को इसलिए क्षमा कर दिया क्योंकि उसने एक कुत्ते पर दया की थी। वह कुत्ता प्यास के मारे अपनी जिह्वा वाहर निकाल कर लगभग मरने ही वाला था, जब उस स्त्रिी ने अपने जूते को अपने दुपट्टे से वांध कर, कुँए में से पानी निकाल कर, कुत्ते को पिलाया था। अतः पैगम्वर साहिव ने इस पुण्य के कार्य वश उसको चरित्रहीनता के दोप से मुक्त कर दिया।

पैरा न. ३ में डाक्टर साहव लिखते हैं—'कुरान मानव जीवन तथा जानवरों के जीवन को एक जैसा महत्व देता है।"

संसार का हर पशु तथा पँखों की सहायता से उड़ने वाला पक्षी मानव समान ही है। तथा इन सवने परमात्मा के पास वापिस जाना ही है।"

पृष्ठ ५१६ कालम प्रथम में लिखते हैं कि—पैगम्वर साहिव ने देखा कि कुछ लोग एक छत्तरे पर तीर चलाने के लिए निशाना साध रहे है। मुहम्मद साहिव को इस दृश्य से घृणा महसूस हुई। फलस्वरूप उन्होंने तीरंदाज़ी वंद करवा दी। उन्होंने फुरमाया—"असहाय एवम् गरीब पशु को अंगहीन न करो।" एक और अवसर पर आपने कहा कि—"किसी जानवर की ज़िन्दगी तीर के साथ निशाना लगा कर मत लो। फंदे से वांध कर, भी किसी को ज़िन्दगी लेने के लिए पैगम्वर साहिव ने रोका। उन्होंने जानवरों को आपस में लड़ाने से भी रोका।"

पृष्ठ ५१६ के दूसरे कालम के अन्तिम पैरे में लिखा है—

पैगम्वर साहिव ने जीवित पक्षियों पर निशाने लगाने के लिए रोका। उन्होंने उन लोगों पर भी आपत्ति की जो अपने ऊँटों को तंग करते थे। उनके साथ वुरा व्यवहार करते थे। जव उनके कुछ शिष्यों ने दीमक के घर को आग लगा दी, तो उन्होंने उस आग का बुझाने के लिए उन्हें मजवूर किया। आपसे पहले यह प्रथा प्रचलित थी कि जो मनुष्य मर जाता था उसके ऊँट को भी उसके साथ उसकी कब्र पर वांध आते थे। वह भी भूखा प्यासा मर जाता था। आपने इस प्रथा को भी वंद करवा दिया। एक और प्रथा थी भेड़ों को नज़र लगने से वचाने के लिए उनके झुंड में से कई भेड़ों को अन्धा कर देते थे। आपने इस प्रथा पर रोक लगा दी। वर्षा हो इसलिए वैलों की पूँछ से जलती हुई मशाल वांध कर उनको खुले में छोड़ दते थे। इस प्रथा को भी वंद करवा दिया। घोड़े को मुःह पर मारना भी वंद करवा दिया। गधों के मुःह पर दागना तथा मारना भी बंद करवा दिया।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

'विश्ववाणी' में प्रकाशित डाक्टर साहिव के लेख के इन उपरालिखित अंशों से तथा मोअजज़ा मुहम्मदी से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस्लाम धर्म की वास्तविक तालीम के संदर्भ में मनुष्य को अहिंसक होना चाहिए। डाक्टर साहिव के अनुसार मुहम्मद साहिव को जानवरों पर इतना रहम आता था कि वह उनकी रत्तीभर तकलीफ भी सहन नहीं कर सकते थे। वह रहम करने की शिक्षा भी देते थे तथा रहम करने वालों के गुनाहों को भी माफ कर देते थे।

हज़रत शेख साअदी ईरान के एक विश्व विख्यात महात्मा आलिम फाज़िल हो चुके है। आप फारसी भाषा के उच्च कोटि के विद्धान थे। आपने गुलिसतां, वोसता आदि फारसी भाषा में कई पुस्तके रची जिनमें मानव भलाई के अनेक उपदेश है। आपने अपनी गुलिस्तां पुस्तक में पक्षी की उपमा में एक वहुत ही उमदा शेयर लिखते हुए अहिंसा की प्रशंसा की है। आपका कथन है कि हुमा पक्षी शेष पक्षियों से इसलिए वढ़प्पन का हकदार है क्योंकि वह सूखी हड्डियों को खा कर अपना जीवन निर्वाह करता है तथा किसी को भी तंग नहीं करता, दुःख नहीं देता है:—

"हुमा वर हमा मुरगा अज़ा शरफ दारद। कि उस्तरवां खुर्द व ताइरे निआ ज़ारद। हिन्दी भाषा में इसका तर्जुमा इस प्रकार है:—

सूखे अस्थन चुगत जो जी न दुखावें कोइे

तिस पंछी की छाइ पर क्यों न छत्रपति होइ

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

विश्व विख्यात डाक्टरों तथा विद्वानों के निर्णय

(१) बंगाल सरकार द्वारा स्थापित कैमीकल परीक्षिक राय बहादुर डाक्टर चूनी लाल बोस आई.एस.ओ.एस.बी एम.सी.एस. ने १६१८ ई० को विज्ञान (साईंस) कनवैनशन के सम्मुखर एक कथन को वाचा जिसके पृष्ठ संख्या १०४ पर कहा गया थाः—

एक समय था जब मांस सर्वाधिक शक्ति उत्पन्न करने वाली खुराक मानी जाती थी। परन्तु अब यह विचार पूर्ण रूप से बदल गया है।

हमारी प्रतिदिन की खुराक में रोटी, चावल, घी, मक्खन, वनस्पति तेल एवम् शक्कर आदि अधिक कार्य करने के लिए हर प्रकार की ऊर्जा तथा शक्ति को उत्पन्न करते हैं।

(अ) यही डाक्टर बोस अपनी पत्रिका 'हैल्थ एंड हैपीनस' कलकता, अक्तूबर १६२० में लिखते हैः—

हिन्दुस्तान की अबादी का अधिकतर भाग मांस तथा मछली को छूता तक नहीं। उनकी खुराक में प्रोटीनपुक्त सर्वाधिक तथा सर्वश्रेष्ठ खाद्य पदार्थ दूध या दहीं से उत्पादित होते है।

(२) डाक्टर राबर्ट ए.एम.बी.बी.एस.सी.सी. लंडन अपनी पुस्तक 'फसर्ट स्टेज़ हाईजैन' के पृष्ठ ६६ पर लिखते हैः—

आम दाले मटर, लोबिया तथा मसूर हैं। यह और सब्जियों से विशेषता रखती है क्योंकि इनमें और दूसरी सब्ज़ियों की अपेक्षा प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है। पनीर के बिना सभी खाद्य पदार्थो में से इनमें अधिक प्रोटीन होती है।

(३) डाक्टर टामस डिटन का कथन है—फलों में ८० प्रतिशत से अधिक जल, ८ से १२ प्रतिशत तक चीनी, १ से ४ प्रतिशत तक नमक की मात्रा पाई जाती है। इनका पानी वहुत उत्तम तथा खून को साफ करने वाला होता है। भाव रक्त शोधक होता है। साफ सुथरी चीनी जो खून में शीघ्रातिशीघ्र मिल जाती है तथा उसमें वहुत ही मूल्यवान नमकीन मादा भी होता। उचित मात्रा में पके हुए ताजे या डिब्बों में सम्भाल के रखे हुए फल, धूप में सुखाए हुए फल अत्याधिक बलवर्धक होते है। खाने वाली नली में पाचन क्रिया का जो कार्य होता है उसकी समानता को फल ही रखते हैं। रक्त को क्षार दे

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

कर ठंडा तथा शुद्ध करते हैं। इतना ही नही; शरीर के खराब तन्तुओं की मुरम्मत का कार्य भी इन्हीं को ही सोंपा गया है। शरीर के प्रत्येक भाग को जीवन, में ऊर्जा एवम् बल प्रदान करते हैं।

(रैशनल आफ वैज़ीटेरिअनिज़म पृष्ठ ७ से ८)

(४) डाक्टर बैलॅ अपने अनुभव के आधार पर लिखते है: बहुत से लोगों के खून के चिन्ह लिये गये जिनमें से ठीक उनके ही निकले जो मांसाहारी नहीं थे। (नेचरल एंड ह्यूमन डाइट के पृष्ठ १८)

इसी किताब के पृष्ठ २६८ पर मिस्टर सिडनी बैरेड का कथन अंकित है कि:—डाक्टर होरेस गरीले सम्पादक न्यूयार्क ट्रिबिऊन अपने अनुभव के आधार पर लिखते हैं कि शाकाहारी मनुष्य मांसाहारी मनुष्य से दस वर्ष अधिक जीवन जीता है तथा मांसाहारी से बिमार भी कम होता है।

(६) डाक्टर ऐंडम ऐडनबर्ग जो कि विश्व में एक बहुत बड़े इतिहासज्ञ माने जाते है, लिखते है कि मुझे ६० वर्ष की आयु में अधरंग हो गया जिसका मांसाहारी भोजन का त्याग करके शाकाहारी भोजन को अपनाने से उपचार हुआ। अब मैं ६३ वर्षो का हूँ और मुझे कोई रोग नहीं हैं

(प्राकृतिक एवम् मानवीय खुराक पृष्ठ २६)

(७) डाक्टर हैरस लिखते हैं कि — मुझे मांसाहार छोड़े सात वर्ष हो चुके हैं। यहाँ तक कि मैं अंडे, पनीर तथा दूध का सेवन भी नहीं करता, मेरा स्वास्थ्य उत्तम है। अब मैं अपनी ७६ वर्ष तथा ६ मास की आयु में बाइसाईकल पर प्रतिदिन ४० से ५० मील तक का सफर कर सकता हूँ।"

(प्राकृतिक एवम् मानवीय ख़ुराक पृष्ठ २८)

(८) प्रोफैसर विलिअम लौरॅस एफ. आर.सी. कहते हैं:—

मनुष्य के दाँतों तथा जानवरों के दाँतों में बहुत अन्तर होता है। जानवरों के दाँतों की बनावट इस प्रकार की होती है कि वह मांस चबा सके तथा हज़म भी कर सके। मनुष्य के दाँत किसी प्रकार भी इन मांसखोरे पशुओं से नहीं मिलते हैं। (प्राकृतिक एवम् मानवीय ख़ुराक पृष्ठ ४)

(६) इसी पुस्तक प्राकृतिक एवम् मानवीय ख़ुराक के पृष्ठ ४० पर लिखा है:—डाक्टर जोशी ओल्डफील्ड सीनियर डाक्टर लेडी मारगट अस्पताल ब्राहमले (इंगलैंड) समाचार पत्र हैरलड आफ द गोल्डन ऐज, जनवरी १६०५ में लिखा है:—

मनुष्य हृदय में फल फूल एवम् प्राकृतिक भोजन की इच्छा हैं। इसलिए वह फलों की ओर ऐसे आकर्षित हो कर खिंचता चला जाता है जैसे जानवर मांस की ओर। आदि मानव की प्रथम आदि अवस्था में उसने वह खाया

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

जो उसे सहज भाव से मिल गया। इसके पश्चात् दूसरी अवस्था में उसने वह खाया जो उसे भाया। इस तृतीय अवस्था में उसे वे कुछ खाना चाहिए जो उसको लाभदायक साबित होता लगे। यदि मनुष्य मांसाहार को त्याग कर प्राकृतिक खाद्य पदार्थो को उत्तम एवम् लाभदायक समझ कर खाये तो उसे लगने वाली अनेक विमारियों से उसे मुक्ति प्राप्त हो जायेगी। मनुष्य पहले की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली तथा प्रसन्न चित दिखाई देगा।"

१० प्रौफेसर चिटनडोन पी.एच.डी., एस.सी.डी. एल.एल.डी. आफ यूनाईटड स्टेटस डिपार्टमैंट आफ एग्रीकलचर अपने अनुभव के आधार पर लिखते हैं:—

अमरीका के सिपाही का भोजन पहले ७५ औंस होता था। जिसमें २२ औंस मांस होता था। यह राशन ७५ औंस से कम करके ५१ औंस कर दिया गया। मांस २२ औंस के स्थान पर एक औंस रहने दिया गया। ६ मास के बाद यह अनुभव किया गया कि वह पहले से ५० प्रतिशत अधिक शक्तिशाली हो गये हैं। आत्मिक बल भी अति उत्तम था। परिणाम स्वरूप उनको यह स्वतन्त्रता दे दी गई कि वह अपनी स्वेच्छा से जो जी में आए, खाये। फलस्वरूप किसी ने भी मॉंसाहारी पदार्थो को खाना उचित नहीं समझा।

(प्राकृतिक एवम् मानवीय खुराक पृष्ठ ३१)

फ्रांस की राजधानी पैरिस में सन् १९१८ ई. को एक इंटर ऐलिड कान्फ्रैंस यह विचार करने के लिए की गई कि लोगों की खुराक का क्या हल है। इस कान्फ्रैंस की ओर से इस विषय की खोज के लिए निम्नलिखित अनुभवी एवम् विश्व विख्यात वैज्ञानिकों का एक अर्न्तराष्ट्रीय कमीशन नियुक्त किया गया जिसमें निम्नलिखित लोगों के नाम थे:—

(१) प्रो. गले (फ्रांम)
(२) प्रो लौंगलाइम (फ्रांस)
(३) बोलाजी (इटली)
(४) पगलिआनी (इटली)
(५) ह्यिूलर (बैल्ज़ियम)
(६) चिटरडन (यू. अमरीका)
(७) लसक (यू. म अमरीका)
(८) ई. एच. स्टार्गलिंग (अमरीका)
(९) टी. वी. वुड (अमरीका)

पॉंचों प्रसिद्ध देशों के उपरालिखित नौ विद्वानों के कमीशन ने २९ अप्रैल

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

१९४१ ई० को रोम इकट्ठे हुए लोगों के सम्मुख यह मत पेश किया जिसे सर्वसम्मति द्वारा पारित किया गया:—

बहुत खोज तथा विचार विमर्श के पश्चात् कमीशन इस परिणाम पर पहुँचा है कि वैज्ञानिक मतानुसार मांसाहार मनुष्य के लिए किसी प्रकार भी न्यायसंगत नहीं है।" (प्राकृतिक एवम् मानवीय खुराक पृष्ठ ६)

(१२) डाक्टर किंग्स फोड, डेवी, लायंस, काव एवम् सी.ए.ओवन आदि वैज्ञानिकों का मत है मनुष्य के भीतरी एवम् बाहरी अंग इस वात की गवाही देते हैं कि मनुष्य का स्वभाविक भोजन (अन्न, कंदमूल, फल फूल आदि) वनस्पति है तथा मांसाहार मनुष्य की प्रकृति के सर्वथा अनुचित तथा विरुद्ध है।

(१३) इस विषय पर भगदंर (कैंसर) रोग विशेषज्ञ, प्रसिद्ध डाक्टर बैल. एम.डी. एफ. आर.एफ. पी. एस. ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'भंगदर का फोड़ा तथा उसको कैसे नष्ट किया जाए' में लिखा है, "इस संसार की जनसंख्या में दो करोड़ पच्चास लाख, एवम् इंगलैंड के वेल्ज में ही केवल तीस हज़ार लोग प्रतिवर्ष इस दुष्ट जानलेवा विमारी से मरते हैं, इस रोग का कारण मांसाहार को वता कर मांस न खाने की सिफारिश की जाती हैं।

(१४) डाक्टर वैलॅ आधुनिक युग में भंगदर रोग के बड़े अनुभवी चिकित्सक माने जाते हैं। उन्होंने अपनी उपरालिखित पुस्तक में भंगदर रोग में स्वयं को शाकाहार से वचाए, अनेक लोगों के वारे में लिखा है। उन्होंने उनके खून के चित्र देकर यह सिद्ध किया है कि शाकाहार ही इस रोग की मुख्य चिकित्सा है।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

आर्थिक दृष्टिकोण

अब पाठकों के सम्मुख मांसाहार का आर्थिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जाता है। इस दृष्टिकोण से भी मांसाहार अत्यन्त हानिकारक ही सिद्ध होता है। माँसाहार की वृद्धि होने के कारण विभिन्न देशों विशेषतया हमारे पवित्र भारत वर्ष को खेती के धन्धे में बहुत हानि हुई हैं। यह तो संसार में सर्वविदित है कि घी, दूध, दही, मट्ठा एवम् और अनेक प्रकार के दुग्ध उत्पादन मिठाईयाँ आदि जो दुधारु पशुओं की ही विशेष कृपा से प्राप्त होती है उनके अभाव में वृद्धि हुई है। कृषि आदि के लिए उपयोगी पशुओं की कमी के कारण अनाज, घी आदि पदार्थ मंहगे हुए हैं इसी प्रकार इस पशु धन के अभाव से देश की आर्थिक दशा भी बिगडती जा रही है। इतिहास इसका साक्षी है।

आज से ६०० साल पहले अलाउद्दीन खिलज़ी के समय खाने वाली वस्तुओं के भाव एक रु अनुसार निम्नलिखित थेः—

क्रम संख्या	पदार्थ	भाव प्रति रूपया सेर
१	गेहू	११६ सेर
२	जौं	२२४ सेर
३	चावल	१७६ सेर
४	उड़द	१८० सेर
५	चने	१७६ सेर
६	मटर	२६६ सेर
७	बूरा चीनी	१५ सेर
८	लाल चीनी	४४ सेर
९	घी	३३ सेर

प्रति वर्ष कितनी गायें और पशु मारे जाते हैं

१.४.१९२३ से ३१.३.१९२४ तक मारे गये पशुओं का विवरण जो जून १९२५ के समाचार पत्र शुधि के संस्करण १, अंक ६ में प्रकाशित हुआ था, वह इस प्रकार हैः

गायें	४४४६२४
भैंसे	१११०१८

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

बैल	६८०१७
बछड़े	१६६२४
भेंडे तथा बकरियाँ	२८८६१२४
कुल जोड़	३५३०००७

६.६.१६१५ ई. के रोजाना भारत मित्र में लिखा हुआ है कि इस समय भारत भूमि पर प्रतिवर्ष एक करोड़ गायों की हत्या होती है।

ब्रिटिश भारत में २४५२६७००० मनुष्य रहते हैं तथा १६१४-१५ के कृषि से सम्बन्धित आँकड़ों के खण्ड १-२ के अनुसार ५ करोड़ ६ लाख ४६ हजार गाय भैंसे थी जो लगभग ५ करोड़ ६४ लाख ३७ हज़ार पौआइंट दूध दे सकती थी।

इससे स्पष्ट होता है कि प्रत्येक मनुष्य को दश्मलव का चौथाई भाग (कुछ तोले दूध मिलता है। भारतभर में २५ करोड़ ६६ लाख ४६ हज़ार ऐकड़ धरती पर खेती होती हैं। उसकी अपनी उपजीविका पर निर्वाह करने वाले भारतीय जनसंख्या का ३/४ भाग २२ करोड़ ५० लाख ७८ हज़ार ४४५ किसान हैं। कृषि में काम आने वाले पशु १६१४-१५ में केवल ५ करोड़ २६ लाख ४४ हज़ार ७०० थे। इस हिसाब से एक जौड़ी बैलों के लिए २६ एकड़ धरती जीतने के लिए है। यदि शीध्र ही पशुओं का संहार न रोका गया तो थोड़े से समय में ही किसानों की बेरोज़गारी का प्रश्न मुःह बाये खड़ा होगा। इसलिए आर्थिक दृष्टिकोण अनुसार भी मांस खाने के लिए पशुओं का वध करना भारतीय जनता के लिए अत्यन्त हानिकारक है।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

दया दृष्टिकोण

इस प्रकरण में कुछ दयालु तथा विचारवान कोटि के विद्वानों का पक्ष प्रस्तुत किया जाता है:—

१. डाक्टर जोशीआ ओल्डफील्ड एम.ए. अपनी पुस्तक (मांस व्यापार की निर्दयता) दी करूऐलटीज़ आफ दी फलैश ट्रैफिक के पृष्ठ २८-२६ पर एक हृदय-विदारक लेख लिखते हैं। आपका कथन है:—

"याद रखिए। प्रत्येक जानवर एक जीवित वजूद को लिए हुए हैं। वह जीने की खुशिया तथा मरने के कष्ट के अनुभव को वड़ी अच्छी तरह अनुभव करता है। इसलिए इस शताब्दी के पहले वर्ष ही अनुमान लगाया गया कि केवल इंगलैंड में ही दस लाख से अधिक पशुओं को मौत के घाट उतार दिया गया। सत्तर लाख भेड़ों की गर्दनों पर छुरी चलाई गई। २० लाख मूअरों ने अपनी दुःख भरी आहों को आकाश में भेजा। तात्पर्य यह हुआ कि कोई दिन भी ऐसा नहीं गुजरता जब स्वाद हेतु अट्ठाईस सौ पशु, बीस हज़ार भेड़े तथा पाँच हज़ार सूअर न मारे जाते हो। सूअर के बच्चों को एक घूमते हुए पहिए पर जंजीर के साथ जकड़ कर उवलते पानी के टवों में फैंका जाता है वह वहाँ बुरी तरह चीखते, पुकारते आतर्नाद करते अपने दुःख को प्रकट करते हैं। उवलते हुए पानी के न सह मकने वाले दुःखों को भोगते हुए अपनी जान दे देते हैं।"

(२) मिस्टर सिड़नी एच.वरैड. अपनी पुस्तक (Naturas & Human Diet) प्राकृतिक मानवीय खुराक के पृष्ठ २ पर लंडन की एक कम्पनी की ओर से एक दिन में पशुओं का काम तमाम करने के वर्णन को लिखते हैं:—

ध्यान कीजिए! दस हज़ार पशुओं का समूह, दो दो की पक्तियों में १५ मील लम्बी पंक्ति में चला जा रहा है। उनके पीछे वीस हज़ार भेडें मैं मैं की अवाज करती हुई वारह मील लम्वी सड़क को घेर कर जा रहीं है। उनके पीछे सत्ताईस हज़ार सूअरों को हांका जा रहा है जिन्होंने सोलह मील मड़क को रोका हुआ है।

सवके पीछे तीस हज़ार मुर्गो ने छः मील लम्वी सड़क पर अपना एकछत्र एकाधिकार स्थापित किया हुआ है। इन सव पशुओं ने, जिन्होंने पचास मील तक स्थान घेरा हुआ है। यदि चल कर अपने गंतव्य स्थान पर पहुंचना हो

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

तो कम से कम दो दिन लगेगें। यह सारे जानवर (जिनकी कुल संख्या सतासी हज़ार है—लेखक) एक दिन में सिवफट एंड कम्पनी (Swift & C0.) लंदन के एक ज़िव्हाखाने में मारे जाते हैं।

यहाँ पर ही अन्त नहीं वल्कि प्रतिदिन अनगिनत पशुओं के समूह आरमर, लिप्टन तथा और ज़िव्हाखानों में मारे जाते हैं जिस पृथ्वी कों ईसाईयों की धरती कहा गया है। केवल लंदन में ही चार सौ तथा बरिस्टल जैसे शहरों में १२० ज़िव्हाखाने मौजूद है। ज़िव्हाखानों का यह अनावश्यक प्रवन्ध कितना घटिया तथा वुरा है जिस द्वारा कम से कम तीन सौ करोड़ पशु प्रति वर्ष वड़ी निर्दयता से मारे जाते हैं। अभी इनमें छोटे जानवर तथा पक्षियों की गणना नहीं की गई है।

इसाईयों को यह स्मरण रखना चाहिये कि उनके गुरु यसु मसीह का प्रवचन है—I dosire mercy not sacrifice भाव मैं रहम चाहता हूँ न कि कुर्बानी।

(३) यही मिस्टर सिडनी एच-वरैडी अपनी पुस्तक इज़ फलैश ईटिंग मौरोली डीढैनसिवल के पृष्ठ १६-१७ पर उन कष्टों का, दुःखों का वर्णन करते हुए लिखते हैं जो पशुओं को कत्ल करने से पहले एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में उठाने पड़ते हैं:—

"रेलगाड़ी, सड़को द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में निम्न लिखित कष्ट उठाने पड़ते हैं:—

भूख, प्यास, कम जगह में अधिकाधिक पशुओं को धकेल देना, गर्मी व सर्दी के दुःख, चोटें, अंगहीन होना, भय, थकावट तथा उनकों ले जाने वालों की ओर से जानबूझ कर ज़ालिमाना सा व्यवहार। अमरीका की रेलवे कम्पनियों के आंकड़े वताते है कि हज़ारों की तादाद में जानवर रेल में ही अपनी अन्तिम साँसें गिन लेते हैं एवम् लाखों ही लंगड़े अंगहीन हो जाते हैं। सूअर जिनकी पीठ के अंग टूट जाते हैं उनको खींच खींच कर ज़िव्हाखाने ले जाते हैं। ग्रीष्म ऋतु में मारे जाने वाले जानवरों को तीन तीन दिन तक भूखे-प्यासे रखा जाता है।....

मैं आपको यह वताना चाहता हूँ कि प्रति वर्ष तैंतीस लाख जीवित जानवरों को कष्ट पहुँचाया जाता है। केवल एक ईसाई देश इंगलैंड के मांसाहारियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रतिदिन दस हजार जानवर उसकी वंदरगाहों तक जहाजों द्वारा पहुँचाए जाते है।"

अंग्रेज नस्ल के दयालु पुरुषों के उपरोक्त क़थनों से स्पष्ट होता है कि केवल जानवरों को मारते समय ही उन पर अत्याचार नहीं किया जाता बल्कि

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

उससे पहले भी उनके साथ सख्त एवम् निर्दयतापूर्ण व्यवहार किया जाता है। इस लिए मांसाहारियों को चाहिए कि इस दयाभाव के दृष्टिकोण को अपना कर ही मांसाहार का त्याग कर दें।

अंडे खाना पाप है

कई सज्जन-पुरूषों का मत है कि अंडे खाने में कोई बुराई नहीं क्योंकि यह तो एक प्रकार की साग-सब्जी है। परन्तु ऐसा लगता है कि वह अपनी कम बुद्धि तथा कम अक्ल के कारण ऐसा कहते हैं। अंडा तो जानवर का गर्भ ही है। इसमें दो जानवरों के मेल से पैदा होने वाले बच्चे के सूक्ष्म अणु-जवाणु पाये जाते हैं। यह जीव रक्त तथा वीर्य के परिणाम स्वरूप हैं। इस लिए अंडे का नाश करना उतना ही बड़ा दोष या पाप है जितना किसी मानवीय नस्ल की स्त्री का गर्भपात कराना। क्या गर्भपात करना गैर कानूनी तथा चरित्रिक पतन नहीं हैं। यदि है तो अंडे को फोड़ कर उसका रक्त वीर्य उबाल कर खाना, उसके पूड़े बना कर खाना, मानवीय समाज के लिए नुकसानदायक, गुनाह जैसी तथा लज्जाजनक वात नहीं हैं ? इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह जानवरों के गर्भपात तथा उसको खाने की बुराई को त्याग दें क्योंकि उसके अन्तर्मन में मानवता का सर्वश्रेष्ठ मादा है।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

विश्व विख्यात व्यक्तित्व

(अ) अब पाठकों के समक्ष वर्तमान समय के विश्व ख्याति प्राप्त उन पुरूषों के वारे में संक्षेप से बताया जायेगा जिन्होंने अपनी दिमागी योग्यता, देश भक्ति, बलिदान की भावना, नीति, अद्भुत प्रराक्रम एवम् हिम्मत के कारण विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया हुआ है परन्तु वह मांसाहारी न होकर शाकाहारी थे।

(१) महात्मा गांधी जो भारतवर्ष के अद्वितीय नेता थे, जिन्होंने अपनी सारी जिन्दगी देश को स्वतन्त्र कराने के लेखे लगा दी, वृद्ध अवस्था में सत्याग्रह अन्दोलन के संचालन की योग्यता रखते थे। अपनी आलौकिक योग्यता के कारण उस समय की भारत सरकार को चक्कर में डाल दिया था। आप एक आदर्श अहिंसावादी थे। आप कुछ फलों का रस एवम् बकरी का दूध ही पीते थे।

(२) भारत भूषण, महान् विद्वान पंडित मदन मोहन मालवीय जी ने, जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर चुके हैं, अपने समय के वहुत बड़े कानूनवेता, रौशन ज़मीर वकील, जिनके बलिदान से जो उन्होंने देश तथा जाति के लिए किए थे से भारत का बंच्चा बच्चा जानकार है, बनारस विश्व-विद्यालय के संचालक बन विद्यादान का महान कार्य किया, इतना ही नहीं वृद्धा अवस्था में भी जिनका हृदय जवानों से भी युवा पूर्णातया वैष्णव थे। मांसाहार को मानवीय आहार नहीं स्वीकारते थे।

(३) नेहरु वंश की लाज़वाब कुर्बानियों से चार चाद लगाने वाले भारतीय नायक श्री जवाहर लाल नेहरु जिनकी अध्यक्षता में नैशनल कांग्रेस ने १९३० ई० को लाहौर में रावी नदी के तट पर पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्ति का प्रस्ताव पारित किया था। जिनकी जिन्दगी का काफी समय भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए जेल में ही व्यतीत हुआ। जेल की सलाखों के पीछे स्वदेश के स्वतन्त्रता के स्वप्न साकार करने की सोचते थे। अंग्रेज सरकार भी जिनकी योग्यता तथा नीति निपुणता का लोहा मानती थी, जिनकी जाति पर भारत माता भी इठलाती थी, गर्व करती है, तथा कई प्रकार की आशाएँ रखती थीं, वह भी शाकाहारी ही थे, मांसाहारी नहीं थे।

(४) मद्रास प्रान्त (चेनई) देश भक्तों के प्रमुख श्रीमान राज गोपाल

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

आचार्य जो अभी कल ही मद्रास सरकार में मुख्य मन्त्री थे, भारत माता की स्वतन्त्रता हेतु कारावास में बंद रहें, सरकार भी जिनकी नीति निपुणता का लोहा मानती थी, दिमागी योग्यता को भी मानती थी, भी शाकाहारी थे मांसाहारी नहीं थे।

(५) बिहार प्रान्त के चिरागे-रौशन वावू राजेन्द्र प्रसाद जो नैशनल कांग्रेस के अध्यक्ष रह चुके हैं, देश भक्ति, नीति निपुणता, दिमागी योग्यता एवम् वलिदानों के कारण वहुत ऊँचा स्थान रखते हैं, जिनके व्यक्तित्व का आदर प्रत्येक भारतवासी के हृदय पर छाया हुआ है, भी शाकाहारी ही थे मांसाहारी नहीं थे।

(६) उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष भी पुरषोतम दास जी टंडन जिनको 'उत्तर प्रदेश का दिमाग' को संज्ञा दी जाती है, भी शाकाहारी थे। मांसाहारी नहीं थे।

(७) श्री मान पंडित गोविन्द वल्लभ पन्त, जिन्होंने योग्यता का परिचय त्रिपुरा कांग्रेस के जलसे में समस्त भारतीय प्रतिनिधियों के सम्मुख दिया था, शाकाहारी है, मांस नहीं खाते थे।

(८) मासाहारी कौम में पैदा होने वाले सरहदी गांधी अब्दुल गुफ़ार खां, मांसाहारी पठानों के देश में रहने वाले, आदरणीय पठान परिवार के आदरणीय सरदार महात्मा गान्धी जी के परम प्रिय श्रद्धालु थे, जिन्होंने अपनी कौम में स्ववलिदानों, भाषणों तथा कार्याकलापो से आश्चर्यजनक सुधार एवम् देशभक्ति का ज़ज़वा पैदा कर दिया, ने महात्मा गांधी जी की देखरेख में मांसाहार छोड़ दिया था।

(९) नोवल पुरस्कार विजेता विश्व विख्यात, महाकवि, रविन्द्र नाथ ठाकुर (टैगोर) जिनको महात्मा गांधी जी गुरुदेव कह कर पुकारते थे, मांस नहीं खाते थे।

(१०) भारत के अनेक प्रान्तों के अनेक देशभक्त, जिनका नाम यहाँ देने से सूचि पत्र लम्बा होने का डर है, मांसाहारी नहीं थे।

(११) जर्मनी तानाशाह हिटलर, जिसकी ओर सारा संसार उस समय मुःह वाये देख रहा था। विजय पर विजय जिसके चरण चूम रही थी, विश्व प्रसिद्ध जांबज मांस नहीं खाते थे।

(१२) इटली का भाग्य निर्माता साईनर ममोलिनी, जो उस समय हिटलर का साथी था, भी मांस नहीं खाता था।

(१३) मार्शल गोइरिंग जिसको हिटलर ने अपना उत्तराधिकारी नियत

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

किया हुआ था ने ६ सितम्बर १९३९ को जर्मन कौम के नाम एक भाषण प्रसारित किया था जो लाहौर के 'प्रताप'११ सितम्बर १९३९ के अंक में छपा था, उसमें मांसाहार को बुरी आदत कहते हुए छोड़ने के लिए प्रेरणा दी गई थी। जनरल गोइरिंग का कथन :—"आज जर्मनी के लिए खुराक बहुत अहमियत रखती है, और यह हमारे पास कॉफी तादाद में है। प्रश्न रहा गोश्त का। गोश्त खाना निहायत ही बुरी आदत है और उसका खाना जिस कद्र कम किया जाए उतना ही अच्छा है।"

(१४) सर्व भारतीय हिन्दू महा सभा के प्रधान वीर सावरकर, हिन्दू जाति के प्रमुख नेता थे, जिनके हृदय में देश सेवा की लहरे हिलोरे ले रही थी, जो बलिदान तथा वीरता का आदर्श जीवन जी रहे थे, मांस नहीं खाते थे।

(१५) हिन्दू महासभा के रह चुके प्रधान डाक्टर मुंजे, भारतीय, हिन्दू जाति के सर्वश्रेष्ठ नेता भी मांस नहीं खाते थे।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

अन्तिम विनय

मैं इस विनय के साथ इस पुस्तक को समाप्त कर रहा हूँ कि यह पुस्तक केवल मांस के विषय में संशयों को निवृत करने के विचार से लिखी गई है। मैं आशा करता हूँ कि इसको साम्प्रदायिक पक्षपात से दूर रहकर वाच्य तथा विचारा जाये। इस पुस्तक को पढ़ कर, प्रेरित होकर जो सज्जन मांस खाना छोड़ दे वह मुझे अपने इस त्याग सम्बन्धित पत्र द्वारा सूचित करें ताकि मैं अपने परिश्रम को सफल समझ कर अगामी समय में अपने प्रिय पथ को साहित्यक सेवा के लिए उत्साहित रहूँ।

—निधान सिंह आलिम

Sri Satguru Jagjit Singh Ji Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com